श्रीसूरदास

का

दृष्टिकूट

(सटीक)

टीकाकार—

श्रीसरदार कवि

मुद्रक और प्रकाशक—
श्रीकेसरीदास सेठ सुपरिंटेंडेंट
नवलकिशोर-प्रेस,
लखनऊ

पाँचवीं बार] [सन् १९२९ ई०

महात्मा सूरदासजी

भारतवर्ष ने अनेक वीर पुरुषों को उत्पन्न किया है। कोई धर्म-वीर है, तो कोई धन-वीर; कोई कर्म-वीर है, तो कोई सूर-वीर; कोई विद्या-वीर है, तो कोई सत्य-वीर; और कोई बल-वीर है, तो कोई दान-वीर। इन वीरों ने अपने कार्य और कृतियों से केवल अपना नाम ही सदा के लिये अमर नहीं कर दिया है, वरन् भावी सन्तानों के लिये एक उत्कृष्ट और सच्चा आदर्श उपस्थित कर दिया है। अन्य देशों में सभी प्रकार के वीर एक्के-दुक्के ही नज़र आते हैं; पर भारतवर्ष इसका अपवाद है।

यहाँ हम अपने पाठकों को एक ऐसे साक्षर वीर का परिचय देना चाहते हैं, जिसने एक ग़रीब ब्राह्मण के घर जन्म लेकर, अपने माता-पिता के मोह को त्यागकर, अपनी अविरल और सच्ची भक्ति से अपने आराध्य देव आनंदकंद श्रीकृष्णचंद्र की लीला का ऐसा गान किया है कि आज वह साहित्य-संसार में सूर्य की तरह माने जाते हैं।

यह और कोई नहीं, भक्तराज महात्मा सूरदासजी ही हैं। 'मिश्रबंधुओं' के विचार से यह जाति के सारस्वत ब्राह्मण थे और इनके पिता का नाम रामदास था। इनका जन्म दिल्ली के समीप सीरी-ग्राम के निवासी निर्धन माता-पिता के घर हुआ था। कितनों का यह कहना है कि यह जन्म से ही अंधे थे; पर इस पर पूरा विश्वास नहीं होता। कारण, इन्होंने सूरसागर में स्थान स्थान पर ज्योति, रंग, अनेक प्राकृतिक छटा और हाव-भावों का ऐसा तद्रूप वर्णन किया है जो केवल श्रवण की सहायता से नहीं हो सकता। बिना आँखों देखे, ऐसा सच्चा वर्णन असंभव-सा प्रतीत होता है।

इनका यज्ञोपवीत आठ ही वर्ष की अवस्था में हो गया था। फिर यह अपने माता पिता के साथ मथुरा-यात्रा को गए। वहाँ से घर लौटती बार सूरदास ने उनसे उन्हें वहीं छोड़ जाने की विनती की। माता-पिता के पूछने पर कि तुम्हें किसके सहारे छोड़ जायँ, सूरदास ने कहा—"क्या श्रीकृष्णचंद्र का सहारा थोड़ा है ?" फिर एक साधु ने इनके पालन-पोषण का भार लिया और यह उसके सुपुर्द हुए। अब यह ब्रज में रहने लगे। ब्रज से यह आगरे और मथुरा के बीच गऊघाट नामक

स्थान पर जाकर रहने लगे। यहीं उनसे श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभु से भेंट हुई और यह उनके शिष्य हो गए। उन्हीं के साथ यह गोकुल में श्रीनाथजी के मंदिर को गए और बहुत काल तक वहीं रहे। यहाँ गोस्वामी श्रीविट्ठलनाथजी से इनसे बहुधा भेंट हुआ करती थी, जो बड़े चाव से इनके पद सुना करते थे। यह श्रीकृष्णजी के परम भक्त थे और सदा उनमें मग्न रहा करते थे। वृद्धावस्था तक यह यहीं रहे, फिर यह पारासोली को चले गए। गोस्वामीजी ने जब इनके चले जाने का हाल सुना, तो वह भी पारासोली पहुँचे और अंत तक वह उनके साथ रहे।

अपने जीवन-काल में सूरदासजी ने केवल पाँच ही ग्रंथों की रचना की है, उनमें से भी दो अभी तक प्रकाशित नहीं हुए हैं। अन्य साक्षर बीरों की तरह इन्होंने दर्जनों ग्रंथ नहीं रचे हैं पर इनका एक ग्रंथ सूरसागर ही दूसरों के अनेक ग्रंथों के बराबर ही नहीं, पर उनसे कहीं बढ़कर है। किंवदंती है कि सूरदासजी प्रातःकाल स्नानादि नित्य-कर्म से निवृत्त होकर नित्य श्रीकृष्णचंद्र की लीला के कुछ-न-कुछ पद अवश्य बनाते और तब कुछ जल-पान करते थे। पद रचे विना वह कुछ न खाते थे। इनके पाँच ग्रंथ ये हैं—सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी (दृष्टिकूट), नल-दमयंती और व्याहलो। अंतिम दो अभी देखने में नहीं आए हैं।

सूरसागर—श्रीमद्भागवत के आशय पर इसमें कथा कही गई है। कथाएँ बहुत न्यूनाधिक हैं। ग्रंथ बारह स्कंधों में विभक्त है। दशम स्कंध के पूर्वार्द्ध को छोड़ बाकी के सब स्कंध बहुत छोटे हैं। सूर को सूर्य की उपाधि दिलानेवाला यही दशम स्कंध का पूर्वार्द्ध ही है। प्रथम नव स्कंधों में विविध वार्ताएँ और कथाएँ हैं। दशम में श्रीकृष्णचंद्र की लीलाओं का वर्णन है। ग्यारहवें में उद्धव का बदरिकाश्रम गमन एवं हंसावतार की कथा है। बारहवें स्कंध में बौद्धावतार, भविष्य कल्कि अवतार तथा परीक्षित् के शरीर-त्याग का वर्णन है। सूरसागर में लगभग ४५०० पद हैं। नंद के घर की श्रीकृष्ण लीला और उद्धव-संवाद को छोड़कर बाकी सब वर्णन बड़े सूक्ष्म रूप से किए गए हैं। इन्हीं दो वर्णनों ने विस्तार-पूर्वक वर्णन का आदर्श उपस्थित कर दिया है। 'ब्रजविलास' सूरसागर के सहारे ही बना है।

सूरसारावली—यह सूरसागर का सूची है। इसमें ११०७ पद हैं। इसके सब छंद एक ही प्रकार के हैं। अतः इनके पढ़ने में उतना आनंद

नहीं आता; पर सूरदासजी की प्रतिभा का पूरा परिचय इसमें भी मिलता है।

साहित्य-लहरी (दृष्टिकूट)—यह सूरसागर के कुछ पदों का और कुछ कूटों का संग्रह है। इसके कूटों का अर्थ लगा लेना, साधारण काम नहीं है। टीका बिना इनका अर्थ लगना बड़ा कठिन है। इनमें यमक और अनुप्रास खूब आए हैं। पुस्तक आपके हाथ ही में है। देखिए, इसकी रचना में इसके कर्त्ता को कितना परिश्रम उठाना पड़ा होगा।

भाषा

सूरदासजी व्रजभाषा के अरुणोदयकाल में हुए थे। इनकी भाषा शुद्ध व्रजभाषा है। वह श्रुति-मधुर और ललित है। बाद के कवियों में यह बात नहीं पाई जाती। इनके कूटों को देखने से इनके प्रगाढ़ पांडित्य का पता चलता है। कूट की भाषा सुंदर, सरल होते हुए भी उसका अर्थ लगाना उतना सरल नहीं है। इनकी कविता में मिलित वर्ण बहुत कम आए हैं। माधुर्य और प्रसाद इनकी रचना के प्रधान गुण हैं। इनके पद लालित्य और गंभीरता से भरे हुए हैं। उनमें औरों की तरह संस्कृत शब्दों की भरमार नहीं है। इनकी रचना में उपमा और रूपक के श्रेष्ठ नमूने खूब मिलेंगे। इनकी उपमा, पद-लालित्य और अर्थ-गांभीर्य उत्कृष्ट कोटि के हैं। इस पर किसी कवि ने कहा भी है—

"उत्तम पद कवि गंग के, उपमा के बलबीर (बीरबल);
केसव अरथ-गँभीरता, सूर तीनि गुन धीर।"

वर्णन-शैली

इनकी वर्णन-शैली बड़ी विचित्र है। या तो यह किसी विषय को बहुत सूक्ष्मरूप से वर्णन करते हैं या पूर्ण विस्तार के साथ ही। वर्णन इनका सांगोपांग होता है। जिस विषय को इन्होंने विस्तार-पूर्वक कहा है, उस विषय पर और कवियों के लिखने को बहुत कम भाव रह जाते हैं। इनका श्रीकृष्ण की बाल-लीला का वर्णन इतना सच्चा, तद्रूप और उत्तम है कि संसार में शायद ही अन्यत्र कहीं ऐसा वर्णन हुआ हो। मान और मान-मोचन के वर्णन को पढ़ने से पता लगता है कि इनका शृंगार-रस का ज्ञान कितना गूढ़ और सच्चा था। इनकी

वर्णन-शैली के संबंध में रींवाँ-नरेश महाराज रघुराजसिंहदेवजी ने लिखा है —

"मतिराम, भूषन, विहारी, नीलकंठ, गंग ,
बेनी, संभु, तोष, चिंतामनि, कालिदास की ;
ठाकुर, नेवाज, सेनापति, सुखदेव, देव ,
यजन, घनानंद ऽरु घनश्यामदास की ।
सुंदर, मुरारि, बोधा, श्रीपति हू दयानिधि ,
जुगल, कविंद त्यों गोविंद, केसौदास की ;
'रघुराज' और कविगन की अनूठी उक्ति ,
मोहि लगी झूठी जानि जूठी सूरदास की ।

'मिश्रबंधुओं' ने भी इनकी वर्णन-शैली के संबंध में ठीक ही कहा है—

"लिया विषय जो हाथ, दूर तक उसे निबाहा ,
एक न छोड़ा भाव, शब्द-सागर अवगाहा ।
कर अमित विषय-वर्णन विशद, सभी परम सुंदर कहे ;
अब कवियों के हित ये विषय, इस कवि के जूठे रहे ।"

इनकी वर्णन-शैली बड़ी अनूठी और सचोट थी । किसी को छटपटाते हुए देखकर तानसेन को कहना ही पड़ा है कि—

"किधौं सूर को सर लग्यो, किधौं सूर की पीर ;
किधौं सूर को पद लग्यो, तन-मन धुनत शरीर ।"

भाव

इन्होंने केशवदास, दास इत्यादि की तरह अपनी कविता में अन्य कवियों के भाव नहीं भर दिए हैं । न इन्होंने किसी ऐसे विषय को विस्तार से कहा ही है, जिसमें इन्हें पूर्ण योग्यता और सहृदयता न होती । इनकी कविता में जहाँ-कहीं विस्तृत वर्णन हैं, वहीं वे सूरदास के सच्चे, मौलिक और खास भावों से भरे हैं । आवश्यकतानुसार इन्होंने पुराने आख्यानों और कथाओं का भी हवाला दिया है । इनके काव्य में भावों की पुनरावृत्तियाँ नहीं होने पाई हैं ।

इनकी भक्ति सखा और सखी भाव की थी । श्रीकृष्णचंद्र को यह अपना मित्र समझते थे । इसी कारण, उन्होंने राधा को भी भला बुरा

कहा है। श्रीकृष्ण को भी डांट-फटकार बताई है। कहीं-कहीं कृष्ण के कामों की निंदा भी की है।

इनकी रचना के भावों के संबंध में किसी ने ठीक ही कहा है—

"तत्त्व-तत्त्व सूरा कही, तुलसी कही अनूठी ;
बची खुची कबिरा कही, और कही सब झूठी।"

धार्मिक विचार

यह जाति-भेद और कर्म-भेद को तुच्छ मानते थे। एकमात्र भक्ति को ही यह मानव-हृदय का सच्चा श्रृंगार समझते थे। भक्ति ही इनका एकमात्र धर्म था। भक्त किसी भी जाति-पाँति का हो, वह इनके लिये पूज्य है। राम, जगदीश्वर और कृष्ण को यह एक ही समझते थे, और शेष देवतों में यह देव-भाव नहीं रखते थे। पर इन्होंने अन्य कवियों की तरह और देवतों को गालियाँ भी नहीं दी हैं। यह एक ईश्वर के उपासक थे। यह सगुणोपासक थे। सत्संग पर इनकी बड़ी श्रद्धा थी। यह अपने गुरु में और श्रीकृष्ण में कोई भेद नहीं समझते थे।

सूरदासजी के गुरु महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजी स्वयं कवि थे और कवि-गुण-ग्राहक भी थे। इनके सेवकों में भी कितने श्रेष्ठ कवि हो गए हैं। सूरदास, कुंभनदास, परमानंददास और कृष्णदास व्रजभाषा के श्रेष्ठ कवि और महाप्रभुजी के सेवक थे। छीनस्वामी, गोविंदस्वामी, चतुर्भुजदास और नंददास की भी व्रजभाषा के कवीश्वरों में गणना है। ये श्रीस्वामी विट्ठलनाथजी के शिष्य थे। ये आठ कवीश्वर अष्टछाप के नाम से प्रसिद्ध हैं। सूरदासजी अष्टछाप के सिरमौर थे। अपनी शैली, भाव, भाषा, विषय आदि के विचार से सूरदासजी व्रजभाषा के सर्वोत्तम कवि गिने जाते हैं। हिंदी-साहित्य में इनका स्थान कहाँ है, इस विषय पर किसी कवि ने कहा है—

"सूर सूर, तुलसी ससी, उडुगन केसवदास ;
अब के कवि खद्योत सम, जहँ-तहँ करत प्रकास।"

इसी की पुष्टि में किसी कवि ने यही बात इस प्रकार कही है—

"जो कुछ रही सो आँधरा भाखा, कठवौ कहेस अनूठी ;
बची खुची सब जुलाहा कहिगा, और कहेन सब झूठी।"

हिंदी-साहित्य में सूरदासजी का जो आदर होना चाहिए, वह होता नहीं दीखता। अगर यह इँगलैंड या अमेरिका में हुए होते, तो इन पर और

इनकी कृतियों पर सैकड़ों ग्रंथ प्रकाशित हो गए होते ; पर भारतवर्ष में अभी यह बात कहाँ! हिंदी-नवरत्न में ही इनकी समालोचनात्मक जीवनी निकली है और उसी के आधार पर यह परिचय दिया गया है। हमारे पाठकों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि व्रजभाषा के आचार्य बाबू जगन्नाथदास 'रत्नाकर', बी०ए०, ने सूरसागर के ग्रंथों का संपादन आरंभ कर दिया है और वह सुसंपादित सूरसागर हमारे नवलकिशोर-प्रेस ही से प्रकाशित होगा। जिसकी सूचना पाठकों को 'माधुरी' द्वारा यथासमय मिलेगी।

छन्नूलाल द्विवेदी

सरदार कवि

काव्य और कला में भारतवर्ष संसार में सबका गुरु है। यहाँ की सभ्यता सबसे प्राचीन है। यहाँ एक-से-एक बढ़कर ऐसे उद्भट काव्य-कला-कोविद प्रचंड विद्वान् हो गए हैं कि जिनकी रचना पर कोई क़लम चलाने का साहस तक नहीं कर सकता। उनकी रचनाएँ, चाहे किसी संबंध में हों,. विशाल विचार, प्रशस्त प्रतिभा, विकसित बुद्धि तथा आत्मगत अनुभव का सुंदर, सर्वोपयोगी, सर्वकाल व्यापी और सुमधुर फल है। किसी समय कहीं और कैसी ही अवस्था में उसका स्वाद चखिए, आपको सदा एक-सा आनंद मिलेगा। ज्यों-ज्यों आप उनकी रचनाओं का अधिक स्वाद लीजिएगा, उनका अधिकाधिक मनन और परिशीलन कीजिएगा, उतना ही अधिक हार्दिक आनंद आपको मिलेगा। आप उनकी रचना-शैली पर फ़िदा हो जायँगे। उनकी क़लम को चूमने के लिये अधीर हो जायँगे, उनकी प्रशंसा और उन पर ऊहापोह करने से कभी थकेंगे नहीं, उनका अधिकाधिक रस-पान करने के लिये लालायित रहेंगे। क्यों ? केवल शिवं, सत्यं, और सुंदरम् के उपासक होने से। ये तीनों गुण उनकी रचनाओं में कूट-कूट के भरे हुए हैं। यही कारण है कि आज वैज्ञानिक जमाने में भी भारत की प्राचीन सभ्यता केवल झलकती ही नहीं, पर ख़ूब जगमगा रही है और अब भी संसार के सभ्य कहे जानेवाले देशों के विद्वान् भारत की एक एक चीज़ और एक-एक ग्रंथ इतनी श्रद्धा और आदर की दृष्टि से देखते हैं कि दूसरे देखनेवाले हैरान हो जाते हैं।

अभी-अभी सौ वर्ष पहले तक यहाँ के विद्वानों में सत्य के खोज की जितनी अधिक अभिलाषा थी, उतनी अपने नाम कमाने की नहीं। एक नहीं, अनेक ऐसे प्रतिभाशाली विद्वान् यहाँ हो गए हैं, जिन्होंने अटूट और अपरिमित परिश्रम करके ऐसे-ऐसे ग्रंथ-रत्न लिखे हैं, जो अपने विषय में बिरले और निराले हैं। यही नहीं, वे अपने विषय के सच्चे आदर्श हैं। इन विद्वानों को जितनी लगन पुस्तक के सांगोपांगपूर्ण, सर्वदेशीय और सदुपयोगी होने की होती थी, उतनी अपने को प्रख्यात करने की नहीं। हमारे यहाँ श्रेष्ठकोटि के कितन ग्रंथकार ऐसे हो गए हैं, जिनका परिचय कौन कहे, उनके नाम तक का पता नहीं।

ऐसे सच्चे साहित्य-सेवियों के ग्रंथ ही उनकी कीर्ति और स्मृति को सदा तरो-ताज़ा बनाए रखते हैं ।

आजकल की तरह ग्रंथ के आदि में ग्रंथकार का चित्र तथा परिचय देने की प्रथा पहले न थी । यही कारण है कि आज हमें इस दृष्टिकूट के सुयोग्य टीकाकार कविवर सरदार कवि के बारे में कुछ अधिक परिचय नहीं मिल रहा है । शिवसिंह-सरोज, मिश्रबंधु-विनोद और भारतीय-चरितांबुधि में भी जो कुछ परिचय इनका मिलता है, वह भी अन्योन्याश्रित है ।

उक्त ग्रंथों से केवल यही पता चलता है कि यह जाति के भाट (बंदीजन) थे । यह काशी-नरेश महाराज ईश्वरीनारायणसिंह के दरबार में रहते थे । कविवर बाबू जगन्नाथदासजी बी० ए० 'रत्नाकर' से इनसे भेंट हुई थी । वह कहते थे कि यह शरीर के बड़े हृष्ट-पुष्ट और विशालकाय थे । आजकल के कवियों की तरह दुबले-पतले और लकलक न थे । यह स्वभाव के बड़े सज्जन और सहृदय व्यक्ति थे, रसिक तो थे ही । यह शिवसिंहजी के समय में जीवित थे ।

यह बड़े विद्वान् और कर्त्तव्यपरायण थे । इनके शिष्य नारायणराव आदि भी बड़े-बड़े कवि हो गए हैं । सूरदासजी के दृष्टिकूट ऐसे कठिन और दुर्बोध ग्रंथ की टीका वही कर सकता है, जो संस्कृत, हिंदी, ब्रज-भाषा, उर्दू, फ़ारसी आदि भाषाओं और भाषा-विज्ञानों का पूरा ज्ञाता हो । दृष्टिकूट के कूटों का अर्थ लगा लेना सामान्य और साधारण प्रतिभा और बुद्धिवाले कवि का काम नहीं है । इन्होंने सूरदासजी के कुल मिलाकर ३८० कूटों की सुंदर और सुबोध पदों में टीका की है ।

रसिकप्रिया और कविप्रिया भी सहल ग्रंथ नहीं हैं । इनकी टीका भी इस कविवर ने की है । इनके अतिरिक्त सतसई की टीका भी की है ।

यह कोरे टीकाकार ही नहीं थे । इन्होंने मौलिक ग्रंथों की रचना भी की है । साहित्य-सरसी, हनुमान्-भूषण, तुलसी-भूषण और मानस-भूषण के तो पते लगते हैं । संभव है, और भी ग्रंथ हों ।

केवल दृष्टिकूट की टीका ही इनके अगाध पांडित्य और गूढ़ चिंतन की द्योतक है ।

छन्नूलाल द्विवेदी

श्रीगणेशाय नमः ।

सूरदास का दृष्टिकूट सटीक ।

प्रथम भाग ।

श्रीराधे कियो कौन सुभाव ।

प्रानपति वेदन विभूषित सुन्य गुन चितचाव ॥
मानसरवासी सुधागृह ते न निकसन पाव ।
रजनिचरगुण जान दधिसुत धरन रिपुहित पाव ॥
रजनिचरहित भक्ष सों तन दिपत दीपक आव ।
सूरदास सुजान सुकिया अघट उपमा गाव ॥ १ ॥

बन्दौं अञ्जनी के पाय ।

जासु उर गिरि उदय हनुमत भयो दिन मन आय ॥
कोक सुरवर शोकनाशक कोकनद से सन्त ।
थोक सुख बिन ओक प्रफुलित जनु विचार वसन्त ॥
दोषदोषादलन दुखतम दुसह दारुण रूप ।
अघट अघ के ओघ उल्लू अन्ध अन्ध अनूप ॥
बालखिल्य मुनीश नारद करत जय जयकार ।
रामसीताचरण चित निज बसो कवि सरदार ॥ १ ॥

भाषी भालु भाल विशाल ।

को न गुणगाणि में न साधो आपु अञ्जनिलाल ॥

रुद्ररूप अनप मर्कट कियो कारण जौन ।
आजु साज समाजमध्ये ताक कीजे तौन ॥
बार शतहित गहत नाशो सर्व सुरपति रोस ।
वर अजादिक आप दै दै कियो तात सहोस ॥
रामहितामित सिन्धु लांघत लगत नाहीं बार ।
सुनत सुवरण नाग दूजो भयो प्रभु सरदार ॥ २ ॥
सो०—काशीनाथ उदार, उदत उदित नन्द है ।
ताकी शरण विचार, रहत सदा सरदार कवि ॥ ३ ॥

राधे इति । सखी वचन राधा प्रति । वेदन श्रवण में परत । सुन्य आकाश गुनशब्द । मानसरवासी हंस सुधागृह अधर में रहत । रजानिचरगुण कोप । दधिसुत धरन रिपु काम जानत । रजनिचर हित शिव भक्षण कनिक सुबरन सों तन दिपत में पूरण उपमा । स्वकीया नायिका ॥ १ ॥

हरिउर पलक धारो धीर ।
हित तिहारे करत मनसिज सकल शोभा तीर ॥
भूमिसुतअरिमित्ररिपुउर ते निकासत आप ।
शुद्ध आखर भरत ग्रीषम रिपुन मध्ये शाप ॥
भानुत्रयजननी सुहित की सहचरी गुण लेत ।
प्रथम हीं उपमान सारँग सो करावत हेत ॥
हानि दिनपति सी सुशोभा रंच राजत आज ।
सूर प्रभु अज्ञान मानो छपी उपमा साज ॥ २ ॥

हरिउर पलक इति । या पद विषे सखी की उक्ति ते मुग्धा नायिका लुप्ता अलङ्कार होत है ॥

दो०—नवयौवन को आगमन, मुग्धा कहिये ताहि ।
यकबिन दोबिन तीनबिन, लुप्ता भूषण आहि ॥

हे हरि ! पलकधीर धारो तिहारे हेतु मनसिज सब वाके अङ्ग में शोभा धरत है । भूमिसुत किवाछ अरि वानर मित्र राम शत्रु रावण पुर लङ्क लङ्क जो कटि है ताते सुअक्षर सुवरन निकासै है ग्रीषमरिपु मेघ पयोधर कुचन में भरत है । भानुते तीसरे मङ्गल ताकी जननी भूमि ताके हित घन ताकी सहचरी बिजुरी ताको गुण चञ्चलता लेकर प्रथम पहिल ताते सारँग मृग है जाके उपमान ऐसे नेत्रन में धरत है अर्थ चञ्चल करे है हानि दिन राति भये ते रात्री को पति शशि ताकी सी शोभा रंच थोरी राजत है मुख में इहां मुख उपमेय नहीं है शशी उपमान सी वाचक ताते लुप्ता है अज्ञान कहे अज्ञात छपी उपमा ते लुप्तोपमा ॥ २ ॥

आज अकेली कुञ्जभवन में बैठी बाल बिसूरत ।
तरुरिपुपतिसुत की शुचि सांची जानि सांवरी मूरत ॥
दरभूषन क्षण क्षण उढ़ाइकै नीतन हरि घर हेरत ।
तनु अनुगामी मनिमय भय के भीतर सुरुचि सकेरत ॥
ताहि ताहि सम करि करि प्यारी भूषण आनन माने ।
सूरदास बय जानि सुलोचनि सुन्दर सुरुचि बखाने ३

आज अकेली इति । उक्ति सखी की आज अकेली कुञ्जभवन में बाल बिसूरत है तरु रिपु यमुना पति कृष्ण सुत काम की श्याम मूरति जानि करके दर दुआर ताको भूषण पट क्षण क्षण उढ़ाइकै नीतन नयन हरि घर पयोधर कुच हेरत है । तनु अनुगामी जो छाया सो मणिमय भय कहे भीत में सुन्दर रुचि सों देखत है

सब जान ज्ञातयौवना नायिका सुन्दर अपनी रुचि ते बखानत है ताको लक्षण—

दो०—यौवन ही के ज्ञान ते, ज्ञातयौवना होइ।
उपमे को उपमान ते, कहत अनन्या सोइ॥ ३॥

सारँगसम करनीक नीक सम सारँग सरस बखाने।
सारँगवश भय भयवश सारँग सारँग विषमय माने॥
सारँग हेरत उर सारँग ते सारँगसुत ढिग आवै।
कुन्तीसुत सुभाव चित समुझन सारँग जाय मिलावै॥
यह अद्भुत कहिबे न योग युग देखत ही बनि आवै।
सूरदासबिच समय समुझिकरि विषयी विषय मिलावै ४

या पद में उपमानोपमेय अलङ्कार मध्या नायिका है। ताको लक्षण—

दो०—उपमा लागत परस्पर, उपमानो उपमेय।
मध्या लाज मनोज सम, वर्णत कविरस भेय॥

सारँग मृग समान ते नीक कहे अच्छे नेत्रन को माने है अस नीक जे चक्षु हैं तिनको सारँग जो मृग है तिनके सम बखानत कहत हैं काहेके सारँग जो राग अनुराग है ताके वश ते तो भय बिसारत है अरु भय के वश ते सारँग जो राग ताको बिसारत है सारँग मृग याते विस्मय माने हैं नेत्र जो हैं सो कैसे हैं कि सारँग कृष्ण तिनको देख करि उर जो सारँग कमल है ताते उत्साह होत सारँगसुत काजर लौं आवत है फिर कुन्तीसुत कर्ण स्वभाव सखी तिनको समझके सो फेर उर समुद्र में मिल जात है यह अद्भुत नेत्र मृगन को कहिबे योग्य नाहीं है देखत बनत है सूरदास बिच मध्या समय समझ के विषयी नाम उपमान विषय नाम उपमेय उपमानोपमेय अलङ्कार ठहरावत है॥ ४॥

राधे रातसुरत रँगराती ।
नन्दनँदनसँग कुञ्जभवनमन मदन मोद मदमाती ॥
कारण अन्त अन्त ते घटकर आदि घटत पय जोई ।
मध्य घटे परनाश नाश किय नीतन ते मन भोई ॥
गिरिजापतिपतिनीपतिजासुत गुन गुनगनन उतारे ।
तनसुत-कनसे धनि विचारके तुरत भूमि पै डारे ॥
सारँग ओर निहारत फिर फिर थिर चित चतुर न पावै ।
सूरश्याम कोविदा सुभूषण कर विपरीत बनावै ॥ ५ ॥

राधे इति । या पद में प्रौढ़ा नायिका प्रतीप अलङ्कार होत है । ताको लक्षण—

दो०—कामकला कोविद कहै, प्रौढ़ा सो कवि लोइ ।
उपमेयरु उपमान ते, कहि प्रतीप चित जोइ ॥

सखी की उक्ति सखी प्रति । कै राधे आज सुरति में रची है कुञ्जघर में कृष्ण के संग काम मद ते मतवारी भई है कारण को अन्त काज सो अन्त ते घट करो तब होइ अरु आदि घटे ते जल होइ है मध्य के घटे नाश नाम काल ऐसो काजल सो नीतन नाम नयनन ते घटायो है गिरिजापति पत्नी गङ्गा ताको पति सिन्धुजा सीपसुत मुक्ता तिनको गुन प्रात शीतल हो जात हैं सो जानि नायक चलो जैहै ताते गन नाम समूह उतारके तन सुत स्वेद ताके कनसे विचारके धनि ने भूमि पर डार दये सारँग-जो दीप है ताकी ओर फिरि फिरि देखति है कि मलीन तो नहीं भयो है याते चित्त थिर नाहीं होत ऐसी कोविंदा है ताको विपरीत नाम प्रतीप अलङ्कार कर कहत है ॥ ५ ॥

लखि व्रजचन्द्र चन्द्रमुख राधे।
इन्दीवरसुत कलकपोल में है शृँगाररस साधे॥ दधिसुत-
सुतपतिनीन निकासत दिनपतिसुतपतिनी प्रियबाधे।
दधिसुत वेद खैंच अपनो कर सुरुचि सुभाव सुनाधे॥
ग्रह मुनि द्युति हितके हित कर ते मुकर उतारत काधे।
सूरजप्रभुलखि धीररूप कर चरण कमलपर धाधे॥ ६॥

लखि व्रजचन्द्र इति! या पद बिषे धीरा नायिका रूपक अलङ्कार है ताको लक्षण—

दो०—व्यंग कोप जामें लखो, जानो धीरा सोइ।
उपमेयरु उपमान मिल, मानो रूपक सोइ॥

लखिके व्रजचन्द्र को मुखचन्द्र को कलंकित दधिसुतसुत ब्रह्मा ताकी पत्नी गिरा सो न निकासी दिनपति भानुसुत शनि पत्नी कर्कशा ताके प्रिय क्रूर वचन ते बाधे नाम बांध राखे दधिसुत चन्द्र ताते वेद चौथो बृहस्पति ताको नाम जीव सो जीव खचिके अपनो कीनो गिरिजापतिसुत वाहन मयूर भख सर्प ताको भख पवन सो सुगन्धवारो करन लगी ग्रहमुनि सातयें ग्रह मन्द द्युति दिख-राइबे के हेतु आरसी कर ते उतारी तब नन्दनन्दन धीरा नायिका जानके अरु रूपक अलङ्कार सो चरणकमल पर धाधे नाम चितवन लगे। उक्ति सखी की सखी से कै हे सखि! आज सांवरी श्यामा राधा सखी के साथ जलकेलि करत रही तहां सुन्दर श्याम आये प्रेम बेली पसारत अघहरबैनी एक के बिबरन लगे अरु एक को अन्तरिक्ष कहे अधर श्रीबंधु सुधा सों चाखके बहुत अनुरागे॥ ६॥

आज सखिन सँग सुरुचि सांवरी करत रही जलकेलि।
आइ गयो तहँ सरस सांवरो प्रेम पसारत बेलि॥

अघहर एक सुकर सारँग ते सहज सम्हारन लागे।
अन्तरिक्ष श्रीबन्धु एक को चाखत अति अनुरागे॥
भूषणहित परनाम छोट बड़ दोहुन को कर राखी।
सूरजप्रभु फिरि चले गेह को करत शत्रुशिवसाखी॥७॥

भूषण अलङ्कार पर नाम के हेतु छोट बड़ कहे ज्येष्ठा कनिष्ठा दोहुन को बनाइ गेह को चले शिव शत्रु काम को साक्षी दैकै इहां प्रेमबेलि पसारत याते पर नाम अलङ्कार अरु बेणी बिबरन में कनिष्ठा अधर चूमत में ज्येष्ठा ताको लक्षण—

दो०—वर्णनीय होके वरण, करत क्रिया परनाम।
अधिक न्यून अस्नेह ते, ज्येष्ठ कनिष्ठा बाम॥ ७॥

दिनपति चले धों कहँ जात।
धराधरनधररिपु तन लीने कहो उदधिसुत बात॥
लबउलटोदोजाउँ तिहारी ताको सारँगनैन।
तुम बिन नन्दनँदन ब्रजभूषण होत न नेको चैन॥
मुरली मधुर बजावहु मुख ते रुख जनि अनते फेरो।
सूरजप्रभु उल्लेख सबन को हो परपतिनी हेरो॥ ८॥

उक्ति ऊढ़ा की कि हे दिनपतिमित्र[1]! कहां जात हो धरा पृथ्वी धरन शेष धर शिव रिपु काम तैसो तन लेके उदधिसुत सुधा बोलवाली लब उलटे ते बल बलजाउँ हो हे सारँग कमलनयन चितवहु मुरली बजावहु रुख अनत जिन फेरो यहि में उल्लेख अलङ्कार परकीया नायिका है ताको लक्षण—

---

१ दिनपति सूर्य, सूर्य का नाम मित्र।

दो०—बहुविधि बरणे एक को, सो उल्लेख गनाइ ।
दुरे करत परपति सुरत, सो परपतिनी आइ ॥ ८ ॥

जूप मोहिं बहुपाद मिलाओ ।
सुन सजनी यह प्रण हमार लखि हियते हरष बढ़ाओ ॥
सुचहीपतिपितुप्रियापाइ पर धर शिर आप मनाओ ।
नीतनहीनपुत्ररिपुजननीसुत पितुजा ढिग माओ ॥
सुरसमूह पयधार परमहित आखत अमल चढ़ाओ ।
बार बार बिनवतहों तुम ते लखि निशिपति मुरझाओ ।
सूरजप्रभु पर होइ अनूढ़ा सुमिरन जन बिसराओ ॥६॥

उक्ति नायिका की सखी से कि हे सखि ! जूप नाम पीपर ताको नाम वासुदेव बहुपाद नाम वर अर्थ यह हमको कृष्ण वर देहु हे सखि! हमारो प्रण लखिकै हिये में हरष बढ़ावो सुचही ते बरही मयूरपति षड़ानन पितुप्रिया शिवा ताके पांइन पै शिर धरो नीतन नयन ते हीन धृतराष्ट्र सुत दुर्योधन रिपु भीम जननी कुन्ती सुत कर्णपिता सूर्य पुत्री यमुना ताके नज़दीक जावो सुरसमूह सुमन दूध अक्षत चढ़ावो बार बार तुम सों बिनवत हैं निशिपति चन्द्र देखि मुरझायके सूर्य प्रभु नन्दनन्दन तापै हो अनूढ़ा भई है सुमिरण अलङ्कार करके इहां अनविवाह ते नायिका अनूढ़ा चन्द्र देखि उपमान उपमेय की सुधि आई ताते सुमिरण अलङ्कार ताको लक्षण—

दो०—उपमे सुध उपमान लखि, सुमिरण भूषण होइ ।
अनविवाह अनुराग ते, कही अनूढ़ा सोइ ॥६॥

उलटो रस साँरगहित सजनी कबहूँ तीर न जैहौं ।

बिन समुझे बिपरीत मालका अंगन आप लगैहौं ॥
पगरिपु लगत सघन घन ऊपर बूझत कहा बतैहौं ।
ग्रहवसु मिलत शम्भु की सेना चमकतचित न चितैहौं॥
मोहिं आन वृषभानुबबा की मैया मन्त्र न लैहौं ।
सुर छेक ते गुप्त बात हू तोको सरस सुझैहौं ॥ १० ॥

नायिका की उक्ति सखी से कि हे सखि ! रस उलटे ते सर होत है सो सारँग कमल हित सर को न जैहौं बिना समुझे मालका विपरीत ते कालमा अपने अंग में लगाइहौं पगरिपु कंटक सो सघन घन पयोधरन में लगे जो बूझि है ताको का बताइहौं ग्रह वसु अष्टम राहु राहु में शम्भूसेना प्रेत मिलत हैं तिनको देखि चित्त चमकत है सो न चितै हैं मोको वृषभानु की शपथ है माता को यह मन्त्र नाहीं लैहैं सूर कहत यामें छेकापह्नुत ते गुप्ता नायिका की बात तोसों सब समुझाइहौं इहां रतगोपत ताते गुप्त आकार दुराइबे ते छेकापह्नुत अलङ्कार ताको लक्षण—

दो०—सुरत छिपावै जो त्रिया, सो गुप्ता उर आन ।
देत दुराइ अकार सो, छेकापह्नुत जान ॥ १० ॥

सुरभी रसरातो नँदनन्दन सुरभीरस जिन रातो ।
ग्रहमुनिपितापुत्रिका को रस अति अद्भुत गतमातो॥
सुतकृशानुसुत प्रबल भये मिलि चार ओर ते आये ।
ते जिन जान घने तमके गज साजत सरस सवाये ॥
आजु मोहिं मैया विचारिके गैया ओर पठाई ।

निरबिकार यह सूर पहूँनत बातन चतुर बताई ॥ ११ ॥

सुरभी इति। उक्ति नायिका की नायक प्रति। हे नन्द-नन्दन! सुरभी नाम गो गो नाम इन्द्री ताके रस से रातो सुरभी गोरस सों कारते हो ग्रह मुनि सातयें शनि पिता सूर्य पुत्रिका यमुना ताको रस जो जल है सो महारस में मतवारो भयो है अर्थ यमुना बढ़ी है कृशानुसुत धूम ताके सुत मेघ जो प्रबल भये हैं चारों ओर ते जो आये हैं सो नाहीं हैं जे सघन अंधकार के गज हैं आजु मोको माता ने विचार करके गाई की ओर पठाई है निर्विकार जहां पर पहूनत जहां सुधा अपह्नुत अलङ्कार है वचनविदग्धा नायिका है घन को धर्म मिटाइ तम के गज कहे ताते शुद्धापह्नुत बातन में मिलाप करन चाहत संकेत सूचित करत ताते वचन विदग्धा ताको लक्षण--

दो०--धरम दुरो आरोप ते, शुद्धापह्नुत जान।
वचन चतुरई ते कहत, वाकविदग्धा नाम ॥ ११ ॥

देखत ही वृषभानुदुलारी।
नन्दनँदन आवत व्रजबीथिन भीर संग लै भारी ॥
शिवआननलिखि चन्द्रबिन्दु दै करनिजकुचनमिलाये।
भूषण स्वल्प क्रिया ते सुन्दर सूर श्याम समुझाये १२

उक्ति सखी की। कै वृषभानुदुलारी राधा नन्दनन्दन देखिकै अरु सखन की भीर चतुराई करी शिवानन पंचमी को चंद लिखो तापै बिन्द दयो कि पांच घड़ी रात्रि बीते में मिलि है अरु कर कुचन सों मिलाये कि मैं तुमको हृदय में राखति हौं यामें स्वल्प कहे सूक्ष्म

---

१ पहूनत संकेत छिपी बात।

अलङ्कार क्रिया विदग्धा नायिका ने श्याम समुझाये यामें नायक को अभिप्राय जान आपनो अभिप्राय जनायो याते सूक्ष्म अलङ्कार अरु क्रिया ते चातुरी ताते क्रिया विदग्धा नायिका ताको लक्षण——

दो०–सूक्षम पर आशय लखें, करें क्रिया कुछ भाइ ।
क्रिया चातुरी ते कहैं, क्रिया विदग्धा आइ ॥ १२ ॥

कुञ्जभवन ते आज राधिका अलस अकेली आवत ।
अङ्ग अङ्ग प्रतिरङ्ग रङ्ग की शोभा सुख दरशावत ॥
दिनपतिसुतअरिपितापुत्रसुत निजकर वरनसम्हारे ।
मानहु कञ्जऋक्ष गहती जो कञ्चन भू पर धारे ॥
सीताशत्रुपिता की सेना पाट छिद्र इमि खाये ।
सिन्धुशत्रुभखपतिपितु मानो रण ते घाइल आये ॥
बिथुर गयो सारँगसुत सिगरो सो मन उपमा भासी ।
गिरिजापतिभूषण पै मानहु मुनिभखपङ्क प्रकासी ॥
सम्भावन भूषण कर लक्षित सुघर सखी मुसुकाई ।
सूरदास वृषभानुनन्दिनी मुर घर चली लजाई ॥ १३ ॥

उक्ति सखी की सखी प्रति । कि कुञ्जभवन ते राधा आज अकेली आवत है अरु अङ्ग अङ्ग में बहुत रङ्ग की शोभा दर्शावत है दिनपति सूर्य सुत कर्ण अरि अर्जुन पिता इन्द्र सुत बाली ताके सुत अङ्गद जे बाजूबन्द हैं सो करन ते सम्हारे है सो कैसे लगत कि मानो कमल जो है सो तीसरो ऋक्ष नक्षत्र कृत्तिका कञ्च भूमि पर बैठ रहै सीता को शत्रु जयन्त पिता इन्द्र सेना पयोध कुच पाट नख ताके छिद्र ऐसे खाये हैं सिन्धुदधि ताकी शत्रु बिला ताको भख मूष ताके पति गणेश पिता शम्भु मानों रण ते घाय

आये हैं बिथुर गयो है सारँगसुत काजर ताकी उपमा भासे है कि गिरिजापतिभूषण शशि ता पर मानों मुनि अगस्त्य तिनको भख समुद्र ताकी पङ्क कीच लगी है सम्भावन भूषण उत्प्रेक्षा कर लक्षित। नायिका गृह सखी मुसक्याय सो सुन राधा मुरके घर को लजाय के चली यामें कुचन बिषे शम्भु की सम्भावना नख छिद्र बिषे घाउ की ताते उत्प्रेक्षा अरु सखी जानि गई रति ताते लक्षिता नायिका ताको लक्षण —

दो०—उत्प्रेक्षा -सम्भावना, करत आन की होइ।
सखी प्रीति जानत कहे, चतुर लक्षिता सोइ ॥ १३ ॥

गृह ते चली गोपकुमारि।
खरक ठाढ़ो देख अद्भुत एक अनुपम मार॥
कमल ऊपर सरल कदली कदली पर मृगराज।
सिंह ऊपर सर्प दोई सर्प पर शशि साज॥
मध्य शशि के मीन खेलत रूपकान्त सयुक्त।
सूर लखि भइ मुदित सुंदरि करत आछीयुक्त१४

उक्ति कवि की। कै अपनो घर ते गोपकुमारी राधा ने एक अद्भुत देखे कि कमल नन्दनन्दन के चरण कदली जंघा मृगराज कटि सर्प भुज शशि मुख मीन नेत्र देख रूपयुत कर मुदित आनन्दित भई या पद में उपमान ते उपमेय बोध किये अरु चित चाही बात देखके मुदित भई ताने मुदिता नायिका ताको लक्षण—

दो०—रूपकान्त उपमान ते, होइ बोध उपमेय।
चितचाही लखि बात ते, मुदिता ही को भेय ॥ १४ ॥

गिरिजापतिपितुपितुपितहू ते सो गुण सी दरशावै।

शशिसुतवेदपिता की पुत्री आजु कहा चितचावै ॥
सूरजसुतमाता सुबोध किम आपु न आदि ढहावै।
सूरजप्रभु मिलापहित स्यानी अनुमिल उक्तिगनावै १५

उक्ति नायिका की। कै गिरिजापति शिव पितु ब्रह्मा पितु कमल पितु समुद्र ते सौगुनी देखपरत है शशिसुत बुध ताते चौथो शनि पिता सूर्य पुत्री यमुना आजु कहा चित में चाहत है सूर्यसुत कर्ण माता कुन्ती बोध जे न आदि वर्ण ते कुंजे का नाश करत है सूर के प्रभु के मिलाप के हेतु समुद्र ते सौगुनी यमुना में अत्युक्ति अरु कुञ्ज गिरिबे कारण दुःख होइबे काज सो कारण के प्रथम भयो ताते अक्रमातिशय उक्ति अरु यमुना बढ़त मात्र दुःख भयो ताते चपला तस उक्ति अरु सहेट कुञ्ज में रहो ताको नाश देखत दुःख पायो ताते अनुशयना नायिका लक्षण—

दो०-कारण कारज भावते, अक्रमातिशय उक्ति।
बिनशत देख सहेट को, अनुशयना की युक्ति॥ १५॥

निशाअन्तपतिसुत स्वभाव सुन आजु कहां ते आई।
पुत्र पुत्र के पास गई किन सूरजसुता नहाई॥
हरिगृहजननीहित न सरस कहँ सुरभी सुतर गमाई।
सारँगसुत नीकन ते बिछुरत सर्प बेलि रस जाई॥
भानुभानुसुतसीसुभानु मम सब हित सरस कमाई।
सूरज पर आनन्द दुखित कर सरस योगता जाई १६॥

उक्ति नायिका की सखी सों। कि निशिअन्त सूर्य पुत्र कर्ण स्वभाव सखी हे सखि! तू कहां ते आई है पुत्र नन्द ताके नन्दन के पास गई कि यमुना नहाई है हरि वानर गृह वृक्ष जननी पृथ्वी

हित पयोधर तिनको सुरभी चन्दन कहां गमायो है सारँगसुत काजर नीकन अक्षन ते बिथुरो है सर्प बेलि नागबेलि पान को रस जाइ रहो है भानु सूर्य अरु भानुसुत शनि सो मोको भानु नाश करन तेरी कमाई है यह परायो आनन्द दुःख ता पर सम्भोग दुःख तासों मेरे बराबर की योग्यता तुल्य योग्यता की जाइ है या पद में सखी के सम्भोग ते अन्य सम्भोग दुःखिता अरु सूर्य सन उपमान उपमान की तुल्य योग्यता अरु मो सम उपमेय को लक्षण—

दो०–पर सम्भोगे अन्त दुख, दुख ता पर सम्भोग ।
बरन अबरनन ते कहे, तुल्य योग्यता योग ॥ १६ ॥

बीथिन मिलो नन्दकुमार ।
उदित उत ते भयो सजनी ऋक्षपति रुच धार ॥
भालु वसु पुनि पञ्च दोऊ करें अद्भुत रूप ।
मोहिं गहि ले गयो कुञ्जन मञ्जु मनसिज भूप ॥
निकसवी हम कौन मग हो कहो बारी बैस ।
मोह को यह गर्भसागर भरो आइ अनैस ॥ १७ ॥

उक्ति नायिका की सखी प्रति । कि हे सखि ! आज बीथिन में मोको नन्दकुमार मिलो अरु उत ते ऋक्षपति चन्द्र उदित भयो भालु ऋक्ष ऋक्ष कहे नक्षत्र बसु आठ पञ्चतेरहै हस्त हाथ इनके हाथ ते कर कहिये किरन ते दोई अद्भुत रूप करे रहे सो मोको गहि कर कुञ्जन में ले गयो कामरूप हम कौन मग ते निकसें हमारी बैस बारी है यह मोह के गर्भ को सागर भरो है इहां व्रजचन्द्र उपमेय चन्द्र उपमान जुदे जुदे धर्म ते शोभावान् बरणे ताते दीपक कोई कहै नाम पद में नहीं है सो है सूर ते सूर्य सूर्य को नाम सारँग

सारँग दीपक अरु नायक के प्रेम को गर्व करत हैं ताते प्रेमगर्विता नायिका लक्षण—

दो०—सो दीपक निज गुणन ते, बर्णत हैं इक भाइ।
प्रेम गर्व को करत हू, प्रेमगर्विता आइ॥ १७॥

शिलीमुख सारँग निहारन करौं कौन उपाइ।
बानभीर सुजान निकसत धरन धरणी पाइ॥
चमक चहुँ दिशि चलत चाही शम्भुभूषण भाइ।
नन्दनन्दनँ बैठ हेरत रहत निशि दिन गाइ॥
हो रही इह बिपत तेरी बिपति होहु सहाइ।
सूर सरस स्वरूप गर्वित दीपिकाव्रत चाइ॥ १८॥

उक्ति पूर्ववत् कि हे सखि! शिलीमुख सर सर तालाब में सारँग कमल देखन को कौन उपाइ करैं बान शिलीमुख शिलीमुख नाम भँवर जब धरती पर पायँ देत तब निकसत है मेरो सुगंध पाइके अरु शम्भुभूषण शशि के चाही जे चकोर हैं ते चारो दिशि ते घेर लेत हैं अरु नन्दनन्दन बैठके मेरे रूप को हेरत रहे नित गावत हैं या बिपति ते बिना पति की ह्वै गई है तुम सहाइ करो सूर कहै हैं कि सरस स्वरूप ते गर्वित ही दीपक की व्रत चाहत है अर्थ उगत रहत यामें बिपत बिपति ते दीपकाव्रत अलङ्कार औ रूप गर्व ते रूपगर्विता लक्षण—

दो०—पद आवृत जामें रहै, दीपकव्रत सो जान।
रूपगर्व ते कहत हैं, रूपगर्विता मान॥ १८॥

देख तितू कत मान बढ़ायो ।
भू[1]सुतशत्रु[2]नाथ[3]हित[4]पितु[5]तिय[6]प्रियँ[7]हि वचन डिढ़ायो ॥
नागसुता[8]पति[9]पितु[10]अरि[11] आधो नाम सुबदन छपायो ।
सूर[12]सुता अरि[13]बन्धु[14]तात[15]अरि[16]भूषण[17] वचन सवायो ॥
सुर[18]भीतमंजा[19]सुत[20]सुत[21] की जनु मींता[22] तलफ बढ़ायो ।
सूरश्याम जब परो पाय तर तब किन कण्ठ लगायो १६
राधे तैं कत मान कियो री ।
धनहरहितारिपुसुत सुजान को नीतन नाहिं दियो री ॥
वाजापतिअग्रजअम्बा के भानुथानसुत हीन हियो री ।
मापितुअरिहितापितुसुतबन्धू धारत कौन जियो री ॥
सूरश्यामहित अरध फट्यो कहुँ कैसे जात सियो री २०॥

उक्ति सखी की नायिका प्रति । कि हे राधे ! तैंने मान काहे कियो धनहर चोर ताको हित अन्धकार रिपु दीप सुत काजर नित नयनन में काहे न दियो वा जलजा लक्ष्मीपति कृष्ण अग्रज बलराम माता रोहिणी ताके भानु थान बारहों स्वाती ताको पुत्र मुक्ता ताते हियो हीन है मा लक्ष्मी पितु समुद्र अरि कुम्भज हित राम पितु दशरथसुत रिपुसूदन बन्धु लषण के न जिय में धरो है पार्वती पितु पर्वत अरु तेरो तनु अचल स्वभाव लियो है यही वस्तु दोउन में है सूरश्याम हित सखा कही आक फटै अब को

---

१ केवांच २ वानर ३ राम ४ भरत ५ दशरथ ६ कैकेयी ७ कलह ८ सुलोचना ९ इन्द्रजीत १० रावण ११ रामचन्द्र १२ यमुना १३ बलदेव १४ कृष्ण १५ वसुदेव १६ कंस १७ करोध १८ गौतम १९ अञ्जनी २०.हनुमान् २१ मकरध्वज २२ मछली ।

शीश कि यामें पर्वत तनु को एक धर्म अरु श्याम को हित आकाश की एकता बाकते सामान्य कियो ताते प्रतवस्तोपम मानिनी नायिका लक्षण–

दो०–सो प्रतवस्तुपमा कहै, समुझि द्विवाक्य समान ।
मान मानिनी करत है, कछू ईर्षा जान ॥ १९-२० ॥

मानिनि अजहूँ मान बिसारो ।
प्राणनाथ प्रतिपाल करन हित मानो कहो हमारो ॥
दो-दो-पतिधर तियापुत्र कहि अजहूँ वेग सिधारो ।
तीन दोइ दृग पांच सात इक गनि मतिवन्त विचारो ॥
दोइ एक करि अन्त हीन मुहि सो दो बेर विचारो ।
प्रथम डार उपमान कहा मुख बैठी मन्त्र सुधारो ॥
अति गम्भीर बनो पदमापितु सो बुधि उदर तिहारो ।
सूरदास दृष्टान्त पाइ पर देखत नन्द दुलारो ॥ २१ ।

उक्ति सखी की नायिका से । कि हे मानिनि ! अबहूं मान छोड़ो, प्राणनाथ प्रतिपाल करबे के हेतु हमारी कही मान के यामें नक्षत्र लगावत है दो दो चार चौथो रोहिणी पति चन्द्रधर महादेव त्रिया पार्वती पुत्र गणेश कहि अबहूं सिधारो तीन दो पांच अ… मृग दृग पांच सात एक तेरहों हस्त हे गजगति ! अजहूं मतिवन्ति सम्हारो दो एक कृत्तिका अन्त ककार ते हीन करै कृत दो बेर … कृतकृत्य मोको करो प्रथम अश्विनी है उपमान जाकी ऐसो घूंघु… मुखपर कहा डार बैठी हो अतिगम्भीर बनो है पद्मापितु समु… तो सोई बुद्धि ते तिहारो उदर है दृष्टि ते देखत पाइ पर देखत… हौ नन्ददुलारो यामें मानिनी नायिका पूर्ववत् लक्षण अरु समु…

उपमान उर उपमेय को बिम्ब प्रतिबिम्ब भाव ताते दृष्टान्त अलङ्कार है ताको लक्षण—

चौ०—जहां बिम्ब प्रतिबिम्ब बखानो। तहँ दृष्टान्त अलंकृत जानो २१

मानिनि अजहूँ छाँड़ो मान।
तीन बिम्बदधिसुत उतारत रामदलयुत सान॥
डेडल कम लेत नाहीं प्राण प्रीतम प्रान।
तूतिकी की रूप रतिपति व्रजन दूजी आन॥
लगी फिरत पचास तित तव पास कर वरवान॥
भूमिसुत जो लियो गुण सो निदरशन मुखहान॥
सूरदास सुजान पाइन परो कारो कान॥ २२॥

मानिनि इति। हे मानिनि! अबहूं मान छोड़ो तीन बिम्ब कहे छवि दधिसुत चन्द्र उतारत है रामदल ऋक्ष तारायुत तड़का डेडल ते तिल भर कम नाहीं लेत प्राणप्रीतम के प्राण तूतिकी की छकी है रूपराति की पाति मेरे है व्रज में दूसरी नाहीं पचास तित सौति लगी फिरत हैं तेरे पाछे श्रेष्ठ बन बनाइकै भूमिसुत वृक्ष को गुण अचल तू ने लियो है सन्मुख हानि निदरके देख अबे कान पायँ परैहै नायिका लक्षण पूर्ववत् अरु भूमिसुत को गुण मङ्गल का गुण लाल कहे कृष्ण उनको अनादर करने से हानि है जो सो करके तूने लियो है याते निदरशन अलङ्कार लक्षण—

चौ०—जोसो आनआन गुण ठाने। तहां निदरशन सुकविबखाने॥
निदरशन पद श्लेष है २२॥

निशि दिन पन्थ जोवत जाइ।
दधि को सुतसुत तासआसन विकल हो अकुलाइ॥

गन्धवाहन-सुत-सुबान्धव तासु पतनी भाइ।
कबै दृग भरि देखबो जू सबै दुख बिसराइ॥
अजाभख की हानि हमको अधिक शशिमुख चाइ।
सूर प्रभु व्यतिरेक विरहिन कवि दिखैहो पाइ॥ २३॥

उक्ति नायिका की सखी प्रति । निशि अरु दिन को पन्थ देखत जात है दधिसुत कमल ताको सुत ब्रह्मा ताको आसन हंस हमारो हंस अकुलात है सुगन्धवाहन पवन पुत्र भीम बन्धु पारथ पत्नी सुभद्रा बन्धु कृष्ण कब नेत्र से देखिहौं सब दुःख बिसराइके अजाभख पाती की हानि है हमको शशिते जिनको मुख अधिक है तिनकी चाहना है सो सूर के प्रभुते व्यतिरेक जुदी है विरहिनी ताको तिनके पद कवि दिखाइ है इहां नायक विदेश ताते प्रोषित-भर्तृका नायिका शशिते अधिक मुख याते व्यतिरेक अलङ्कार व्यतिरेकपद श्लेष लक्षण—

चौ०—प्रोषितपति परदेश बखानो । व्यतिरेकहु उपमे वटमानो २३

सखी री सुन परदेशी की बात।
अर्द्ध बीच दै गये धाम को हरिअहार चलि जात॥
ग्रह नक्षत्र अरु वेद अर्द्ध करि को बरजे मुहि खात।
रवि पञ्चम सँग गये श्यामघन ताते मन उकतात॥
कहुँ सहोक्ति कवि मिले सूरप्रभु प्राणरहत ननुजात २४

हे सखि! परदेशी की बात सुन । धाम घर ताको अर्द्धपाखपक्ष बीच में दैके घनश्याम गये हरि बाघ ताको अहार मास चले जात हैं ग्रह ९ नक्षत्र २७ वेद ४ सब मिल ४० आधे ते बीस विष खात मोको को बरजै रवि ते पञ्चम बृहस्पति तिनको नाम जीव है

सो सङ्ग श्याम घन लैगये ताते मन उकतात है अब सह सुन्दर उक्ति कहो नातरु प्राण जात है इहां नायिका पूर्ववत् श्यामघन के सङ्ग गयो है हमारो जीव ताते सहोक्तिअलङ्कार है लक्षण—

चौ०—दोहुन एकोसङ्ग बखानो । तहां सहोक्ति अलंकृत जानो ॥२४॥

बीती यामिनी युगचार ।
जात वेद सु मोहिं मारी वीर भूषण जार ॥
दनुजपति को अनुज प्यारी गई निपट बिसार ।
नागरिपु भख लगत नाहीं हो रही पचहार ॥
कपटहीन न मीन सर की मरण बिछुरत त्यार ।
सूर करत विनोक्ति भूचर चरण करत पुकार ॥ २५ ॥

उक्ति पूर्ववत् । कि यामिनी रात्री चार युग तो बीती जात वेद अग्नि मोहिं जार मारी है वीर भूषण कर वारे चन्दनो दनुज पति रावण ताको अनुज कुम्भकर्ण ताको प्रिय निद्रा निपट बिसर गई है नाग को रिपु व्याघ्र ताको भख पल[1] सो नाहीं लगत है मैं कपटहीन मछरी नहीं हौं जो मित्र के बिछुरत मरबे को तय्यार होजात है सूर कहत हैं यामें बिन उक्ति के भूषण गहना की उक्ति नाहीं चलत है भूचर दीमक ताको चरनहार मुरगा काहे नाहीं पुकारत प्रात काहे नाहीं होत या बिषे नायिका पूर्व विनोक्ति अलङ्कार है मीन जो प्रस्तुत सो विना कपट ते शोभा पावत है । लक्षण—

चौ०—हीन पीन प्रस्तुत बड़ होई । कहत विनोक्ति अलंकृत सोई २५

राधे कैसे प्राण बचावै ।
परी महान विपत्ति शीश पर बीसन ताप तचावै ॥

---

[1] मांस ।

शेषभारधरजापतिरिपुतिय जलयुत कबहुँ न हेरै।
वानिवासरिपुधररिपुलै शर सदा शूल सुख पेरै॥
वाचर नीतन ते सारँग अति बार बार झरलावै।
देखत भँवर कञ्जरस चाखत आपन ते मुरझावै॥
पन्नगशत्रुपुत्ररिपुपितुसुतहित पति कबहुँ न हेरै।
समासोक्ति कर सूर भृङ्ग को बार बार बरु टेरै॥२६॥

उक्ति नायिका पूर्व। राधे कैसे प्राण बचावै महाविपत्ति शीश पै परी है ताते विष के ताव सों तचत है शेष को भार भूधर पर्वत जा उमापति शिव रिपु जालन्धर तिय वृन्दा जल[1] वन युत अर्थ वृन्दावन कबहूं नाहीं हेरत वां निवास कमल रिपु चन्द्रधर शिव-रिपु काम शूल से लावत है वा जलचर मीन नीतन नयनन ते सारँग जलधार छोड़त है अरु भँवर कञ्जरस लेत देखके आप मुरझात है पन्नग नाग ते नग पर्वत ताके रिपु इन्द्र पुत्र अर्जुन शत्रु कर्ण पितु सूर्य सुत सुग्रीव हित ऋक्ष नाम नखत ताको पति चन्द्र नाहीं हेरत है समासोक्तिनाम सम उक्ति करि करि भृङ्ग जो पतङ्ग सूर्य है तिनको पुकारत उदित होहु-या पद में भँवर कमल अप्रस्तुत देख नायक प्रस्तुत समझो ताते समासोक्ति लक्षण—

चौ०—अप्रस्तुत ते प्रस्तुत जानै। समासोक्ति कवि ताहि बखानै २६

पलटबरण वृषभानुनन्दिनी जा पतिहित रिपुत्रास।
परी रहत ना कहत कबहुँ कछु भरि भरि ऊरधश्वास॥
वातआदि औ यानअन्त मिलि रिपुपति पतनीतास।

१ जल।

पितुदलपतिलखिउदितजरत जनु महाआगिनकेपास।
ताकत नहीं तरनिजा के तट तरुवर महा निरास ।
सूर श्यामघन मिलत छूटि है परकर ग्रीषम फास २७

पलट बरण उक्ति नायिका पूर्व । पलट बरण राधाते धारा ताकी जा लक्ष्मीपति विष्णु हित शिव रिपु काम के त्रासते परी रहत है कछु कहत नाहीं ऊर्ध्व श्वास लेत है बात नाम पवन यान नाम रथ आदि अन्त ते पथ ताकी रिपु यमुनापति कृष्ण पत्नी जाम्बवती पिता ऋक्ष ऋक्ष नाम नखत ताके पति चन्द्र ताको देखि जरत है तरनिजा यमुना के तट नाहीं ताकत देखत सूर श्यामघन मिलेते ग्रीष्म को परकर साबान्भ ताके पासते जाइ इहां काम तपन चन्द्र तपन तरनिजा तपन ग्रीष्म को समाज ताकी तपन मिटावनहार घनश्याम विशेषण है ताते परकर ताको लक्षण--

चौ०--साभिप्राय विशेषण होई । परकर ताहि कहैं कवि लोई २७

प्राणनाथ तुम बिन ब्रजबाला ह्वै गईं सबै अनाथ ।
व्याकुल भई मीनसी तलफत क्षण क्षण मींजत हाथ ॥
ग्रहपतिसुतहित अनुचर को सुत जारत रहत हमेश ।
जलपतिभूषण उदित होतही पारत कठिन कलेश ॥
कुञ्ज कुञ्ज लखि नयन हमारे भञ्जन चाहत प्रान ।
सूरदास प्रभुपर कर अंकुर दीजे जीवन दान ॥ २८ ॥

उक्ति नायिका पूर्ववत् । हे प्राणनाथ ! जबते तुम गये तब ते ब्रजबाला अनाथ होइ गईं व्याकुल मीनसी तलफतीं हाथ मींजतीं हैं ग्रहपति सूर्य सुत सुकण्ठ हित राम अनुचर हनुमन्त सुत मकरध्वज नाम काम हमेश जरावत है जल नाम गो गो कही

नन्दीपति शिव भूषण चन्द्र उदित होत क्लेश पारत है कुञ्जकुञ्ज देखके नयन जो हमारे हैं सो प्राण भञ्जन चाहत हैं हे सूरदास के प्रभु ! परकर जो वीर है दाह ताके हे अंकुर जीवन दान देहु इहां नयनको अर्थ नीति नाहीं जानत ऐसे नयन हैं याते परकरांकुर अलङ्कार लक्षण—

चौ०—साभिप्राय विशेष जहां है । परकर अंकुर कहत तहां है २८

चाहन गन्ध वैरी वीर ।
आपनो हित चहत अनहित होत छांड़त तीर ॥
नृत्यभेद विचार वा बिन इन्द्रवाहन पास ।
सूर प्रस्तुत कर प्रशंसा करत खण्डित नास ॥२६॥

चाहन इति । गन्ध के चाहनहार भ्रमर बड़े वीर वैरी हैं जे आपन हित चाहत हैं आनको हित होत तीर नाम नजीक छोड़ देत हैं नृत्य भेद ताल ताते जब वा जल जाइ है तब आप इन्द्रवाहन हाथी के कपोल पै रहत हैं सो वाकी करत है प्रशंसा परन्तु खण्डन कपोल चाहत है यामें भँवर की निन्दा करना इकप्रस्तुत है ताकी निन्दा करत याते आप्रस्तुत प्रशंसा अलङ्कार नायक प्रात आयो ताते खण्डिता लक्षण—

दो०—अनंत रहे आवेश पति, कहत खण्डिता ताह ।
प्रस्तुत आप्रस्तुत कहै, आप्रस्तुत कविनाह ॥ २६ ॥

देखत तू कत मान बिडायो ।
भूसुतशत्रुनाथहितपितुत्रिय प्रिय हिय वचन दृढ़ायो ॥
नागसुतापतिपितुअरि आधो नाम सुवदन छिपायो ।
सूरसुताअरिबन्धु तात अरि भूषण वचन सवायो ॥

सुरभीतमजासुतसुत की जनु माता तलफ बढ़ायो।
सूररोसपरजाइउक्ति कत कराठ न श्याम लगायो॥३०॥

उक्ति सखी की। कै तू नायक को देख काहे मान बिडायो भूसुत केवांच शत्रु वानर नाथ सुकण्ठ हित राम पितु दशरथ प्रिया कैकेयी प्रिय कलह काहेको कियो अथवा हठ नागसुता सुलोचना-पति इन्द्रजीत पितु रावण रिपु रामचन्द्र आधोचन्द्रवदन काहे छिपायो सूरसुता यमुना अरि बलराम बन्धु कृष्ण तात काम शत्रु शिव भूषण विष सो वचन काहे कहे सुरभी गौतम मिलै गौतमजा अञ्जनीसुत केशरीकिशोर सुत मकरध्वज माता मीन अब मछरी सी का तलफत है सूर रोस की परजाइ उक्ति करके कण्ठ सो श्याम काहे न लगायो यामें नायिका रोसकर पछितात सखी समुझावत ताते कलहन्तरिता रचना से सब बात कहत ताते परजा उक्ति लक्षण—

दो०—कलह करै पछितात सो, कलहन्तरिता जान।
रचना बातन ते कहत, परजा उक्ति प्रमान॥३०॥

बैठी आज कुञ्जन ओर।
तकत है वृषभानुनन्दिनि वलित नन्दकिशोर॥
भानुसुतहितशत्रुपितु लागि उड़त चुहुँकत हेर।
ह्वै गये सुर शूल सूरज विरह अस्तुति पेर ३१॥

बैठी है कुञ्जनकी ओर चितवत वृषभानुनन्दिनी नन्दकिशोर को तकत है भानुसुत कर्ण हित दुर्योधन शत्रु भीम पिता पवन लागेते दुःख होत है सुर कहे सुमन शूल से होगये हैं विरहते तिनकी स्तुति मुख निन्दा करती इहां सहेट सून ते विपलब्धा-स्तुति मुख निन्दा ते व्याजस्तुति अलङ्कार लक्षण—

दो०—सूनेही सङ्केत ते, विप्रलब्ध ठहराय ।
अस्तुति ते निन्दा कहै, ब्याज स्तुति कविराय ॥ ३१ ॥

फिर फिर उझकि झांकत बाल ।
वह्निरिपु की उमड़ देखत करत कोटिन ख्याल ॥
भक्षविधि के खरक फरकत अक्षु चारों ओर ।
केश ओर निहार फिर फिर तकत उरज कठोर ॥
हौं कहत ना जाहु उतको नन्दनन्दन वेग ।
सूर कर आक्षेप राखो आजु के दिन नेग ॥ ३२ ॥

उक्ति सखी की । वा बाल हर हर बेर तुमको झांकत है वह्निरिपु मेघ की उमड़ देखत है बहुत ख्याल करिके विधि नाम अज अजाभख पाती ताके खरकत नेत्र चारों ओर चमकावत है केश नाम बार बार नाम दरवाजे की ओर निहारिके फेर नीचे देखति है मैं नाहीं कहत कि तुम जाहु वेग उन आज के दिन के नेग को आक्षेप कर राखो है उतको आक्षेप पद श्लेष है यामें नायिका यह देखत याते उतको सखी कहि रोकत ताते आक्षेप अलङ्कार लक्षण—

बरवै—राह निहारै पीय की उतको सोइ ।
कहत रोकि आक्षेपा भूषण सोइ ॥ ३२ ॥

दुरदमूल के आदि राधिका बैठी करत शृँगार ।
दधिसुतसुतसुतसुत अरिभख मुख करे विमुख दुख भार ॥
जलचरजासुतसुत सी नासा धरे अनासाहार ।
वानरहित जा पति पतनी से बांधे बार अबार ॥

सारँगसुत नीकन में सोहत मनो अनीक निकार।
सूरज प्रभु विरोध सो भासत बस परयंक विचार ॥३३॥

उक्ति सखी की। दुरद हाथी ताको नाम कुञ्जर मूल नाम जड़ ताके आदि वर्णते कुञ्ज भई तामें बैठि राधा शृङ्गार कराति है दधिसुत कमल ताको सुत ब्रह्मा ताको सुत कश्यप सुत सूर्य शत्रु राहु भखचन्द्र मुखते दुःख को भार विमुख करे हैं जलचर मीन जा मत्स्योदरी सुत व्यास सुत शुक शुक ऐसी नासिका धरे हैं अनास हार बेसर टूटी नहीं अथवा हार नाहीं टूटे वानरहित जाम्बवन्त ताकी पुत्री जाम्बवती पति कृष्ण पत्नी यमुना से बार अबार ते बांधे बहुत विलम्ब ते सारँगसुत काजर नीकन अक्षन में दियो है मानो अनीक हरवल करै है हे सूर्य के प्रभु! विरोध सो लगत है पर्यङ्क पै बसि बैठ के विचारो अथवा विरोध सो लगत है इन पदन में ताते विरोधाभास अलङ्कार है वासकशय्या नायिका ताको लक्षण—

दो०—विना विरोध विरोध सो, कही विरोधाभास।
वासकशय्या जो सजैं, सब शृंगार सुखरास॥ ३३ ॥

हेरत हरष नन्दकुमार।
बिन दीये विपरीत कवजा पगन लाली भार॥
रञ्च उघरत देख नीकन मान उरवर भेद।
परे सारँगरिपु न मानत करत अद्भुत खेद॥
निकस सारँग ते सुसारँग हरत तन की ताप।
सुधाधरमुख पै रुखाई दई धों किहि थाप॥
श्रीसुतन ते सरस सागर होत क्षण क्षण आज।
कियो पति आधीन सूरज कै विभावन व्याज ॥३४॥

उक्ति पूर्व। या पद बिषे विभावना अलङ्कार भेद स्वाधीन-पतिका नायिका है सो कहत है कि नन्दकुमार आज हेरत हैं कत्र· जा विपरीत ते जावक बिन दीने पग अरुणता पाँयन में है यहां पहिल विभावना नीकन अञ्जन के रञ्ज उघर तनते उर भेद न मानत है इहां दूसरो विभावना सारँगरिपु पट प्रतिबन्धक है ताको नाहीं मानत है इहां तृतीय विभावना सारँग कपोत कण्ठ ते सारँग कोकिल वचन निकसत तन ताप हरै है इहां चौथो सुधाधर चन्द्रमुख पै रुखाई काने थापी इहां पञ्चम श्री लक्ष्मी कार्य ताते सुखसागर कारण निकसत इहां षष्ठ याको लक्षण—

होत छभांति विभावना, कारण बिनहीं काज १
हेतु अपूरण ते जहां, कारज पूरण होइ २
प्रतिबन्धक के होत ही, कारज पूरण जान ३
जबै अकारण वस्तु ते, कारज परकट होइ ४
काहू कारण ते जबै, उपजै कार्य विरोध ५
काहू कारज ते जबै, उपजै कारणरूप ६

(भाषाभूषण)

अरु नन्दकुमार हेरत इत्यादि पद ते स्वाधीनपतिका नायिका—
पति आधीन जहां रहै, पतिका सो स्वाधीन ॥ ३४ ॥

तात तात पै जात अकेली।
दुती समूह दिवसपति नन्दनसङ्ग न सरुच सहेली॥
उरज अनूप उठे चारों दिशि शिवसुतवाहन खाद।
शम्भुसेन से मारी डोलत पग पग पगरिपु साद॥

तदपि न डरत कूल कालिन्दी धारो ओचित मांझ।
सूरश्यामसँग विशेषोक्तकहि आई अवसरसांझ॥ ३५॥

उक्ति पूर्व। तात नन्द के नन्द पर जात हैं समूह रास दूती वृष दिवस पति भानु वृषभानुनन्दिनी उरज पयोधर मेघ चारों दिशि उठे हैं शिवसुतवाहन मोर खाद सर्प शम्भुसेना प्रेत पग रिपु कण्टकउ डग डग में हैं तदपि नाहीं डरत है कूल कालिन्दी पै अरु विशेषोक्त अलङ्कार अभिसारिका नायिका है रोकवे को हेतु प्रेतादि कारण सो कार्य न करि सके लक्षण—

दो०—विशेषोक्त जब हेतु ते, कारज उपजै नाहिं।
प्रीतम पै अभिसारिका, जात बुलावत माहिं॥ ३५॥

अब रथ देखि परत न धूर।
दूर बढ़िगो श्यामसुन्दर व्रज सजीवनमूर॥
भूमिसुत की देख करणी आदि ते कर हीन।
पर जीवन मध्य नाहीं रहन पावत मीन॥
अष्टसुर इनको पठाये कंस नृप के त्रास।
तिपीपी पल मांझ कीन्ही निपट जीवनि रास॥
कलहनीपतिपितापुत्री तकत बनत न आज।
कौन जानत रहै यह बिन सम्भवन को काज॥
आइ है कै कहो सजनी सकल मोहिं जनाइ।
सूर समुझै गमनपतिका करत सुरत सुभाइ॥ ३६॥

उक्ति नायिका की। हे सखि! अब रथ की धूरि नाहीं देखि परत सजीवनमूर व्रज की दूर पहुँचे भूमिसुत अंकुर याकी करणी

आदि ते हीन करते क्रूर रहत मलाह को अस्त्र तासों मीन जल में नाहीं बचत अष्ट सुर वसुदेव इनके पठाये हैं ति गीपी नाम छिपी छिपी कहैं गोपी जीव निराश पलमें कर दई कलहनीपति शनि पिता सूर्य पुत्री यमुना देखत नाहीं बनत यह कौन जानत रहै बिन सम्भावन को कार्य अब कब आइ हैं सूरपति गमन समुझै सुरति करि करि यामें असम्भव अलङ्कार प्रवत्स्यत्पतिका नायिका लक्षण—

दो०—कहे असम्भव हेतु जहँ, बिनु सम्भावन काज ।
गमन सुनत पति को वहै, होत प्रवत्स्यत् साज ॥ ३६ ॥

वन ते आज नन्दकिशोर ।
अली आवत करत मुरली की महाघनघोर ॥
दृगन ते कछु करत बातैं भौंह ते दिन अन्त ।
जंग मन ते सुर सुनावत सरस सुषमावन्त ॥
देखहु लसत हिये सबके निरखि अद्भुत रूप ।
सूर अन सँग तजत तावत अयोपतिकासूप ॥ ३७ ॥

उक्ति पूर्व । वन ते नन्दकिशोर आवत भौंह ते दिन अन्त राति जङ्गम चरणनते शब्द सुनावत या पद में आगतपतिका नायिका लक्षण । असङ्गति अलङ्कार आगतपतिका नायिका लक्षण—

दो०—कारण आन सुआन है, कारज होत असङ्ग ।
पति आवत के होत है, आगतपतिका रङ्ग ॥ ३७ ॥

जब ते हौं हरिरूप निहारो ।
तब ते कहा कहों री सजनी लागत जग अँधियारो ॥

तमहरिसुत गुण आदि अन्त कविकामतिवन्त विचारो ।
मेरे जान अनीतनयन को कीनो विधि गुणवारो ॥
खचर खिलोना खीर आदि मिल मुखसम वदन सम्हारो ।
लाग गयो याही ते इनको रथ खातिय दुजवारो ॥
पूषणसुत सहाइ शिवआनन का लख नयन विचारो ।
सूरदास अनुराग प्रथम ते विषम विचार विचारो ॥ ३८ ॥

जब ते हम हरिरूप देखो तब ते जगत् अँधेरो लगत है तमहरसुत काजर अरु गुणको नाम दाम है आदि अन्तते काम भयो सो कवि जो काम ऐसो रूप कहत ताते इनको ब्रह्मा ने अनीति भी अनयन करे ख आकाश खिलौना चन्द्र खीर दूध आदि वर्ण ते चन्द्र जो इनके मुख समान भयो ताते याको रथ खा कहे शून्य द्विज कहे एक सब विपरीत ते लिखी ये अङ्क की वामगति है तो दशरथ होत है ताकी त्रिया कैकेयी ताको लगो कलङ्क चन्द्र कलङ्कित है गयो पूषणसुत सुग्रीव सहाय ऋक्ष शिव आनन पञ्च पांचवों नक्षत्र मृगशिरा सो मृगनेत्र देख क्या विचारो सूरदास प्रथम अनुरागते विषय विचार इनको जानो अथवा प्रथम अनुराग भयो ताते या पद बिषे पूर्वानुराग अरु कृष्ण न श्याम हैं तिनको उज्ज्वल कार्य में वर्णों याते विषम अलङ्कार कविको अभिप्राय लक्षण—

दो०—कारण काज विरोध रँग, विषम कहावै सोइ ।
प्रथम भयो अनुराग ते, है पूरबई सोइ ॥

परन्तु या पद में अद्भुत को हेतु किया ताते हेतूत्प्रेक्षा है ॥ ३८ ॥



सजनी नन्दनन्दन आज ।
खरक ठाढ़े हेर आई हर्ष बाढ़ो साज ।
ताल नव की ओर चितवत लेत है मन मोल
चमकनाने चलन चहुँदिश कहत अमृत बोल ।
टकुमु लटकन देख सजनी करत सुख विपरीत
सूर श्याम सुजान सम वश भई है रसरीत ॥ ३९ ।

उक्ति नायिका की सखीप्रति । कि हे सखि ! आज नन्दनन्द खरक में ठाढ़ो हेर आई है ताल पलटे ते लता की ओर नव ते व की ओर चितवत हैं मन मोल लेत हैं चमकनाने ते नयना चलत चार हूं ओर टकुमु पलटे ते मुकुट होइ है इनको विपरीत करे सुर है सूरश्याम सुजान मेरे बराबर करे करत रसरति अनुराग पू अलङ्कारसम यथा योग को सङ्ग ॥ ३९ ॥

वंशीवट के निकट आजु हौं नेक श्याम मुख हेरो
नटनागर-पट पै तबहीं ते लटक रह्यो मन मेरो ।
शिवरिपुतिय घटमनुजागिरारस आदि वरणजा केरो
सुतवाहनशिर धरे आप सुचानिज कर समनिरखेरो ।
नीरदेव वो कोप सहित कर पूरब रीत बसेरो
भूसुत तृतिय तलफ शफरी भो वार हीन तन घेरो
सूरज चिते नीच जल ऊँचो लयो विचित्र बसेरो ॥ ४०

उक्तानुराग पूर्व । वंशीवट के निकट आज मैंने नेक श्या को मुख हेरो नटनागर के पट पै तब ते मेरो मन लटको है शिवरि

तिय तुलसी घटहीन मनुज नर गिरा रस इनको आदि वर्ण लेत तुहिनगिरि जा पार्वती सुत स्वामिकार्त्तिक वाहन मोर के पक्ष शिर पर धरे हैं नीरनाम बारि देव सुर कोप रीस आदि वर्ण ते बांसुरी सो बजावत हैं भूसुत मङ्गल ते तीसरो जीव सो तलफत मछरी की रीतिते ऐसे के नीचे जल में परछाहीं देखत तन ऊँचे चढ़ि गयो जहां विचित्रता देखि यामें पूर्व अनुराग में विचित्र अलङ्कार है नीचे चितवत ऊँच होइ तो लक्षण—

दो०—इच्छा फल विपरीत को, कीजे यतन विचित्र ।

अरु मीन उपमान की तरह ते जीव तरफरात ताते दृष्टान्त है परन्तु कवि को अभिप्राय विचित्र में है ॥ ४० ॥

मोहन मो मन बसगो माई ।
को जाने कुलकान कहां है मात तात गृह भाई ॥
ज्यों साँरग साँरग के कारण साँरग सहत न डोलै ।
रम्भापतिसुतशत्रुपिता ज्यों नय आहि अन्त न तोलै ॥
तनु पय नीत आदिसुतसुत की जननी प्रीतममाहीं ।
रहत तजत परवश प्रहार त्यों आश तज्जन तन नाहीं ॥
नृप भूषण कपिपितु गज पहिलो आश खचर की छोड़े ।
तिथि नक्षत्र के हेतु सदाई महाबिपत तन वोड़े ॥
त्यों मम प्राण न बान सबन की आन ऐंच सी राखी ।
सूरजदास अधिक का कहियेकरोशत्रुशिवसाखी॥४१॥

उक्ति पूर्व । मोहन मेरे मन बसो कुलकान मातादि को जानै कहां है जैसे साँरग मृग राग के हेतु बाण सहत डोलत नाहीं

रम्भापति सुत शत्रु कर्ण पिता सूर्य नाम पतङ्ग ते पतींगा नय नदी अहि सांप अंत ते दीप में जरत हैं तनु अङ्ग पय जल नीत के आदि वर्ण ते अञ्जनीसुत हनुमान् ताके सुत मकरध्वज माता मछरी प्रीतम जल में रहत है परवश ते तजत है तौ भी प्राण नाहीं राखत नृपभूषण चामर कपि पिता त्रिमूर्ति गज करी आदि ते चात्रिक खचर घन की आश छोड़े है तिथि पन्द्रहै नक्षत्र स्वाती चाहत पपीहा तैस ही मेरे प्राण सबकी बान लई है अधिक का कहौं शिवशत्रु काम साखी है इहां जो सबको मोहन आपमें राखनहार सो मेरे मन में बस गयो याते कवि को अभिप्राय अधिक को है लक्षण—

दो०—अधिक दीर्घ आधार ते, जब आधेय गनाइ ॥ ४१ ॥

कुञ्ज मग में आज मोहन मिलो मो कहँ बीर।
चली आवत ती अकेली भरे यमुना नीर॥
गहे सारँग करन सारँग सुर समारत बीर।
नयन सारँग सैन मो तन करी जान अधीर॥
आठ रवि ते देख तब ते परत नाहिं गँभीर।
अलप सूर सुजान कासों कहों मन की पीर॥ ४२॥

कुञ्ज मग में आज मोहन मोको मिलो मैं यमुना जल लिये आवति रही सारँग कमल करन ते सारँग के सुर सम्हारत रहे अर्थ मुरली के छिद्रन ते अरु सारँग जे मृग दृग हैं तिन ते मेरी ओर सैन करी तब ते आठवों ग्रह राहु नाहीं देखि परत जहां अलि पताका से कहैं यामें ऐसो जो मार सो अलप है गयो तो आधार आधेय दोऊ अलप ते अलपालङ्कार है लक्षण—

दो०—अलप अलप आधेय ते, सूक्षम होहि अधार ॥ ४२ ॥

आजु अली लखि अचरज एक।
सुतसुतलाखित तिपीपी तिपीपी सुतसुत बांधे टेक॥
पगरिपु अङ्ग अङ्ग दोहुन के झरत धारकन नीक।
रागमूल भो शिव प्रिय देखत पेखत नाहिं नजीक॥
दोउ लगत दोहुन ते सुन्दर भले अन्योन्या आज।
सात्त्विक सूर देखि दोहुन को कर न सकतहै लाज॥४३॥

उक्ति सखी की। कि हे सखि! आजु यह अचरज देखे सुत कहे नन्द के नन्दन तिपीपी कहे छपी छपी ते गोपी परस्पर टेकवां देखि रहे हैं पगरिपु कण्टक दोहुन के अङ्गन में उठे हैं राग मूल सुर शिव प्रिय भंग दोहुन को भयो है नजीक नाहीं देखत है अरु जे दोई दोहुन ते सुन्दर लागत हैं भले अन्योन्या परस्पर सात्त्विक देख दोहुन को लाज नाहीं करि सकत या पद बिषे सात्त्विकभाव कण्टकादि सुरभङ्ग ते अरु परस्पर ते अन्योन्यालङ्कार लक्षण—

दो०—लखि विभाव जो अङ्ग में, होत सुसात्त्विक जान।
उपकारी जहँ परसपर, तहां अन्योन्या मान॥४३॥

सजनी जो तनु वृथा गँवायो।
नन्दनँदन व्रजराज कुँवर से नाहक नेह लगायो॥
दधिसुतधररिपु सहे शिलीमुख सुख सब अङ्ग नशाये।
शिवसुतवाहनारिपुभखसुत ते सब तन ताप तचाये॥
घर आँगन दिशि विदिशि सूरजातट वह मूरति देखी।
सूरज प्रभु ते कियो चाहियत हैं निरवेद विशेखी॥४४॥

उक्ति नायिका की सखी प्रति । कि हे सखि ! यह जो तनु है सो वृथा गयो नन्दनन्दन व्रजराज कुँवर से नेह किये दधिसुत-धर शिव रिपु काम के बाण सहे सब सुख खोइ के शिवसुत गणेश वाहन मूस रिपु बिलारि भख दधि सुत चन्द्र ते ताप सों तची घर आँगन दिशन विदिशन सूरजा यमुनातट वही मूराति देखी अब सूर के प्रभु ते निर्वेद विशेष करो चाहियत है यामें निर्वेद सञ्चारी को संकर है सब ते मन हटो ताते निर्वेद एक वस्तु अनेक ठौर वर्णी ताते विशेष अलङ्कार लक्षण—

दो०——खेद सुक्ख ते कहत हैं, सञ्चारी निर्वेद ।
एक अनेकन थान ते, है विशेष को भेद ॥ ४४ ॥

धिक धिक मोहिं तोहिं सुन सजनी धिक ज्यहि हेतु बुलाई ।
धिक साँरग साँरग में सजनी साँरगअङ्ग समाई ॥
साँरगमाल लगत साँरगसी सारंगिन जो फूली ।
सारंगिन दै दोष सूर वय घातिन समझ न भूली ॥ ४५ ॥

धिक् धिक् इति । उक्ति नायिका की सखी सों कि मोको धिक् तोको अरु जाके हेतु बुलाई ताको साँरग चन्द्र साँरग राति साँरग जो कारो जाके अङ्ग में समाइ साँरग दीपमाला साँरग आगि सी लगावत अथवा साँरग भ्रमर माल सारंगिन कमलिनी जो फूली है सारंगिन जो अली है ताको दोष दैकै वयक्रम की घातिन समुझके भूली यामें ग्लानि सञ्चारी सुखदायक दुःख-दायक ते व्याघात अलङ्कार ॥ ४५ ॥

रविदोधररिपु प्रथम विकासो ।
ताने निज पतनी मेरे मन करि सारङ्ग प्रकासो ॥

पतनी लै सारँगधर सजनी सारँगधर मन खैंचो ।
ग्रह नक्षत्र अरु वेद सबन मिल तन प्रण करके बैंचो ॥
सो तनु हानि होन चाहत है विना प्राणपति पाये ।
करि शङ्का कारण की माला तिहि पहिराउ सुभाये ॥ ४६ ॥

उक्ति नायिका की सखी प्रति । कि हे सखि ! रवि ते दूसरो ग्रह चन्द्र धर शिव रिपु काम प्रथम हमारे तनु में आयो ताने निज पत्नी रति प्रीति करके हृदयकमल प्रफुल्लित कियो रति जो है ताने सारँगधर कृष्ण सारँग हाथ पकरके मन खैंचो अथवा उर कमल में खैंचो ग्रह नक्षत्र वेद चार मिल चालीस सो मन सो मन ने हमारो तनु प्रण रोप के बेंचो ता तनु की हानि भयो चाहत है प्राणनाथ बिन ताकी शङ्का करिके अरु ये जो कारण ताकी माला ताको पहिरावहु इहां प्राणहानि के डर ते शङ्का सञ्चारी कारण ते कार्य होत भयो ताते कारणमाला अलङ्कार है लक्षण—

दो०—वस्तु भावती हानि ते, डर सो शङ्का मान ।
कारण काज परम्परा, कारणमाला जान ॥ ४६ ॥

वयरोचनसुत को सुभाव सुनि जबहीं जानि पठाई ।
तबहीं तो सँग चन्दभाग गो सब सुख देख नवाई ॥
चन्दभागसँग गयो सुआखररिपु सब सुख बिसराई ।
एक अबलकर रही असूया सूर सुतन कह चाई ॥ ४७ ॥

उक्ति नायिका की सखी प्रति । वयरोचनसुत स्वभाव सखी जब तोहिं पठाई तब चन्द भाग मन गयो जब मन गयो तब

सुआखर सुवरण रिपु सुहाग गयो एक अवल तनु रहै यामें असूयासञ्चारी एकावली भूषण लक्षण—

दो०—अनसहिबो पर भले को, तहां असूया होइ।
ग्रहतमुक्त की रीति ते, एकावलि कवि लोइ॥

नायिका पर संभोग दुःखिता को लक्षण पूर्ववत्॥ ४७॥

राधे आज मदन मदमाती। सोहत सुन्दर सङ्ग श्याम के खरचत कोट काम कल थाती॥ अन्तरिक्ष-श्रीबन्धु लेत हरि त्यों ही आप आपनी घाती। ग्रीषम पवन लेत हरिहारिकर ग्रीषम पवन लेत निज छाती॥ यह कौतुक विलोकि सुन सजनी माला दीपक की चितचाती। सूरदास बलि जात दुहुन की लिख लिख हृदय कथा चित पाती॥ ४८॥

उक्ति सखी की सखी से। हे सखि! आज राधा मदनमद में माती है सुन्दर श्याम के सङ्ग जो कोक में कामकलानि की थाती जोरी रही सो खरचत है अन्तरिक्ष अधर श्रीबन्धु सुधा हरि लेत हैं तैसहू आप लेत है ग्रीषम पवन को नाम लपट है जैसे हरि लपटत तैस ही आप लपटत हे सजनी! यह कौतुक देखि का दीपमाला चाहत है सूर बलि जात दुहुन की प्रेमपाती हृदय में लिख लेत या पद में मद सञ्चारी मालादीपक अलङ्कार है लक्षण—

दो०—मोह जु अति आनन्द ते, मद कहियत है सोइ।
दीपक एकावलि मिलत, मालादीपक होइ॥ ४८॥

देखि आज वृषभानुदुलारी । दिनपतिसुत भ्राता पितु पितुजापतिसुतस्रत प्रिय पितु हितकारी ॥ शत्रु प्रिया करि महाथकित ह्वै रही समारन अङ्ग बिचारी । नीकन अधिक अधिक दीपत द्युति ताते अन्तरिक्ष छवि भारी ॥ मेघ न मध्य प्रिया पाटजातिकनख डारत तीन लोक छवि वारी । भूषण सार सूर श्रम-शीकर शोभा उमड़त अमल उज्यारी ॥ ४६ ॥

राधे इति उक्ति सखी की सखी प्रति । कि आज वृषभानु-दुलारी को देख दिनपति सूर्य सुत कर्ण भ्राता युधिष्ठिर पिता धर्म-राज पिता सूर्य पुत्री यमुना पति कृष्ण सुतसुत अनिरुद्ध पत्नी ऊषा पिता बाणासुर हित महादेव शत्रु काम पत्नी रति सो रति करि महाथकित भई है अङ्ग नाहीं सम्हार सकत नीकन अक्षन में आछी द्युति है ताते अन्तरिक्ष अधरन में मेघन कहे पयोधरन में पाटनखजाति के घाउ नखक्षत पै तीन लोक की छवि वारत हौं भूषण सार श्रम के शीकर ते शोभा उमड़त है या पद में जो श्रम भयो ताते श्रम सञ्चारी अरु दृगन ते एक एक की छवि अधिक है ताते सार अलङ्कार लक्षण—

दो०—बहुत उताइल काज ते, श्रम सुशिथिलता होत ।
एक एक ते है अधिक, भूषणसार उदोत ॥ ४६ ॥

राधा बार बार जमुहात ।
जलचरजलसुत कीर बिम्बफल है रसाल के सात ॥
गमुख देख नासिका अधरन ठोढ़ी ठीक लखात ।

सारँगसुत बिन छवि बिन नथुनी रस बिन बिन्दु विना अधिकात ॥ सूरज आलस यथासंख्यकर बूझ सखी कुशलात ॥ ५० ॥

राधा इति । उक्ति सखी को सखी सों । कि राधा बार बार जमुहात है जलचर मीन जलसुत चन्द्र कीर सुवा बिम्बफल कुँदुरू रसाल आम ये यथासंख्यकर लगावत सब दृग जलचर मुख शशि कीर नासिका बिम्ब अधर रसाल ठोढ़ी सारँगसुत काजर दृगन छवि मुख नथुनी नासिका रस अधर बिन्दु ठोढ़ी यामें आलससञ्चारी यथासंख्य अलङ्कार है लक्षण—

दो०—उठ न सकत ऐंड़ात तन, जहां सुआलस होइ ।
वस्तु अनुक्रम सङ्ग ते, यथासंख्य कवि लोइ ॥ ५० ॥

नन्दनँदन बिन व्रज में ऊधो सब विपरीत भई ।
खगपति व्यास वचन सम कोकिल बोलत जहरमई ॥
भूसुतशत्रु गेह में काहू दिपत दवार दई ।
पन्थशत्रुपतिसुतसुधारसरकरि तनु शूल सई ॥
शिवसुतवाहनशत्रुभोगसुतरिपुभख बान लई ।
वाजापतिवाहन की शोभा बोलत जहरमई ॥
अब की बेर मिलावहु व्रजपति जीवन मूरजई ।
सूर बहुरि परजाइ दीन हर कुबजा कूर हई ॥ ५१ ॥

नन्दनँदन इति । उक्ति गोपी की ऊधो प्रति । कि हे ऊधो ! व्रज में सब विपरीत भई है खगपति व्यास काक समान कोकिल बोलत है भूसुत केवांच शत्रु वानर गेह वृक्षन में काहू दवारदई है

पन्थ शत्रु यमुनापति कृष्ण सुत काम शूल सई करत है शिवसुत गणेश वाहन मूस शत्रु बिलारी भख दधि नाम समुद्र सुत चन्द्रमा रिपु राहु भख सूर्य की बान लई है वा जलजा लक्ष्मी पति विष्णु वाहन गरुड़ सेना पक्षी जहर से बोलत हैं ताते अब की बेर मिलावहु व्रजपति जीवनमूर सूर कहत यामें पर्याय अलङ्कार दीनतासञ्चारी है ताको लक्षण—

दो०—द्वै पर्याय अनेक के, क्रम से आयो एक।
दीन वचन ते दीनता, जानत सुकवि विवेक ॥ ५१ ॥

व्रज में करों कौन उपाइ।
भई जो विपरीत ताके समझ शूल सुभाइ ॥
चारपदपति केशभूषण ते निकासी शङ्क।
तिपीपी उर डार दीनी प्राण वारी रङ्क ॥
रटन साँरग ते निकासी नाग समर मिलाइ।
डार दीनी सुमुख तिनके कहा धों चितचाइ ॥
यहै चिन्ता दहै छाती कामघाती बीर।
करत है परसंख काहे समझ ताकत तीर ॥ ५२ ॥

उक्ति नायिका की सखी से। कि हे सखि! व्रज में का उपाय कीजिये जो विपरीत भई है ताके शूल समझ चौपद पशु ताके पति शिव भूषण शशि को नाम शशांक है ताते शंक निकासति छपी गोपिन को प्राण की दई है साँरग पपीहा जो पी पी रटत रहै सो नाग नाम अहि समर रण दो मिलाइ अहिरण भई तिनके मुख में डारो है का पी पी पुकारती यह चिन्ता ते छाती जरत है

तापर काम जो घाती है सो करत है पर शंक शत्रु की शंकावान् समुझिकै यामें चिन्तासंचारी परसंख्या अलंकार लक्षण—

दो०—चिन्ता जो प्रिय वस्तु की, करै चाह मन माहिं।
परसंख्या इक थल बरज, दूजे ठहरत जाहिं॥ ५२॥

भूसुत आइ गो इहिबेर।
लेन सुतसुत हाइ सजनी समझ आप सबेर।
पाण्डुसुतपितु तात होके लेइगोरी प्रान।
कै सुजीवनमूरि लेकै हरै गो तनसान॥
मोहिं यह सन्देह सजनी परो विकलप आन।
सूर समझ उपाय करि कछु देहु जीवनदान॥५३॥

भूसुत अंकुर हे सखि! अंकुर आइ गयो है यही बेला में सुत जो नन्द हैं तिनके सुत को लीबे के हेतु सो हे सजनी! तू सबेर समुझ पाण्डुसुत कर्ण पिता सूर्यपुत्र यम होके प्राण लेहिगो कै जीवनमूरि नन्दनन्दन को लै जाइगो मोको यह सन्देह को विकल्प है सो समुझ के उपायकर जीवदान दे यामें चित्त विकलता ते मोहसंचारी यह कै वहां ते विकल्प अलंकार है—

दो०—चित्तविकलता ते कहत, मोहमहा कविराज।
सो विकल्प जहँकै जहैं, है यहि विधि को साज॥५३॥

दृगजापतिपतनीपातिसुत के देखत हूं मुरझानी।
उठि उठि परत धरणि पै सुन्दर मन्दिर भई अयानी॥
सारँग वचन सुनत जीवन की कछू आश उरआनी।
भूतनयारिपुपितुसेना की संगिन मत गत ठानी॥

कासों कहौं समुच्चय भूषण सुमिरण करत बखानी ।
सूरदास प्रभु बिन ब्रज ह्वैहै कहिये कहा सयानी ॥५४॥

उक्ति सखी की सखी से । कि दृग नाम लोइन लोइन नाम पक्षी मैना ताकी जा पार्वती पति शंकर पत्नी गंगा पति समुद्र सुत शशी देख के नायक की सुधि आई ताते मुरझाइ गई ताते उठि उठि धरणी पै परति है मन्दिर में अयानी हो रही है सारँग पपीहा के वचन खन उठत है जब बोलत कि पी आयो तब जीवन आश होत है भूतनया जानकी रिपु जयन्त पितु इन्द्र सेना मेघ संगिन बिजुरी की गति हो रही है अर्थ चमकत है सो मैं कासे कहौं जहां समुच्चय अलंकार सुमिरण संचारी कर रही है लक्षण—

दो०—एक संग में भाव बहु, कहे समुच्चय सोइ ।
सुधि ते सुमिरण जानिये, सुकवि सराहत जोइ ॥ ५४ ॥

बोल न बोलो ए ब्रजचन्द ।
कौन है सन्तोष सब मिल जान आप अनन्द ॥
कहै सारँग सुतवदनि सुन रही नीचे हेर ।
निरख सारँगवदनसारँग सुमुख सुन्दर फेर ॥
गहत सारँग रिपुसुसारँग दियो सारँग सीस ।
कियो भूषणपुत्रसारँग संग सारँगदीस ॥
उदय सारँग जान सारँग गयो अपने गेह ।
सूरश्याम सुजान सँग ह्वै चली विगत कलेश ॥५५॥

उक्ति नायिका की नायक प्रति । कि हे व्रजचन्द्र ! हमसे मत बोलो आपको आनन्द देखि हम सबने संतोष कियो है यह सुन

नायक कही कि साँरग समुद्र सुत चन्द्रबदनि सो सुन नीचे हेरन लगी साँरग कमल चरण पै साँरग कृष्णको देख मुख फेर लियो साँरग रिपु पट जब पकरो तब आप साँरग कमल कर साँरग शम्भु कुचन पर धर राखो सो साँरग दीप ताको पुत्र काजर अरु साँरग दीपक कीनो अर्थात् कारक दीपक अलंकार कीन्हे अरु उदित सारग सूय को विचार साँरग चन्द्र आपने घर गयो जानके श्याम के संग चली क्लेश नाहीं पायो यामें धृत संचारी जनायो ।

दो०—कारक दीपक में कहत, क्रम ते बहुते भाउ ।
धृतसन्तोष विचार मत, वरणत हैं कविराउ ॥ ५५ ॥

मानिनि तजो नाहीं मान ।
करत कोटि उपाय थाको सुघर सुन्दरश्याम ॥
इन्द्रादिशि के आदि राखै आदिदर्पणबाण ।
दो हकार उचार थाको रहो काढ़त प्राण ॥
हेमपितु सुन शब्दसेना लगी आप लजाइ ।
योग प्रियभूषण समारत सूर अति सुख पाइ ॥ ५६ ॥

उक्ति कवि की । कि मानिनी ने मान नाहीं तजो नायक बहुत उपाय करि थाको इन्द्र पाकशासन दिशि ईशान आदि वर्ण ते पाइ दर्पण शीशा बाण नाम शर आदि ते शीश भयो शीश पाद पै धर्यो दो हकार ते हाहा उचार थाक गयो प्राण निकासबे पै भयो तब तक हेम सुवर्ण ताको नाम अर्जुन पिता इन्द्र सेना मेघ को शब्दसुन लजाइ रही योगिन को प्रिय समाधि अलंकार सूर समारत सुख पायो इहां लज्जासंचारी समाधी अलंकार है ताको लक्षण—

दो०—सो समाधि कारज सुगम, हेतु और मिलि होइ ।
अति सकुचब ते कहत हैं, लाज सबै कवि लोइ ॥ ५६ ॥

सजनी निरख अचरज एक।
जलहरिहितरिपुसेन पराजित ह्वैगै व्रज तज टेक॥
सो उर राख साज सजि आई सभय पाइ बिन नाथ।
व्याकुल कै वृषभानुनन्दनी आप भई रुच साथ॥
हरष हरष करष न चित चाहत तिहि ते का प्रतिनीक।
सूरज प्रभुहि सुनावन हारो है को कहु चित ठीक॥५७॥

उक्ति सखी की सखी सों। कि हे सखि! एक अचरज देख जल नाम बा हरि वानर ताको हित पर्वत शत्रु इन्द्र ताकी जो सेना है सो कृष्ण ते हारके गई सो फिर समुझके बिन नन्दनन्दन आई है वृषभानुकुमारि को व्याकुल कीनो आप खुशी भई है अब हर्ष के चित खैंचे चाहत याते नीक न ह्वैहै यह कृष्ण को कोऊ सुनावै या पद में उद्वेगसंचारी प्रतिनीक अलंकार है लक्षण--

दो०—चित में भ्रम जहँ कहत हैं, सो उद्वेग कहाइ।
कोपपक्ष प्रतिपक्ष पै, प्रत्तिनीक को भाइ॥५७॥

वाम वाम जिन सजनी कीनी। तिनको ऊधो कहा बात कड़ हम हित योग युगति चितचीनी॥ पुष्पनपतिवाहनभख हम सँग खात न तनक लाज गति भीनी। वृक्ष भाग घर फिरे सबन के कवन आप तब समझ न भीनी॥ भणित अर्थभूषण उनहीं हित कीन भरत चित चाह नवीनी। सूर कहौ जो तुम्हैं रुचै हम जीवन जो न मीन गति हीनी॥५८॥

उक्ति गोपिन की ऊधो प्रति। कि जिन वाम टेढ़ी अर्थ कूबरी जिन सजनी करी है तिन जो हमको योग की सीख दई तो का बड़बात कही अर्थ उनकी बुद्धि चंचल है पुष्पनायक सुमननायक गणेश वाहन मूषक तिनको भख कपरा दुही हम संग पहिरत खात तनक लाज न करी वृक्षभाग कन्धपै हमको चढ़ायो भणित काव्यार्थ पति अलंकार उनहीं के हित भरत भे कियो है जो हम जीव जल मीन की गति ना करी अर्थ वियोग होत न मरी यामें कृष्ण-पक्ष ते चपलतासंचारी काव्यार्थ पति अलंकार लक्षण—

दो०—जहँ कीनो तिहि वह कहा, काव्य अर्थ पति होइ।
बहुत उताइल काज ते, कहत चपलता सोइ॥ ५८॥

देखि री वृषभानु जाकी दशा आज अनूप।
बनत नाहीं कहत देखत सरस विरहसरूप॥
नीकनन ते दिवस डारत परत घन पै हेर।
वेद धरत न शून्य गुण के नखत टारन फेर॥
शक्रवाहनसी सुखानी विना जीवन देख।
चन्द्रभाग पठाइ दीन्हो प्राणपति सँग लेख॥
पंचग्रह राखन विचार्यो वेह सारँग एक।
भणित चिह्न विचार अभरण राखसूरजटेक॥५९॥

उक्ति सखी की सखी से। कि हे सखि! वृषभानुजा की दशा देखि जो विरह में स्वरूप कीनो है सो देखत बनत कहो नाहीं जात नीकनन नयननते दिवस नाम वार डारत है सो घन कहे पयोधरनपै परत है वेद श्रुति श्रवणनमें शून्य आकाश गुण शब्द नाहीं सुनत नखत हस्त हाथ नाहीं फेरत शुक्र वाहन दादुर सी

सुखाई है विना जीव जल अरु जीवन पति विना चन्द्र भाग मन पठाइ द्यो पीय के संग पंचग्रह जीव राखनहारो पपीहा है काहे कि पी आउ कहत है भणित काव्य चिह्नलिंग काव्यलिंग आभरण अलंकार कि यामें ओजड़ता संचारी कवि यामें करत लक्षण—

दो०—काव्यलिंग सामर्थ्यता, जह दृढ़ करत प्रवीन।
सब कामन ते शून्य हो, सो जड़ता मति पीन ॥ ५९ ॥

आवत सुनो नन्दकिशोर ।
आजु मेरी गली होके करत वंशी शोर ॥
लगे हूलन मेघमंगल भरे बिथ कस जोर ।
कटन चाहत राख रोके कामकलबल छोर ॥
अन्त ते करहीन फरकत फणिग बाहीं ओर ।
नीति बिन बलबाण सीखत नीक जानन जोर ॥
काज आपन समुझ कै किन करे आप अथोर ।
वाच्यअन्तरआदि जपकर सूर भूषण तोर ॥ ६० ॥

उक्ति नायिका की । आज नन्दकिशोर आवत में आपन गली सुनो है वंशी को शोर करत तब ते मेघ पयोधर हुलसन लगे हैं बिथक पवन नाम बात बात करवै चाहत है सो काम रोक राखत है फणिग नाम भुजग अन्त हीन ते भुज बांहीं फरकत है नीति बिन नयन बल बाण भुज बाण सीखत है अपनो भलो समुझ काहे न करो सब अथोर बहुत वाच्य अन्तर अर्थान्तर जप आदि न्यास अर्थान्तर न्यास भूषण अलंकार यामें है हर्ष संचारी लक्षण—

दो०—करि विशेष सामान्य में, है अर्थान्तरन्यास।
चित में आनँद की उमँग, कहत हरष परकास ॥ ६० ॥

शिवभखग्रहसारँग सी जोति। कहत सदा याही विधि प्रतिदिन पियमन सकुच न होति॥ दधिसुत में दधितिया दिपत सी मृदुमुख ते मुसक्यात। सुन्दर आखर नग पै नग पतिघन कहि लज तन गात॥ सुन सुन प्रौढ़ उक्ति अस उन की मन की कही न जात। सूरश्याम को को समुझावत तो बिन ललिता बात॥ ६१ ॥

उक्ति नायिका की। शिव भख कनक सारँग दीप सी तेरे तनु की ज्योति है या विधि पिय कहत सकुचति नाहीं है दधिसुत चन्द्र में दधितिया गंगाजल की सी दीपति मेरी मुसक्यान बतावति है सुन्दर आखर सुवर्णगिरि पै नगपति महादेव से कुच कहत है ऐसी प्रौढ़ उक्ति उनकी सुनि के मो पर अपनें मन की नाहीं कही जात सो हे ललिता! तो बिन या बात उनको को समुझावै जासे ऐसी अनुचित न कहै यामें प्रौढोक्ति अलंकार गर्वसंचारी है लक्षण—

दो०—करि अहेतु को हेतु जहँ, तहँ प्रौढोक्ति प्रमान।
है सब ते सब विधि सरस, यहै गर्व की खान॥ ६१ ॥

फलसूचक का कहिये जाये।
जो यह बिपति परी तनु ऊपर सो का कहि समुझाये॥
दधिसुतरिपुभखसुतस्वभाव पै इत उन मोहिं बुलाई।

गिरिजापतिभख बीच कौन सो हैगो मोको माई ॥
भूसुतशत्रुथान किन हेरत लखत मोहिं मन मारे ।
मुनिरिपुपुत्रबन्धु किन वैरिन मोको देत सवारे ॥
तीन शून्य इक करी होइ के तितनै मुख मुख पावों।
नन्दनँदन की कीरति सूरज तो सम्भावन गावों ॥६२॥

उक्ति नायिका की सखी प्रति। कि फलसूचक गृह गृह नाम घर का कहिके जाइये जो यह बिपति हम पै परी है सो का काहि को समुझाये दधिसुत चन्द्र रिपु राहु भख सूर्य पुत्र कर्ण स्वभाव सखी ताके हाथ मोको बुलवाई गिरिजापति शिव भख विष बीच में मोको को होगयो भूसुत केवाँच शत्रु वानर गेह वृक्ष तो हेर मोको मन मारे कहा देखत है मुनि रिपु काम पुत्र अनिरुद्ध त्रिया ऊषा मोको दिखाउ तीन शून्य ते एक करे हज़ार होत हैं करी नाम हाथी ताको नाम नाग जो हज़ार शेष होहिं अरु एक हज़ार मुख पावों तो नन्दनन्दन की कीर्ति गावों यामें सम्भावना अलंकार विषादसंचारी लक्षण—

दो०—ज्यों ज्यों त्यों त्यों होहि तो, सम्भावन चित जान ।
होइ मलिन मन दुःख ते, यह विषाद चित आन ॥ ६२ ॥

सोवत कुंज भवन में दोउ ।
श्रीवृषभानुकुमारि लाड़िली नन्दनँदन व्रजभूषण सोऊ॥
हाथनपितुसुताहितमुनिषट धर एक एक ऊपर सुच सोउ ।
अन्तरिक्षसारँगसुत उनके उन उनरँग बिन नीक न होउ॥
यहसुखमधुर सुनत श्रवणनमें रहत शेष आनँद भरजोउ ।
सूरदासप्रभुकीयहलीला।मिथ्याकरतब्रह्मसुखधोउ ॥ ६३ ॥

उक्ति सखी की सखी प्रति। कि हे सखि! आज कुंजभवन में दोऊ सोवत हैं वृषभानुकुमारी कृष्ण हाथन कहे करन ताको पिता सूर्य सुत सुकण्ठ हित ऋक्ष कही नक्षत्र षटसात तेरहैं हस्त हाथ राधा को कृष्ण पै कृष्ण को राधा पै कृष्ण के सारँग सुत काजर अन्तरिक्ष अधरन में है उन राधा ने उन रँग श्यामता ते हीन नीकन अक्षन को कियो है यह सुख मधुर श्रवण में सुनत शेष आनन्द में भर रहत है यह लीला ब्रह्म सुख कै धोवत यामें मिथ्यादि बसत अलंकार निद्रा संचारी है—

दो०—मिथ्यादि बसत झूठ ही, कहै जु झूठी रीति।
इन्द्री काम न करि सकै, सो निद्रा की प्रीति ॥ ६३ ॥

मेरी कही न मानत राधे।
ये अपनो मत समुझत नाहीं कुमत कहा प्रण नाधे॥
दधिसुतसुतसुत के हितकारी सजि सजि सेज बिछावै।
तापर पौढ़ चहत है आपन भल बल को समुझावै॥
ग्रह नक्षत्र अरु वेद अर्ध करि खात हरष मन बाढ़ो।
ताते चहत अमरपन तनको समुझिसमुझि चितकाढ़ो॥
जगप्रिय घटे देखि निज नयनन आपुन रंग बनावै।
सूर ललित सबबातसमुझिको को कहिकहा रिझावै ॥६४॥

उक्ति सखी की। कि तू मेरी कही नाहीं मानत कुमत ने जो प्रण नाधे सो नाहीं समुझत दधिसुत कमल ताको सुत ब्रह्मा ताको सुत वशिष्ठ तिन हित अग्नि ताकी सेज बिछाइके अरु तापै पौढ़ अपनो भलो चाहत है सो तोको को समुझावै ग्रह ९ नक्षत्र २७ वेद ४ अर्ध ते २० बिस खात है अरु अपने तनु की अमरता

चाहत यह समुझके काढ़ी है जग प्रिय जीवन जल सो तो घट गयो आप आंखिन ते देखत तापर आपन रंग सेतु पुल बँधवावत है ये बातैं जो तू ललित समुझत तो है बल! तो तोको का सिखवै या पद में ललित अलंकार अमर्षसंचारी है ताको लक्षण—

दो०—ललित कहै कछु चाहिये, ताही को प्रतिबिम्ब ।
अमरष सो कहिये जहां, क्रोध अधिक ना दम्ब ॥ ६४ ॥

हौं जल गई यमुना लैन ।
मदनरिस के आदि तोलों मिली गुणगणऐन ॥
कहन लागी कमल पितुपति भगन की सब बात ।
पलक नेक उघार देखत आयो सुन्दर गात ॥
सुरन सारँग के सम्हारत सरस सारँगनैन ।
सूरदास सदा प्रहर्षन सुरुच सारँगबैन ॥ ६५ ॥

उक्ति नायिका की सखी प्रति । हौं आज यमुनाजल लेन गई रही मदन समर रिस खीस आदि ते सखी तब लै मिली कहन लगी कमल पितु जल नाम कपाति भगिनी ननँद आदि वर्ण ते कान्ह की बात करन लगी सखी मिति प्रथम प्रहर्षण कान्ह की बात दूती पलक उघारो तो सामुहें आवत में तृतीय सारँग राग के सुर उच्चारण लगो अथवा सारँग सूर्य नाम मित्रराग ललित आदि वर्ण ते मिल हम तुम मिले सारँग मृगनयन हर्ष भरो सारँग बैन हे पिकबैन! जल्दी मिली यामें औत्सुक्यसंचारी लक्षण—

दो०—तीन प्रहर्षण यतन ते, वांछित फल जहँ होहि ।
वांछित हू ते अधिक फल, दूजे कहिये सोहि ॥
श्रम बिन कारज सिद्धि सो, तीजो कहि कबि लोइ ।
डोल सकेना सहि सुतो, औतसुक्य सुख भोइ ॥ ६५ ॥

हौं अलि कितने यतन विचारों।
वह मूरति वाके उर अन्तर बसी कौन विधि टारों॥
जब हौं कहत लाज की बातैं तब अति व्याकुल होई।
चन्द्र चौथ निकसत सो मोको जान परत बलसोई॥
सुरभीतमजासुतपितु नाहीं चलत हारवित हेरों।
अपस्मार जहँ सूर समारत बढ़ विषाद उर पेरों॥६६॥

उक्ति सखी की सखी प्रति। कि हे सखि! वाको मैं कैसे समुझावों कौन यत्न विचारों वाके उर में जो कान्ह की मूर्ति बसी सो कैसे टारों जब लाज की बात हौं कहत तब बहुत व्याकुल होत चन्द्र ते ऊँचो चौथे बृहस्पति नाम जीव सो निकसत जान परत है सुरभी गौतम मिल गौतम भयो ताकी जाया अंजनी सुत केशरी किशोर पितु पवन वाके मुख ते श्वास नाहीं चलत अपस्माररोग ते यह विषाद अलंकार है अपस्मारसंचारी विषाद अलंकार लक्षण—

दो०—अपसमार जो मूरछा, कहत सबै कवि लोइ।
सो विषाद चित चाह ते, उलटो जो कछु होइ॥६६॥

सोवत थी मैं सजनी आज।
तब लगि सुपन एक जहँ देखो कहत अचम्भो साज॥
शिवभूषणरिपुभख सुतवैरी पितुअरि केर सुभाव।
आइ गई जहँ सुत सुत बैठे हँसत बढ़ाये चाव॥
हौं चाह्यो तासों सब सीख बरसबसकरिबो कान।
जाग उठी सुत सूरश्याम सँग काऊला सबखान॥६७॥

उक्ति सखी से नायिका की। कि हे सखी! मैं आज सोवत रही तहां एक अचम्भे को स्वप्न मैं देखो शिवभूषण चन्द्र रिपु राहु भख सूर्य सुत कर्ण रिपु अर्जुन पितु इन्द्र अरि बलि स्वभाव सखी एक सखी आई जहां सुत नन्दनन्दन बैठे रहे ताते मैं सब रस की बात सीखे चाही तब लग जाग उठी इहां स्वप्नबोध संचारी उल्लास अलकार है लक्षण—

दो०—सपनो कहिये सोइबो, बोध जागबो होइ।
गुण अवगुण जहँ और को, है उल्लास सजोइ॥ ६७॥

ऊधो तब ते अब अति नीको।
लागत हमैं श्यामसुन्दर बिन नाहीं व्रज अति फीको॥
वाइसशब्दअजा की मिलवन कीन्ह्यो काम अनूप।
सब दिन राखत नीकन आगे सुन्दर श्यामस्वरूप॥
दोइ जनम को राजा वैरी का विधि आप बनावै।
करत अनुज्ञाभूषण मोको सूरश्याम चित आवै॥ ६८॥

उक्ति गोपी की ऊधो प्रति। कि हे ऊधो! तब ते अब बहुत नीको है हमको श्यामसुन्दर बिन व्रज फीको नहीं लागत वा इस शब्द का अजा को शब्द में कामनो बहुत नीक काम कियो है कि नीकन अच्छन के पास उनको राखत हैं दो जन्म राजा चन्द्र का विधि बनावत है सूरश्याम बिनु अनुज्ञा अलंकार होत है उग्रतासंचारी लक्षण—

दो०—होहि अनुज्ञा दोष में, जो लीजै गुणमान।
जगनन्दन सामर्थ्य ते, कहै उग्रता जान॥ ६८॥

बालम कौन सीखी बान ।
सुतन मोको सकुच आवत सुनत उनकी ठान ॥
देख भाजन होत कबहूं कहूं दीपसमान ।
शम्भुसुतभूषण बतावत बदन आपु प्रमान ॥
रंग बद के सदृश सब दिन करत नीकन जान ।
अन्तरिक्षनसिन्धुसुत से कहत का अनुमान ॥
राहुभख के बन्धु से तव हैं कपोलसुभान ।
कहत साँरगबैन सुलगत हृदय सुन सुन तान ॥
रहत है जहँ जीव इतनी समझ इनको आन ।
सूर प्रभु की बांसुरी में लेश भूषण कान ॥ ६६ ॥

उक्ति सखी की नायिका प्रति । कि हे सखि ! बालम ने कौन बानि सीखी है कै हे सुतन मोको सकुच आवत है उनकी बांकी ठान ते देख भाजन नाम घट दीप समान लोकोक्ति घट बढ़ घट बढ़ जो शम्भुसुत गणेश भूषण शशी होत ता समान मेरो बदन बतावत है रंग बद कुरंग मृग के सदृश बतावत है अन्तरिक्ष अधर सिन्धुसुत सुधा से कहत हैं राहुभख चन्द्र बन्धु शंख से कपोल कहत हैं साँरग कोकिल से बचन सुन मेरो हृदय सुलगत है अरु जीवत हौं यह जानके इतनी समुझ तो आई सूर प्रभु की बांसुरी में लेश अलंकार उग्रतासंचारी ताको लक्षण—

दो०—गुणहु दोष है दोष गुण, लेश कहै कविराइ ।
जगनन्दिन सामर्थ्य चित, सो उग्रता गनाइ ॥ ६६ ॥

कत मो सुमन सों लपटात ।
समझ मधुकर परत नाहीं मोहिं तुम्हरी बात ॥

हेम जोही है न जी सँग रहे दिनपस्पात।
कुमुदिनी सँग जाहु करके केशरी को गात॥
सेवती सन्ताप दाता तुम्हीं सब दिन होति।
केतकी के अंग संगी रंग बदलत जोति॥
हौं भई कृश हाइ समुझत बिरह पीर पहार।
सूर के प्रभु करत मुद्रा को न विविध विचार॥७०॥

उक्ति नायिका की नायक प्रति। कि हे भ्रमर! मो सुमन मोगरा से का लपटात हौ अर्थ भ्रमर में मोगरा नायक में मेरो कण्ठ हेम कहे सोना जुही है नाहीं है नायक सो जो तुम हिय में राखि सो मैं नाहीं हैं जो संग दिन बीते रात्रि में रहे कुमुदिनी कमोदिन संग जाहु नायक जाको कुमुद चढ़ो ताके संग जाहु नायक ता केशरी को रंग करो सेवती तुमको सन्ताप देनहारी है नायक पक्ष सेवाकर निहारती स्वकीया तुम्हैं तापदाता है केतकी के अंग संगी हौ नायक केतकिन के तुम अंग संग रहे ताते तुम्हारि ज्योति बदलत है कृश होइ गई है है हाइ समुझके विरह पीर पहार देखके सो हे सूर के प्रभु! कौन मुद्रा कर रहे हैं देखो या पद में कृशता ते रोगसंचारी लक्षण तन गद व्याधि कहाई अरु रंग बदले ते जान गई ताते ज्ञान अरु मरण नाहीं काहू कवि ने वर्णयों कुमुदिनी दिन में मुद्रित होत याही ते परकीया की मरणचेष्टा जताई मुद्रा अलंकार लक्षण—

दो०—मुद्रा प्रस्तुत पद बिषे, औरै अर्थ प्रकाश॥ ७०॥

भई है कहा प्रथम सी बाल।
द्वितिय सूर मिल सुता तृती हित चाहत त्योंहि गुपाल॥

चौथ शृँगार पंचकर षट बुधकरी षठ्ईं चाल ।
सतईं तोल आठ सो मारो फिरत लाल बेहाल ॥
नव तो छोड़ अवर नहिं ताकत दश जिन राखो साल ।
एकादश लै मिलौ वेग ही जानो नवल रसाल ॥
द्वादश सो तलफत पिय प्यारो सुरुच सम्हारो लाल ।
सूरश्याम रतनावलि पहिरो हो मण्डनाहित हाल ॥७१॥

मण्डन सखी की उक्ति नायिका प्रति । प्रथम राशि मेष सी अचल कहा भई हौ द्वितीय वृष सूर भानु ते वृषभानु सुता तृतीय मिलन हेतु तेहिं गुपाल चाहत हैं चौथी करक करिके शृंगार पंचमें सिंह हे सिंह कटकरी है षष्ठईं कन्या की चाल तूने सप्तम तुला तराजू सो तोल अष्टम बिछीक बीछी सों मारो लाल बेहाल फिरत है नव धन हे धन ! तोको छोड़ और को नाहीं चाहत दशयों मकर जहां मानरूपी साल जन राखो एकादश जो कुम्भ है कुच कुम्भ लैके मिलो नायक नवीन रसाल है द्वादश मीन सो तलफत है प्यारो प्रीतम सो सुरुचि करिके लाल को सम्हारो श्याम रत्नावली पहिरो है मण्डन करत है हाल तुम्हारी हित या पद में शृंगार करो चाहत ताते मण्डन सखी लक्षण । मण्डन सब शृंगार मण्डै । शिक्षा देत ताते शिक्षा करन उपालम्भ भी होइ सकत है पर हास मिलै याते रत्नावली अलंकार लक्षण—

दो०—रत्नावलि प्रस्तुति अरथ, क्रम ते औरै नाम ॥ ७१ ॥

ाढ़ी जलजासुत कर लीन्हे ।
ाधिसुतसुतवाहनाहित सजनी भख विचार चित दीन्हे ॥
ो जाने क्यहि कारण प्यारी सो लखि तुरत उड़ानो ।

चपलाओ वराहरस आखिर आदि देख झपटानो ॥
तद्गुण देख सबै मिल सजनी मन ही मन मुसकानी ।
सूरश्याम को लगीं बुलावन आपस आपन मानी ॥७२॥

उक्ति अज्ञातयौवना की । कि हे सखि ! आज मैं जलजा सीप सुत मुक्ता कर में लीन्हे ठाढ़ी रही दधिसुत कमल ताको सुत ब्रह्मा ताको वाहन हंस ताको भख विचारके को जानै कौन कारण ते सो देखि उड़ि गयो चपला वाराह कोल रसआदि वर्ण ते चकोर देखत हू झपटो अर्थात् हाथ के रंग ते मोती लाल है गये तामें हंस अंगार जानि चलो गयो चकोर चुनबे को आयो यह तद्गुण अलंकार देखि हे सजनी ! सब सखी मुसक्यानी अरु सूरश्याम को बुलावन लगीं मेरी कही न मानी इहां तद्गुण अलंकार हासरस है लक्षण—

दो०—तद्गुण तज गुण आपनो, संगति को गुण लेइ ।
हास व्यंग्य ते हासरस, कहत सबै मति सेइ ॥७२॥

कूदो कालीदह में कान ।
रोवत चली यशोदा मैया सुनन ग्वाल मुख हान ॥
छूटे दिन दुवार को वैरी लटकत सो न सम्हारै ।
सूरजसुतरिपुसुत जे आदिक गिरत कौन तन धारै ॥
अंग अंग विरहानल सँग ते महाश्याम सो भासै ।
वानरमित्रवेदसुत बातैं सुनत रंग परगासै ॥
समुझावत सब पाछिल बातैं तनक न मन में आवै ।
सूर श्यामसुत सुरत सम्हारत कालीदह को धावै ॥७३॥

उक्ति सखी की सखी प्रति। कि हे सखि ! आज कान्ह कालीदह में गिरो है सो सुनिकै यशोदा रोवत चली छूटे हैं दिन नाम बार दरवाज़े के बैरी पट लटकत सम्हार नाहीं सकत सूर्यसुत सुकण्ठ बैरी बाली सुत अंगद नाम भूषण जे छूटे ते को सम्हारै अंग अंग विरह की अग्नि ते कारो होत है वानर मित्र ऋक्ष नाम नक्षत्र चौथो रोहिणी ताके पुत्र बलभद्र तिनकी बात सुनिकै फेरि प्रकाशत है यामें पूर्वरूप पहिलो अरु पाछिली बात सब बतावत हैं कि इन गिरिधारी अग्नि पान करे सो तिनको कछू न होइगो सो सुनि नाहीं मानत कालीदह में गिरो चाहति है यामें दूसरो पूर्वरूप करुणारस लक्षण—

दो०—पूर्वरूप लै संग गुण, तजि फिरि अपनो लेत।
दूजो जो गुण ना मिटत, किये मिटन को हेत॥
दुखी देखिये मित्र को, मृतक शापयुत बन्ध॥ ७३॥

आज रण कोप्यो भीमकुमार।
कहत सबै समुझाइ सुनो सुत धरम आदि चित चार॥
आदि रसाल यज्ञफल के सुत जे बांधे अभिमान।
सूरजसुत के लोक पठावत ते सब करत नहान॥
दशनराज जो महारथी सो आवत अग्र अनूप।
सहितसेनसुतसंग सिधारत सो सब सजे स्वरूप॥
तन्तुपुत्र की है का गनती जो सम्मुख भट आवै।
सुमनलोक लों अब या बेला भँवर संग उड़ जावै॥
बैठे यदपि युधिष्ठिर सामे सुनत सिखाई बात।
भयो अतद्गुणसूर सरस बढ़ बली बीर विख्यात॥ ७४॥

उक्ति संजय की धृतराष्ट्र प्रति । कि आज भीमकुमार घटोत्कच सो कोपो है सबको सुनाइ कहत है कि धर्मपुत्र आदि सब शूर सुनो रसाल नाम अम्ब यज्ञफल धर्म आदि वर्ण ते अन्ध के जे पुत्र हैं अभिमान से बँधे तिनको सूर्यसुत यम के लोक पठावत हैं। दशन नाम द्विजराज जे द्रोण हैं महारथी अरु आगे आवत हैं तिनको पुत्र सैन्य समेत तेई तहां जैहैं तन्तु कहै सूतपुत्र जो कर्ण है ताकी का गिनती है जो सम्मुख हमारे आइ है तो सुमन देवलोक को याही बेला में भँवर शिलीमुख नाम बाण संग यद्यपि युधिष्ठिर सत्यवक्ता के सामुहें है अरु सिखाई बात सुनत तदपि अतद्गुण अलंकार होइ रहो है रौद्ररस लक्षण—

दो०—संगति गुण लागै नहीं, तहां अतद्गुण होइ ।
थायी क्रोध विचार तो, रौद्र कहैं कवि लोइ ॥ ७४ ॥

देखत सजो पाण्डुकुमार ।
भयो सम्मुख पितामहि गहि धनुष औ शरधार ॥
लगे फरकन अन्तरिक्ष अनूप नीतन रंग ।
ऋक्ष फरकत ते रहों तक शत्रु को सब संग ॥
वित्त तनत कुबेर को पुनि भान थान समान ।
तदपि सेनापति निहारत बढ़ो धरम प्रमान ॥
चलो रथ लै जितै आवत भीम आदिक शूर ।
सूर प्रभु को देख अद्भुत भयो हे रणरूर ॥ ७५ ॥

उक्ति संजय की । आज पाण्डुकुमार सजो देखिकै पितामह भीष्म सम्मुख भयो धनुष बाण लैके अन्तरिक्ष अधर फरकन लगे

नीतननयनन में अनूप रंग आयो तेरहों ऋक्ष हस्त सो फरकन लगो शत्रु की सैन्य तक के कुबेर को वित्त धनु तनन लगो भानु नाम सारँग सारँग नाम भँवर भँवर नाम शिलीमुख बाण को थान तनन लागो तदपि सैन्यपति जो धृष्टद्युम्न है ताके संग जो शिखण्डी ताको देखि धर्म सम्हारो जित भीम आदिक शूर आवन ते तित चलो सूर के प्रभु कृष्ण को देख और अद्भुत भयो इहां वीररस ॥ ७५ ॥

सुन सुत नन्दनँदन की रीत।
भूपति कंस परो धरणीतल छांड़ आपनी नीत ॥
द्वारधार नीतन ते डारत हारत सब सुख हेर।
बार बार झांकत जल अपनो सोवत झझकत फेर ॥
रविपंचमपल होत नहीं थिर थकित भयो सब गात।
धवल वसन मिल रहे अंग में सूर न जान्यो जात ॥७६॥

उक्ति पुरवासिन की। कि नन्दनन्दन की रीति सुनकर कंस राजा अपनी क्रूरता छोड़ धरणी पर परो है द्वार नाम बार अरु बार नाम जल की धार नीतन नाम नयनन ते छांड़त है अपने सुख हेर हारत है बार बार जल कहे बार बार कहे दुवार अपनो झांकत है अरु सोवत में झझकत है रवि ते पंचम बृहस्पति नाम जीव थिर नाहीं होत गात थकित भयो है जामें सफ़ेद ह्वै गयो है कपड़ा पहिरे सो नाहीं जानो जात या पद में मीलित अलंकार भयानक रस है लक्षण—

दो०—मीलित जहँ सादृश्य ते, भेद न जानो जात।
होत भयानक व्यंग्य भय, ते सब जग विख्यात ॥ ७६ ॥

जोर उतपल आदि उर ते निकसि आयो कान ।
बीच निशि को आदि अंगन लगो लेप समान ॥
वेदपाठी दृगन सोई रीत के बहु छीट ।
रहे बिच बिच समझ मोको परे नाहीं डीट ॥
बांसुरी ते जान मोको परो ना सुत सोइ ।
सूर उनमीलत निहारो कहै का मति भोइ ॥ ७७ ॥

उक्ति सखी की । कि आज जोर नाम बल उतपल कमल आदि वर्ण ते बक भयो ताके उर ते कान्ह निकसि आयो बीच मध्य निशि जामिनी आदि ते मज्जा भयो सो अंग में लगो है लेप सो वेदपाठी नाम श्रोत्री दृग नाम नयन सोई रीति नाम प्रथम की ते श्रोणु रुधिर के छीटा बहुत लगे हैं ताते मोको नाहीं समुझि परे वे डीठ बांसुरी के बजाये जान पाये कि वाके पुत्र नाहीं है या पद में बीभत्स रस उन्मीलित अलंकार है लक्षण—

दो०—ग्लानि व्यंग्य ते जानिये, है बीभत्स स्वरूप ।
उन्मीलित सादृश्य ते, भेद फुरै कवि भूप ॥ ७७ ॥

आज नँदनन्दन सजनी देख ।
कीनो दधिसुतसुत से सजनी सुन्दर श्याम सुवेख ॥
सारँग पलट पलट छव दोई लैगो आप चुराइ ।
सोई सबके घर घर आये जस के तस सुख पाइ ॥
को यह कौतुक करे और सुन समुझ आप निज बात ।
सूरदास सामान्य करन को येही बलित लखात ॥७८॥

उक्ति सखी की । कि हे सखि ! आज नन्दनन्दन को चरित

देख हे सजनी ! दधिसुत कमल सुत ब्रह्मा सो जो कीनो है सारँग पक्षी लवा ताको पलटे ते वाल अरु छव पलटे ते बछ अर्थ वाल बछ दोऊ चुराइ लै गयो सो घर घर जस के तस आये यह तमाशो और को कर सकत या बात सामान्य करने को यही है या पद में सामान्य अलंकार अद्भुत रस है लक्षण--

दो०--सामान्य जो सादृश्य ते, भेद फुरै तब मान।
अचरज व्यंग्य प्रधान ते, अद्भुत रस पहिंचान ॥ ७८ ॥

यशुमति आज बैठके आंगन अपनो लाल खिलावैहो।
चूमचूम मुख चपल चित्त कर आनन आप मिलावैहो ॥
सारँग सुत प्रीतम सुत रिपु रिपु रिपु रिपु माल बनावै हो।
पिण्ड प्रधान भूमिपति सुतगुरु भाषित सरस सुनावैहो ॥
भूषणपति भख जापति हित वाहन हित विचार चित गावैहो।
धनहर हित रिपु सुत सुख पूरत नयनन मध्य लगावैहो ॥
धोरी धूमर काजरकारी कहि कहि नाम बुलावै हो।
लालन कर उतपलके कारन सांझ समय चित चावैहो ॥
सूरज करत विशेष अलंकृत सब सुख सान तुलावैहो ७९॥

उक्ति सखी की सखी प्रति--यशुमति आज अपने लाल को खिलावत है मुख चूमत है चित्त चपल करके मुख मिलावत है सारँग समुद्र सुत कमल प्रीतम सूर्य सुत सुकण्ठ रिपु बाली रिपु राम रिपु दशानन रिपु देव नाम सुमन की माल बनावत है। पिण्ड प्रधानभूमि गया पति विष्णु सुत लवकुश गुरु बाल्मीकि तिनकी भाषित रामकथा सुनावत है भूषण मुद्रा पति अगस्त्य भख समुद्र सुता कुमुदिनि पति चन्द्र वाहन मृग हित राग गावत है धनहर

चोर हित अन्धकार रिपु दीप सुत काजर नयनन में लगावत है धोरी धूमर काजर ये गौ के नाम हैं तिनको बुलावत है पुत्र के कर अरु कमल ये जुदे करिबे को सांझ चाहै है अर्थ वे मुद्रित हो जैहैं या पद में सूर ने विशेष अलंकार पुत्र रति भावध्वनि करी है लक्षण—

दो०—यहै विशेष विशेष जो, समुझै समता पाइ ।
पुत्र बिषे रति होइ तो, भावध्वनि ठहराइ ॥ ७९ ॥

आज गिरिपूजन ग्वाल चले ।
लै लै सिन्धु शम्भुसुत अतिप्रिय पावन माट भरे ॥
नगर नीक औ काम बीच ते गोग्रह अन्त भरे ।
निकट बास परवत दाड़िमयुत सोई रीति धरे ॥
गावत नाचत बाजत बाजन याचत पुण्य प्रभाव ।
नन्द आदि सँग अतिसुख पावत भावत जो जिहि लाव ॥
गूढ़ि उक्ति अस कहत गुवाली मोहिं गेह रखवारी ।
राख गये सुन सूरश्याम मन बिहँसि रहे गिरिधारी ॥ ८० ॥

उक्ति कवि की । कि आज गिरि जो गोवर्धन है ताके पूजन हेतु ग्वाल चले हैं लै लैके सिन्धु नाम दधि शम्भु सुत को प्रिय दूब अथवा मोदक माटन में भरि के नगर नाम शहर नीक नाम सरस काम नाम मदन मध्य ते निकारे ते हरद भई गोग्रह नाम थार अन्त नाम मरण मध्य ते थार भरे हरद ते थार भरे निकट बास परोसी पर्वत नाम अचल दाड़िम नाम अनार सोई रीति मध्य की रोचना लै लैकर गावत हैं नाचत हैं बाजन बजावत हैं अपने पुण्य के प्रभाव याचत हैं नन्दादिक संग बहुत सुख पावत हैं जिहि को

लाभ है सो यह देख कृष्ण बूझत हे ग्वालिनि! तू काहे न गई ताने गूढ़ोत्तर ग्वालिनि दयो कि मोहिं अकेली घर राखन हेतु छांड़ि गये सो सुनि विहारी रहिगे या पद में गूढ़ोत्तर अलंकार देवरत भावध्वनि है लक्षण—

दो०—गूढ़ोत्तर कछु भाव ते, उत्तर दीनो होइ।
भावध्वनि सो देवरत, देव बिषे रति भोइ॥ ८०॥

विप्रजु पावन पुराय हमारे।
जो यजमान जानिकै मो कहँ आपु इहां पग धारे॥
एक बार जो प्रथम सुनाई लग्न कुराडली सोई।
पुन ही मोहिं सुनावहु सुनकर कहन लगो सुख भोई॥
संवत मास षष्ठ वसु तिथि है रविते चौथो बार।
पुरायपक्ष औ वेद नखत है हर्षण योग उदार॥
दुती लग्न में है शिवभूषण सो तनु को सुखकारी।
केहरि वेदराशि त्रयमूरति शेषभार सब लै है॥
बाण शशीसुत है पुत्री के मदन बहुत उपजै है।
शास्त्र शुक्र तुल के रविसुत ते वैरी हरता योग॥
मुनि वसु तियवश केर भूमिसुत भागभवन में भोग।
लाभ थान पंचमो कामध्वज ग्रहनिधि गृह में आई॥
मान लेहु मन अपनै भू सब हरो भार इन भाई।
बाणवर्ष में कब देखैगो कही तिहारी पूरी॥
सूरदास दोइ परे पांइ तर भूषण चित्र समूरी॥ ८१॥

उक्ति कवि की। हे विप्रजू! हमारे बड़े पुरय हैं जो यजमान

जान आपु इहां आये एक बार जो लग्न कुण्डली मोको तुम सुनाई रही सो फेर सुनावहु सो सुनि ऋषि कहन लगे संवत् ते छठयें मास भादौं आठैं तिथि है रवि ते चौथो बुधवार पुण्यपक्ष कृष्णपक्ष वेद कहे चौथो नक्षत्र है रोहिणी हर्षण योग उदार है द्विती वृष को शिवभूषण चन्द है सो तनु को सुखकर्ता है केहरि कहे सिंहराशि के सूर्य हैं शेषभार भूमि जीत लेहै बाण नाम पंचम पुत्री कन्या के शशीसुत बुध हैं ताते मदन को नाम आत्मभूत नाम पुत्र बहुत उपजाइ हैं शास्त्र कहे छठयें तोलत नाम तुला के रविसुत शनि शुक्र यह योग शत्रुहन है मुनि कहे सातयें वसु नाम आठवें ग्रह राहु ताते त्रियावश है हैं अरु भागभवन में भूमिसुत मंगल हैं ताते ऐश्वर्य भोग करि हैं लाभस्थान में पंचमे बृहस्पति सो कामध्वज मीन के हैं सो ग्रहनिधि नवोनिधि घर आइ हैं सो यह जानो कि इन भूमिभार हरो बाण को नवरस में है है यह प्रश्न नन्द की सो सुनि पण्डित कही तिहारी कही सत्य है कि पांचईं वर्ष में यह सुनि नन्द यशोदा पाँय परे या पद में चित्र अलंकार ऋषिरत भावध्वनि है लक्षण—

दो०—चित्रप्रश्न उत्तर दुवो, एक प्रश्न में होइ ।
ऋषिरत ते रत भावध्वनि, कहत सबै कवि लोइ ॥८१॥

आवत थीं वृषभानुनन्दनी आजु सखी के संग ।
ग्रहअष्टम में मिल्यो नन्दसुत अंग अनंग उमंग ॥
करी छुवाइ दयो माथे उन इन लखि सो पुनि कीनो ।
कुन्तीसुतापितु सम्मुख धर कर लाय हिये में लीनो ॥
सूक्षम ते दुइ भाव एक कर हारै बाल अधीर ।
सूरश्याम देखत अनदेखत बनत न नेको बीर ॥ ८२ ॥

उक्ति सखी की सखी प्रति। हे सखि ! आज वृषभानुनन्दिनी सखिन के संग आवत रही ग्रह अष्टम राहु में नन्दसुत मिल गयो अंग में अनंग की उमंग भरे सो कृष्ण ने करी को नाम पुण्डरीक सो छुवाइ दयो अर्थ हम तुमको नमस्कार करत हैं तब कुन्तीपुत्र कर्ण पितु सूर्य तिनके सम्मुख घर नाम अयन भाषा में लघु दीर्घ होत है ताते अयना सूर्य के सम्मुख करि राधा हृदय सों लगायो अर्थ तुम हमारे हृदय में रहो अथवा दिनमूंदे मिलि हैं अथवा सूर्य शिव की शपथ है हमको सूक्ष्म महीन ते दोहुन के भाव को एक करके अधीर ह्वै रही परन्तु श्याम न देखत बने न अनदेखत बने हे वीर ! या पद में सूक्ष्म अलंकार भावसन्धी है लक्षण—

दो०—सूक्षम पर आश्रय समुझि, करै क्रिया कछु भाव।
दो भावन की सन्धि ते, भावसन्धि गुणगात्र ॥ ८२ ॥

हरि को अन्तरिक्ष जब देखो।
दृग्गजसहित अनूप राधिका उर तब धीरज लेखो ॥
बहुत श्रेय पुनि कुन्तअग्र में नीतन सों रँगसारो।
रेशमछ्दउरमूरखमालापछिन पीठ समारो ॥
मासन में शृंगाररस शोभित तब मन युक्ति बनाई।
लै निषेद दर्पण निज कर ते सम्मुख दियो दिखाई ॥
स्वच्छवसन नय उर के रस में मिले लाल मुख पोंछो।
सूरश्याम तन चितैफेरमुख पिहितभावबलभोछो॥८३॥

उक्ति सखी की। हे सखि ! हरि को अन्तरिक्ष नाम अधर जब देखो दृगज सहित दृगज नाम अंजनसहित तब राधिका ने अपने हृदय में धैर्य धरो बहुत श्रेय नाम महावर कुन्त नाम भाला

अग्रभाल अर्थ महावर भाल में नीतन नाम नयन में सोई महावर रंग अरुण रेशम कही नख ताको छद उर में मूर्ख निर्गुणी माला पङ्किन ते कंकन पीठ मासन पलन में शृंगाररस पान को रस सोहत है तब यह युक्ति बनाई निषेद आकर दर्शते दर्श दोई मिल आदर्श नाम दर्पण दिखायो स्वच्छसफ़ेदवसन नय नदी उर रस जल अर्थ पानी सों भिजाइ कपड़ा लाल को मुख पोंछो श्यामओर चितै कै मुखफेर पिहित अलंकार अरु भाव सबलता दिखाई लक्षण—

दो०—पिहित छिपी पर बात को, आप जनावै भाव।
बहुत भाव ते होत है, भाव सबलता ताव ॥८३॥

यह सांवरी सखी मेरे हित चक्रवाक पढ़ि आई।
यश माता शुचि शील जान के सिखवन हेतु पठाई॥
जानत है बुधिवन्त वेद वश तस न कहूं सुनि पैहै।
या सँग रहत सदा शुचि सजनी सब सुख शोभा पैहै॥
चेखी करत मोहिं कहि लीन्हीं अवर न करिहौं चेली।
तुम गुरु होहु और जो सीखें तिनकी समुझ सहेली॥
का सतरात अली बतरावत इत उत नयन नचावै।
सूरदास तजि व्याज उक्ति सब मोसोंकोनजतावै॥८४॥

उक्ति नायिका की सखी प्रति। हे सखि! यह जो सांवरी सखी सो मेरे हेतु चक्रवाक कोक पढ़ि आई है यश कहे कीर्ति मैया ने याको पवित्रता अरु शील जान के मेरे हेतु पठवाई है जानत है बुधिवन्त वेद चार वसु आठ वर्ण गाति विपरीत ते चौरासी आसन जैसी यह जानत तैसी कहूं न सुनी है अरु याके संग रहे ते हे सजनी! बहुत सुख पैहै परन्तु जब मोको याने चेली करी

तब यह कहि लई और को हौं चेली न करिहौं और जो तुम्हारे संग की सहेली हैं तिनकी तुम गुरु ह्वैकै सिखाइयो सो तू सतरात बतरात कहा है इत उत नयन का नचावत है व्याज उक्ति तजि मोसों जो कहने होइ सो कहु या पद में सतरात बतरात नयन नचावत ते भाव सबलता व्याजोक्ति अलंकार लक्षण—

चौ०—औरहि निजआकार दुरावै। व्याजउक्ति तहँ सुकविबतावै॥८४॥

हरिगृहजापतिपतनिसहेली।
हयभूषण कीनी ना ताते जैहै काल अकेली॥
तिरसकारभाषा में जाते लागत है भय भारी।
कासों कहै सुनै को सजनी परी विपत्ति महारी॥
पग रिपुतामहँपरतगजलके को तनते सुरभावै।
उक्ति गूढ़ ते भाव उदयसब सूरजश्याम सुनावै॥ ८५॥

उक्ति नायिका की सखी से । हे कालहरी गृह पर्वतजा पार्वती पति शिव पत्नी गंगा सहेली यमुना हय भूषण पूजी में पूजी नाहींहै ताते अकेली काल जैहै तिरस्कारभाषा यामिनी भाषा रात्री में जैहै जाते भय लागति है सो कासों कहौं को सुनै बड़ी बिपदा परी है पगरिपु कंटक तामें गज कहे करील के सो तनते को सुरभै है यह गूढ़ उक्ति ते भाव जो उदय है सो श्याम को समुझायो यामें गूढ़ोक्ति अलंकार भाव उदय होत है लक्षण—

दो०—गूढ़ उक्ति कछु भाव ते, उत्तर दीनो जान।
भाव उधारे ते कहै, भाव उदय सुखभान॥८५॥

सिन्धव झष आराम मध्य ते आज हेरायो श्याम।

पतिमाता औ मीन आदि अँत हैंगे समुझो चित्त।
वयरोचनसुत को स्वभाव सँग देखि परत ना मित्त॥
इन्द्रसहाय उठे चारों दिश लिये सहेली साथ।
यहि विपत्ति में राखनहारो को न हमारो नाथ॥
ताते विनय करत नँदनन्दन चलो हमारे संग।
विप्र उक्ति सुनि सूरश्याम को घटिगो विरह प्रसंग॥८६॥

उक्ति नायिका की नायक प्रति। सिन्धव नाम लवण झष नाम मछरी आराम नाम याके मध्य के वर्ण निकारो तो बछरा होत है अर्थ हमारो बछरा हेराय गयो है हेरो नाम लखो सारँग पक्षी बात मदनपत्नी रति याते खोजत अन्त के वर्ण ते पायो अर्थ हौं सो बछरा खोजत हैं पतिमाता सास मीन नाम झष आदि वर्ण ते सांझ भई तुम चित्त में समुझो वयरोचन के पुत्र बलि स्वभाव सखी संग में नाहीं है देखपरत इन्द्रसहाय मेघ चारोंदिशा में उठे हैं सहेली दामिनि संग में लिये हैं यहि बिपदा में राखनहार हमारो नाथ और कोई नाहीं है ताते विनय करत कि हमारे संग चलो यह उक्ति सुनि श्याम को जो विरह रहो सो बुझाइ गयो ताते भाव सात विप्र उक्ति अलंकार है लक्षण—

दो०—छुपो श्लेष परगट करै, विप्र उक्ति है क्षेम।
भाव शान्ति ते होत है, भाव शान्ति करि नेम॥८६॥

का विपरीत भवन में धारा।
बैठी हती अकेली सुन्दर लिखत रूपसुतसुतसुतमारा॥
दधिसुतअरिभखसुत स्वभाव चल तहां उताइल आई।

देखताहि सुर लिख कुबेर कोवित्त तुरत समुझाई ॥
करत व्यंग ते व्यंग दूसरी युक्ति अलंकृत माही ।
सूर देखि ग्वालिन की बातेंको कतसमुझतहाही ॥८७॥

धारा विपरीत करे राधा अकेली मन्दिर में बैठ सुत कहा नन्द तिनके सुत कृष्ण तिनकी तसवीर लिखत रही तब लौं दधिसुत चन्द्र रिपु राहु भख सूर्य सुत कर्ण स्वभाव सखी तहां गई ताको देख सुर कही सुमन कुबेर वित्त धनु अर्थ फूल धनुष तामें लिख दियो है काम की तसवीर लिखत रही यामें व्यंग सखी कि तू नन्दनन्दन में आसक्त भई दूसरी राधा जहँ दियाई कै हौं काम की तसवीर लिखत रही अरु तोपै कामधनु लीनो तब आन को लगावत युक्ति अलंकार—

चौ०—कर्म करत जहँ क्रिया छिपाई । युक्ति अलंकृत तहँ ठहराई॥८७॥

माधव कीजिये विश्राम ।
उदो चाहत लेन वैरी करन पित हितयाम ॥
खुल्यो चाहत सरन सारँगदेतसारँगदान ।
सुरासेवनकरनलागे विप्र लख सुख हान ॥
निशाचर रिपुहीन है है गये घर सब कोइ ।
विष्णुवाहनसेन दशादिशि लगे बोलन सोइ ॥
आइगे नँदलाल संगी देखिये नँदलाल ।
मोल की विधि कीजिये उर विना गुण की माल ॥
आपके गुण कहन कारण आप ही के नैन ।
सूर ढौंडी देत शिर पर लोक रखी पैन ॥ ८८ ॥

उक्ति नायिका की नायक प्रति । माधव यामें गाली संयुक्त यहै तुम माता के पति हौ अरु उदोकर्ण पितु सूर्य करो चाहत हैं सरन में सारँग जे कमल हैं ते सारँग सुगन्धदान देन चाहत हैं खुलन को सुरा वारुणी पश्चिम दिशि ताको सेवन द्विजराज चन्द्र करन लागो है सुख की हानि देखि के निशाचर राक्षस वैरी ऋक्ष तारे छवि ते हीन है घर गये विष्णुवाहन गरुड़ सेना पक्षी बोलन लगे हे नन्दलाल ! आप आये लालन लाये यह जो बिन गुण की उर में माल है ताको मोल कैसे होहि अरु आपके जे गुण हैं तिनको गुण तो आप ही के नयन कहत हैं डोड़ी दै दै को यह लोक उक्ति समुझो लोकोक्ति अलङ्कार बोधा बिषे व्यङ्ग है—

चौ०—लोक कहावत जामें होई । लोक उक्ति जानो कविलोई ॥८८॥

मानिन बार वसन उघार ।
शम्भुकोपदुवार आयो आदिको तनमार ॥
नागजापतिपिता पुर को जाहु कहत न वेग ।
गेहदृगऔरंगभष सुनि रीत ताही नेग ॥
कहहु करहि सहाइ सुरपति चढ़त ब्रज पै फेर ।
सूर उक्ती वक्रकर कर रही नीचै हेर ॥ ८६ ॥

उक्ति सखी की । हे मानिनि ! शम्भु नाम हर को परीश आदि वर्ण ते हरी तेरे दरवाजे ठाढ़ो सो तू बार पट किवार खोल तब नायिका हरी शब्द वक्र उक्ति ते वानर कहत है कि कहु नागजा सुलोचना पति मेघनाद पिता रावण पुर को जाहु तब सखी कहत है कि गृह कहे घर दृग नयनन रङ्ग श्याम झष मञ्जरी ताही रीति ते आदि वर्ण लेह तो घनश्याम आये हैं तब नायिका

कहत कहै इन्द्र की सहाय करैं व्रज पै फेर चढ़ो है या पद में वक्र उक्ति अलङ्कार है लक्षण—

दो०—वक्र उक्ति अश्लेष से, अर्थ साधिये फेर ॥ ८६ ॥

सजनी ताको सब समुहावै ।
जाको लाज तनक ना तन में मन में सो न शँकावै ।
सुन्नतीन पाछिलसुदताकै प्रथम आपनी छोड़ै ।
भूधर समर आदि की सोई सुनत करत तन पोड़ै ॥
दानवप्रियासेरचालीसो सुरभी रस गुड़ सींचो ।
तजत न स्वाद आपने तन को जो विधि दीनों नीचो ॥
छेकउक्ति जहँ दुमिल समुझ के का समुझावत नीठो ।
मिसरी सूर न भावत घर की चोरी को गुड़ मीठो ॥ ६० ॥

उक्ति नायिका की । सखी सों कहि नायक को सुनावत है कि हे सजनी ! ताको सब समुझावो परन्तु जाके तनु में लाज नाहीं सो मन ते नाहीं शङ्क मानत है सुन्न दै तीन लिखै तो तीस हो पाछिली सुधि नाम याद आदि वर्ण ते तिया सो आपनी छोड़ देत भूधर पर्वत समर रण आदि ताते तीय सुनत ताको तनु बली होत है दानव कुम्भकर्ण प्रिया निद्रा सेर चालीस मन आदि वर्ण ते नीम सुरभी रस गुड़ घी ते सींचो परन्तु अपनी करुवाई जो विधि दई ताको नाहीं छोड़त यह छेकोक्ति दुमिल कूट है तुम का समुझावती हौ ताको घर की मिश्री नहीं भावत जाको चोरी को गुड़ मीठो लगत है छेकोक्ति लक्षण—

चौ०—लोकउक्ति में युक्ति बतावै । सो छेकोक्ति सूर बहरावै ॥
अरु दो वस्तु मिल एक वस्तु भई ताते दुमिल ॥ ६० ॥

हों आज निहारे ।

सरस सम्हारत पयसुरतिया बीच रुच कारे ॥

नृत्य कार उत्तम बनाइ बानिक सँग चन्दन आवै ।

मास भाग शिर सरस सुरन के देखत झुक झुक जावै ॥

सखन ओर बरही मुख कर करस जनी फिर फिर झांको ।

एकावरन स्वभाव उक्ति कर सूर सरस रस बांको ॥ ६१ ॥

उक्ति सखी की नायिका प्रति । जलज नाम कमल नीतन नयन हे सखि ! कमल नयन मैंने आज देखे हैं मोर साँरग ताके जे सुर हैं अर्थ साँरग राग के सुर हैं पय नाम जल जल नाम बासुर तीया सुरी अर्थ बासुरी में साँरग के सुर समारत रुचिकर्त्ता नृत्यकार नट उत्तम वर अर्थ नटवर बानिक बनाये मास भाग पक्ष सुर नाम बरही अर्थ मोरपक्ष शिर पै सम्हारे ते देखत झुक झुक जात ते भखन की ओर बरही नाम मोर अर्थ सखन की ओर मुख मोर मोर के फिर फिर झांकत रहे ॥ ६१ ॥

माधव अस न करिबे योग ।

जस करी वृषभानुजा की दशा आपु वियोग ॥

शशीपावसकपिन के बिच मूंदि राखे नैन ।

है शिकारी नाग मनासिज सखिन ओर अचैन ॥

यामिनी नौका विचारो काम सँग तनु प्रान ।

चलन सुन के रावरो हो गई सब विधि हान ॥

त्रिमिल भाविक कियो भूषण आप अद्भुत आज ।

सूर चाहत कहा बैठो गेह में तजि काज ॥ ६२ ॥

उक्ति सखी की नायक प्रति । हे माधव ! ऐसी तिहारे करबे योग्य नाहीं जैसी वृषभानुजा राधा की दशा आप वियोग सुनाइ के करी है शशी नाम सकल पावस नाम बरषा कपि वानर मध्य के वर्ण ते करन ताके बीच नेत्र मूँद राखे है शिकारी नाम अहेरी नाग नाम सरप मनसिज नाम अतनु बीच के वर्ण ते हेरत नाहीं सखिन की ओर अचैन हो रही हेरत अचैन होत है यामिनी नाम रजनी नौका नाम तरणी काम नाम अतनु बीच ते जरत है वाको तनु प्राण रावरो मथुरा को चलन सुन सब विधि ते हानि हो गई है यह त्रिमिल कूट भाविक अलङ्कार भलो कियो आपने अद्भुत रूप को ताते गेह में बैठो सब काज तजि के जो होनहार दशा सो प्रत्यक्ष दिखावत ताते भाविक भूषण लक्षण—

दो०—भाविक भूत भविष्य जो, परछित कहै बनाइ ॥ ९२ ॥

छपे पति कति जात खेलन कान मेरे प्रान ।
अचलजा पति अंग भूषण भारहित हितजान ॥
शम्भुपतनी पिता धारण बकसँहारण वीर ।
नन्दनाहि निकन्द कारण अघविदारण धीर ॥
शेष ना कहि सकत शोभा जान जो अति उक्ति ।
कहैं वाचिक वाच ते है कहा सूर अनुक्ति ॥ ९३ ॥

छपे नाम गोपपति उक्ति यशोदा की । हे गोपपति ! कहां कान्ह खेलन जात है अचलजा पति शिव अंग भूषण सर्प भार पृथ्वी हित इंद्र ताके हित मेघनाम घनश्याम हे घनश्याम ! शम्भु-पत्नी पिता गिरि ताके धारण करनहार हे बकासुर संहारण वीर

नन्दनाहि नन्दना नाम पूतना के निकन्द कर्ता अघासुर के विदारण धीर तुम्हारी शोभा शेष नाहीं कहि सकत जो अति उक्ति अलङ्कार जानत हैं वाचिक जो शब्द वाच्य अर्थ हौं कहां कहीं अनउक्ति की या पद में वाचिक के चार भेद अतिउक्ति अलङ्कार है गोपपति ते जात नाम कान्ह इष्ट घनश्याम गुण पूतनादि मारण क्रिया अलङ्कार लक्षण—

दो०—अतिशय सूरंपन कहत, हैं अति उक्ति अनूप ॥ ६३ ॥

खेलो भानुजा के भौन ।
हौं कहत बलिजाहुँ बाहर कहा हित ते गौन ॥
दिनदिनन में लगे माणिक सियारिपुपितु हेर ।
लाज मानत रहत निशि दिन सकत ना मुख फेर ॥
खचर खेलन हेतु आवत आप ते शत कोट ।
नाचत हैं सारँग सुन्दर करत शब्द अनेक ॥
सबै ब्रज तव हेतु देखन चलो आवत लाल ।
शम्भुभूषण वदन विलसत कञ्ज ते गुहि माल ॥
यह उदात अनूप भूषण दियो सब घर तोर ।
सूर सबरे लक्षणन युत सहित सब तृण तोर ॥ ६४ ॥

उक्ति यशोदा की कृष्ण प्रति । हे लाल ! तुम भानुजा यमुना भवन में खेलो हौं कहे हौं बलिजाहु बाहर कौन हेतु ते गमन करत हौ दिन नाम बार नाम दुआर दुआर में जो माणिक तेरे लगे हैं ताको सिया रिपु जयन्त पिता इन्द्र हेर के लाज मानत सामुहें नाहीं हेर सकत खचर चङ्ग तेरे हेतु ते आवत हैं आपते

कोटानकोट सारँग जे भौंरा हैं ते नृत्य करत हैं अरु शब्द करत हैं भौंरा खिलौना अरु सब व्रज तेरे देखबे को चलो आवत है शम्भु-भूषण चन्द्रवदनी कञ्ज करन ते माला गूँद लियावती ऐसो उदात्त अलङ्कार तेरे घर में है सब लक्षणन युत तोपै सुहित सब तृण तोरत है यामें सम्पत्ति की अधिकता ते अरु यमुना में गेह असम्भव तीर ते अप्रयोजनवती लक्षणा—खिलौना आपते नाहीं आवत आनको गुण लयो ताते उपादान भँवर में लक्षित चन्द्रमुख में गोनी सारोपा कञ्ज में सुधा साध्यावसाना ॥ ९४ ॥

अघहरि सोहत सुरन समेत।
नीतन ते बिछुरयो सारँगसुतकुन्तअग्र ते वन्दनरेख ॥
विप्र विचित्र रेख दधिसुतग्रह रेशम छदघन ऊपर आज।
पुण्डरीकसुत घटिगे उर ते वानरपुत्र सजे बिन साज ॥
दधिसुतदीपतताजिमुरझान्योदिनपतिसुतहैभूषणहीन।
जहँनिरुक्तिकीअवधवामतूभईसूरहतसखीनवीन ॥९५॥

उक्ति नायिका की सखी प्रति। हे सखि! अघहर वेणी सुर नाम सुमन समेत सोहत है तेरी नीतन जो नयन हैं तिनते बिछुर गयो है सारँगसुत काजर अरु कुन्तअग्र भाल ताते वन्दन विप्र नाम द्विज द्विज नाम दशन ताको रेख दधिसुत अमृत ताको घर अधर तामें रेशम नख ताके छदघन नाम पयोधरनमें पुण्डरीक नाम गज ताके सुत मुक्ता सो उर पै नाहीं हैं वानरपुत्र अंगद जे बाजूबन्द हैं ते विना साज के हो रहे हैं दधिसुत कमल अथवा चन्द्र दीपत ता तजि के मुरझाइ गयो है दिनपति सूर्य सुत कर्ण सो भूषण ते हीन हैं यह निरुक्ति है अरु अवध है हे वाम! तू भई सखी को हत के का सखी के पति सों रम आई है यामें वाम

नाम जो साधारण स्त्री को है ताको संयोग के योग ते टेढ़ी अर्थ साधो ताते निरुक्ति अलङ्कार है लक्षण—

दो०—सो निरुक्ति यह योग ते, अर्थ साधिये फेर ॥ ६५ ॥

द्वितिय राशि दिनपतिपुर नाहीं।
जहां कीन तुम सङ्ग मन भाई रोकत भये न को परछाहीं ॥
यहै हेमपुर अष्टसुरनसुत दिनपति ही को वास।
समुझ बूझि कै काम कीजिये राख राख उर त्रास ॥
यो प्रतिखेद अलंकृत जबहूं सुमुखी सरस सुनायो।
सूर कहौ मुसक्यान प्रानप्रिय मो मत एक गनायो ॥ ६६ ॥

उक्ति रुक्मिणी की कृष्ण प्रति। द्वितिय राशि वृष दिनपति भानु यह वृषभानुपुर नाहीं है जहां तुम मनभावती बातैं करी तुम्हारी परछाहीं कोई न रोक सको यह हेम नाम कुन्दनपुर है अष्ट कहे वसु सुर कहे देव हे वसुदेव के पुत्र! दिनपति सूर मन को यामें बास है ताते जो काम करत हौ समुझ बूझ के सूर मन को यामें बास है करे उर में त्रास राख के यह जो प्रतिखेद अलंकार सुमुखी रुक्मिणी ने कहो तब मुसक्याय कृष्ण कही कि हमारे मत ते जैसे अहीर तैसे वीर यामें दो जागा प्रतिखेद वृषभानुपुर अहीरन के ग्राम में रुक्मिणी दिखायो अरु कृष्ण दोइ लक्षण—

दो०—सो प्रतिखेद प्रसिद्ध जो, अर्थ निखेदो जाइ ॥ ६६ ॥

जब व्रजचन्द्र चन्द्रमुख लखिहै।
तब यह बान मान की तेरी अंगन आपु न रखिहै ॥
कुन्तअग्र गज ऐ नीकन में आपु नहीं ते दैहै।
पापहरन में देव अनूपम गज को पुत्र समैहै ॥

सुधागेह में कर की शोभा सारँगरिपुसब नैहै।
घन ऊपर जलजासुत शोभा सुरुच सांवरी लैहै॥
भूषण बार सुधार तासु रँग अँग अँग दीपति हूहै।
यहिविधिसिद्धअलंकृतसूरजसनाविधिशोभाछूहै॥९७॥

उक्ति दूती की। जब ते व्रजचन्द्र को चन्द्रमुख देखि है तब ते यह जो मान की बान तेरी है सो अङ्ग आपही ते न राखिहै कुन्तअग्र जो भाल है तामें गज नाम सिन्दूर देहै अरु नीकन नाम नयनन में दृगज को नाम अञ्जन सो काजर देहै अरु पापहरण वेणी तामें देव नाम सुमन गजपुत्र मुक्ता बनावैगो सुधा गेह जो अधर है तामें कर नाम पान ताकी शोभा सारँग भ्रमर रिपु चम्पा सिसकली चम्पकली बनाइ है घन पयोधरन पै जलजा सीप सुत मुक्ता को हार पहिरै है हे सांवरी श्यामा! तू यह सब करैगी बार भूषण पहिर ता श्याम के रङ्ग के जे पट हैं ते तू धारण करैगी अङ्ग अङ्ग में दीपति बढ़ावैगी यहि विधि ते सिद्ध जो भूषण अलंकार है सो शोभावान् हू है यामें चन्द्र को फेर व्रजचन्द्र जासों व्रज शोभा पावत फेर साधो ताते विधि सिद्ध अलंकार है लक्षण–

दो०–अलंकार विधि सिद्ध जो, अर्थ साधिये फेर॥ ९७॥

नट देखत वृषभानुदुलारी।
आनन अमल पोंछ सारँगरिपु ते सारँगसुत रेख सम्हारी॥ दै गज बिन्दु बिजक्षणवेदन भानुयुगल अनुरूप उज्यारी। शेषलता के पत्र सुधागृह गहत होत सुख अंगन भारी॥ कण्ठ लक्ष राखी सुकण्ठ में वाम अकाश प्रकाशित न्यारी। रामदूत द्युति दिपत

नक्षत्रन पुरीधनदरुचि रचि तमहारी ॥ यह छवि देखि भयो आनँद अति आपु आपुने ऊपरवारी । सूरश्याम के हेतु अलंकृत कीनो अमल सुमिल हितकारी ॥६८॥

उक्ति सखी की सखी प्रति । आज नग मुकर दर्पण वृषभानु-दुलारी देखत है सारँग रिपु पट ताते आनन अमल पोंछो अरु फेर सारँग दीपसुत काजर ताकी रेख सम्हारी गज नाम सिन्दूर ताको बिन्दु दैके बिजक्षण जो वेद श्रवण हैं तिनमें भानु तरुण तरोना पहिरे शेषलता नागबेलि ताके पत्र सुधागृह अधरन में गहत अंग अंग आनन्द भये अरु कण्ठशिरी कण्ठ में पहिरी अरु बाम नाम बेसर आकाश नाम नाक में पहिरी रामदूत अंगद जो बाजू-बन्द है सो नक्षत्र हस्तन में पहिरे धनद कुबेरपुरी अलका अलक बहुत रुचि रचत है यह अपनी छवि देख आप आपन पै वारन लगी यह जो अलंकार कीने सो श्याम के हेतु अमल सुमिल कीनो है यामें छवि बनाइबे कारण देख खुशी होब कार्य साथ ही है ताते प्रथम हेतु लक्षण—

दो०—हेतु प्रथम में होत है, कारण कारज कार ॥ ६८ ॥

सजनी हों न एक पहिंचानो ।
वाजिबोलहेरनतुहीनचलामिलत सुतापति मानो ॥
वाहनमाततासुरस यद्यपि सब व्रज करत बखान ।
मोरे मन एको नहिं आवत करत तिहारी आन ॥
भूषण वसन भवन भरपूरण भूरभँडारभरोस ।
सूरश्याम सम्पति है मेरे और न एको सोस ॥ ६६ ॥

उक्ति यशोदा की सखी प्रति । हे सजनी ! मैं एक ही बात

नहीं पहिचानती वाजि नाम तुरंग ताको बोल हीसन हेरन नजरन दो अन्त के वर्ण ते हीन करे ते तुहीनचलजा पार्वती पति शिव वाहन बैल मात गौ रस गोरस का सब बखान करत हैं तदपि मेरे मन में एक ही नाहीं आवत है तेरी शपथ करि कहत हौं भूषण है वसन घर भण्डार जेहैं पै मेरे तो एक श्याम सम्पत्ति हैं और वस्तु को मोको शोच नाहीं है यह मैं सम्पत्ति के कारण कृष्ण कारण कार्य सम्पत्ति तासौं एकता करी ताते दूसरो हेतु लक्षण–

दो०—कारण कारण ये सबै, वस्तु एक ही संग ॥ ९९ ॥

अङ्गदान बल को दै बैठी ।
मन्दिर आज आपने राधा अन्तर प्रेम उमेठी ॥
दधिसुतधर रिपुपिता जानमन पीछे आयो मोर ।
करिभूषणतनुहेरन लागी गयो देख मन चोर ॥
साँरगपक्षअक्षाशिर ऊपर मुख साँरग सुख नीके ।
कट तट पट पियरो नटवर वपु सापे सुख रुख जीके ॥
नीकन में शीतलता व्यापी अङ्ग अङ्ग सियरानो ।
सूर प्रत्यक्ष निहारत भूषण सबदुख दरप दुरानो ॥ १०० ॥

उक्ति सखी की सखी प्रति । हे सखि ! आज बल को अङ्ग दान पीठ दैके राधा बैठी रही अपने मन्दिर में राधा प्रेम अन्तर को उमेठ के दधिसुत चन्द्र धर महादेव रिपु काम पिता कृष्ण तब लों पाछे आये हमारे यह जान के करभूषण आरसी ताकी ओर निहारन लगी मन आप गयो जान के कैसे देखे साँरग मयूरी ताके पक्ष शिर पै सोहत हैं अरु मुख साँरग राग ताके सुर नीके हैं अरु काटि है पीत पट बांधे हैं नटवर वेष बनाये हैं तब नीकन

अक्षन में शीतलता व्यापी अरु सब अङ्ग साहिर उठो अर्थ सात्विक ह्वै गयो तब प्रत्यक्ष भूषण देख जो दुःख को दर्प रहो सो छप गयो इहां नेत्र ते प्रत्यक्ष अलङ्कार है लक्षण—

दो०—सो प्रत्यक्ष से इन्द्रियन, मिले जु उपजै ज्ञान॥ १०० ॥

बैठी आजु रही अकेल ।
आइ गो तबलों विहारी रसिक रुचिवरबेल ॥
तीनदश कर एक दोऊ आप ही ते दोर ।
पंचको उपमेय लीन्ह्यो दांव आपन तोर ॥
अन्त ते कर हीन माने तीसरो दो बार ।
दोइ दश करि दियो समुझत भूल सो कै बार ॥
सोरहें सो समुझि लागी हसन हरषत भूर ।
सूरश्याम सुजान जान्यो परस ही ते पूर ॥ १०१ ॥

उक्ति सखी की सखी सों । हे सखि ! राधा आज अकेल बैठी रही तब लों विहारी रासिक तहां आइ गये त्रिदश नक्षत्र हस्त दोई एक करके आप दोर के पँचये मृगशिर ताके उपमेय दृग दबाइ लिये तब तीसरो नक्षत्र कृतका अन्तते हीन करे कृत दो बार कृत मानो राधा ने दो दश उत्तर समुझ भुलानो दयो सो तब लग सोरहें विशाखा सखी आइ सुन हसन लागी कि सूरश्याम तो परते जनो रहे अब कहा कहती यामें परसते प्रत्यक्ष अलङ्कार जानिये ॥ १०१ ॥

साँरगपितु सुतधरसुत वाहन आजु न नेक पुकारें ।
शिव रिपुतिय जलयुत काहे ते नेकु न जात निहारें ॥
कलहीपातिपितुसुता और रँग कीन्ह्यो कहा सुनाऊँ ।

व्रजवीथिन में जे व्रजवासी तिन्हें देखि मुरझाऊँ॥
सुरभीसुतसुतसुरभिन ओरे हेरत हरषन पूरे।
भूसुत शत्रुगेहगुण कासों कहे भरे अति भूरे॥
चारो ओर व्यास खगपति के झुण्ड झुण्ड बहु आये।
ते कुखेत बोलत सुन सुन के सकल अङ्ग कुम्हिलाये॥
लै करि गेंद गयो है खेलन लरकन संग कन्हाई।
यह अनुमान गयो काली तट सूर सांवरो माई॥१०२॥

उक्ति यशोदा की। कि आज सारँग कमल पितु समुद्र सुत चन्द्रधर शिवसुत षडानन वाहन मोर नाहीं बोलत हैं शिवारिपु जलन्धर त्रिया वृन्दा जल वन वृन्दावन काहे नाहीं निहारो जात कलही पति शनि पितु सूर्य सुता यमुना और ही रङ्ग करै है सो का सुनाउ अरु व्रजगलीन में जे व्रजवासी फिरै हैं तिन्हें देखे हैं मुरझात अर्थ भयकारी देख परत सुरभी गौ पुत्रन की ओर नाहीं देखत पुत्र गौ की ओर हर्ष ते पूर के भूसुत केवाँच शत्रु वानर गेह वृक्ष ऐसे देख परत जो कहिबे योग्य नाहीं हैं अर्थ उदास अरु चार ही तरफ़ खगपति व्यास काक झुण्ड के झुण्ड आये हैं ते कुखेत बोलत सो सुनि के सकल अङ्ग कुम्हिलात हैं याते आज गेंद लै लरकन के सङ्ग कान्ह गयो है सो यह अनुमान आवत कि काली के तट गयो यह पद में अनुमान अलङ्कार को नाम लक्षण॥ १०२॥

सो जानो वृषभानुदुलारी। सियरिपुपितुसुतबन्धुतात हित जाके चरणकमल गुणकारी॥ कामग्रन्थ अरि-गुण रिपुसुतसम गति अति नीक विचारो। त्रयिमू-

रति सुतरिपु पितुवाहन गेह नृपति कटि दारो ॥ भूषणपतिअहारजाफल से मेघ अनोखे दोऊ। सारँगसुतसुतसुतअहारसी दीपति तनु में जोऊ ॥ गिरिजापतिपितुपितु से दोऊ करवर देख विचारों । वाणी सुनत तुरत अपने मन कोटि कोकिलन वारों ॥ निपट निदान बीज सी दशनन जब छवि पूरण पावों । अन्तरिक्ष में पकी बिम्ब बल सहज स्वभाव मिलावों ॥ दिनचर सुतसुतसरस नासिका है कपोल श्री भाई । सारँगनयन भौंह धनु बेणी नागिनि सी सुखदाई ॥ वेदन अर्क विभूषित शोभा बेंदी ऋक्ष बखानों । सूरश्याम है उपमा भूषण तब निज बात प्रमानों ॥ १०३॥

उक्ति सखी की नायक प्रति । कैसे वृषभानु कुमारी तुम जाननी कि सियरिपु जयन्त पितु इन्द्र सुत अर्जुन कर पिता सूय सहित न जाके चरण होहिं कामग्रन्थ कोक नाम चक्रवाक रिपु रात्री गुण अन्धकार रिपु दीप सुत अञ्जन नाम दृगज ता सरीखी गति देखो त्रयिमूर्ति सूर्य सुत कर्ण रिपु अर्जुन पितु इन्द्र वाहन गज गेह वन नृपतिसिंह सी जाकी कटि होहि भूषण मुद्रा पति अगस्त्य अहार समुद्र जा श्रीफल बेल से घन पयोधर सारँग समुद्र सुत कमल सुत ब्रह्मा सुत शिव अहार धतूरा नाम कनिक सुवर्ण सी जाकी द्युति होय गिरिजापति शिव पितु ब्रह्मा पितु कमल से जाके कर होहिं अरु जाकी वाणी सुनत कोकिला वार डारों निदान अनार के बीज की छवि जब दशनन में मिलै अरु अन्तरिक्ष अधरन में पकी कुँदरू की छवि जब मिलै दिन नाम बार चर मछरी पुत्र

व्यास पुत्र शुक सी नासिका कपोल श्री लक्ष्मी के भाई शङ्ख से अरु सारँग हरिन से नेत्र कमान सी भौंह वेणी नाग सी सुखदात वेदयुत में अर्क सूर्य की शोभा भूषणन में बेंदी ऋक्ष ता राशी तब उपमा अलङ्कार मानन या पद में उपमा अलङ्कार लक्षण—

दो०—उपमान सुसादृश्यते, विना दोष लखि जाइ ॥

यह अलङ्कार सब ग्रन्थन में नाहीं मिलत अनुमान में गतार्थ होत है ॥ १०३ ॥

अब लों ऐसी नाहिं सुनी ।
जैसी करी नन्द के नन्दन अद्भुत बात गुनी ॥
श्रवण वचन ते पावन पतनी सारँग कहत पुकार ।
गुण अकाश को शुद्ध साधना शास्त्र करत विस्तार ॥
रवि ते त्रय जननी सुशुद्ध पुनि संसकार ते होई ।
रति में अधर तिया सुत्र सिगरे जानत सुनि मति जोई ॥
शुद्ध सबन को लक्षण जानत शब्दा भूषण जैसो ॥
सूरजुश्यामशुद्धदासीकोकरी कहोविधि कैसो ॥ १०४ ॥

उक्ति गोपिन की ऊधो प्रति । अब लों ऐसी नाहीं सुनी है जैसी नन्द के नन्दन ने गुण के करी है श्रवण नाम श्रुति श्रुति नाम वेद वचन ते सारँग समुद्र की पत्नी नदी गङ्गा आदिक अरु आकाश गुण शब्द साधना ते शुद्ध होत है सो शास्त्र कहत है रवि ते त्रय मङ्गल जननी भूमि संस्कार ते होति है रति में त्रिया के अधर शुद्ध मुनि वचन वारे कहत हैं सब शुद्ध करने को हम लक्षण सुनो

है अरु जानती हैं परन्तु दासी कौन विधि शुद्ध करी है यामें शब्दालङ्कार है। लक्षण—

चौ०—शब्द प्रमाण जहां ठहरावै। शब्द अलंकृत सुकवि बतावै॥ १०४॥

भूसुत मेघ काल निसरन के आदि बरण चित आये।
तरु भामिन बन जातै जानो मध्य बरण बिसराये॥
अबल हुताशन केर सँदेशो तुमहूँ मध्य निकासो।
हिम के उपल तलाई अन्ते जाके युगत प्रकासो॥
हम तो बँधी श्याम गुण सुन्दर छोरनहार न कोई।
जोब्रजतज्योअर्थपतिसूरजसबसुखदायकजोई॥ १०५॥

उक्ति गोपी की। भूसुत कुज घन दिन वर्षा के निशि जामिनी आदि इनके वर्ण ते कुब्जा उनके चित्त पै चढ़ी है तरु नाम सागोन भामिन नाम कोपिन वन नाम कानन मध्य वर्ण ते गोपिन को ताते बिसरायो है अबल नाम अजोर हुताशन अगनि मध्य वर्ण ते योग को संदेशो तुम हूं लै आये हौ हिम उपल नाम करका तलाई नाम सरसी अन्त के वर्ण ते कासी यह योग तुम कासी में प्रकाश करो अरु हम तो श्याम के गुणन सों बँधी हैं ताको छोरनहार कोई नाहीं है जो व्रज तजे अर्थ आपन समुझ के पति ने जो सब सुखदायक है यामें गोपिन को त्यागो कूबरी उनके चित्त चढ़ी याते अर्थ पति अलङ्कार है। लक्षण—

दो०—जहां अर्थ हो व्यर्थ दै, और अर्थ ठहराय।
अर्थापाति भूषण कहैं, ताहि सुकवि समुदाय॥ १०५॥

सिन्धुरिपुभखपतिपिता को शत्रु सेना साज।
चल्यो आवत आज भू पर कर अनूपम काज॥

शम्भुभख के पत्र बन दो बने चक्र अनूप।
देव कं को छत्र छावत सकल शोभा रूप॥
आड़ केशर की करी अध रात का शुचि सोइ।
लपट लटकी रज्जुकाभजुगजुवा जनु जोइ॥
सिन्धुरिपुहिततासुपतनी मातुसुत के रङ्ग।
कीन्ह सुन्दर स्वारथी सुख पूर पावन अङ्ग॥
ब्रह्मचारी पिता माता मात नीतन जोर।
करे वाहन हार दोऊ जगत की गति तोर॥
हेतु श्रीव्रजराज जीतन चल्यो आवत भूर।
सूर रसवत देखिये नँदनन्द जीवन मूर॥ १०६॥

सिन्धु नाम दधि ताको रिपु बिलारी ताको भख मूसा ताके पति गणेश पिता शिव शत्रु काम भू पै आवत है शम्भु भख कनिक के तरोना चक्र हैं देव नाम सुमन सुमन कहे फूल कं नाम शीश फूल को छत्र दिये हैं केशर की आड़ ताही की है धुर अरु लटकी रस्सी भूके जुवा सिन्धु रिपु अगस्त्य हित राम पत्नी मात भूमिसुत मङ्गल रङ्ग लाल बिन्दु स्वार्थी ब्रह्मचारी शुक्र पिता माता मात मछरी सो है नीत नयन ते जोर के वाहन हार कीन्हे है नन्दलाल के जीतबे को यामें रसवदलङ्कार है वीर अङ्ग शृङ्गार अङ्गी ते।

चौ०-अङ्ग होत रस जहां प्रवीना। रसवत भूषणतहां सुचीना॥१०६॥

पन्थ रिपु दिन परस सब दिन कीजिये सुख मान।
बूझिये सतजनन सों सब कथा पुराय पुरान॥
ध्याइये सारंगपद के रहन को जो थान।

कीजिये सुख पाय ताही गुणन को बरु गान॥
वोड़िये नँदनन्दजू के चलत हीं दृग बान।
राखिये दृगमध्य दीजे अनत नाहीं जान॥
इन्द्र शत्रु स्वभाव मेरे चाह नाहीं आन।
सूर सब दिन शिवा मोहित देहिं यह वरदान॥१०७॥

उक्ति सखी की सखी प्रति। हे सखि! मैं यह चाहत हौं पंथ रिपु जो यमुना है ताको दिन नाम वार वार नाम जल ताको परस सब दिन रहै अर्थ सब दिन नहाइये अरु सत जनन सों पुराण की कथा बूझिये अरु ध्याइये सारँग जो पक्षी ताको नाम द्विज अरु द्विज नाम विप्र के पद को थान विष्णु अरु अपने दृगन के मध्य तिनको राखिये इन्द्र शत्रु बलि स्वभाव सखी हे सखि! मेरे और चाह नाहीं शिवा मोको यह वरदान देहिं याही में शान्त को अङ्ग शृङ्गार है ताते रसवत्॥ १०७॥

देखत आजु नाहीं दोइ।
नन्दनन्दन औ छबीली राधिका रुचि भोइ॥
मध्य बादर बीच मणि में श्याम मूरति देख।
पुण्डरीक विचार लागी लेन गन्ध विशेष॥
इन्द्रसुतसुत बीच उन लख लगे चूमन चाहि।
हँसत दोऊ दुहुन को लख सूर बलि बलि जाहि॥१०८॥

उक्ति सखी की सखी प्रति। नाहीं कोपरजाइ मुकुर दोई देखत हैं नन्दनन्दन औ राधा रुचि में भूलि गये हैं बादर नाम पयोधर के बीच मणि में राधा ने श्याम को प्रतिबिम्ब देखा सो

पुण्डरीक जान सूँघन लगी अरु कृष्ण इन्द्र सुत बाली ताको पुत्र अङ्गद नाम बाजू को तामें राधा मुख प्रतिबिम्ब देख वे चूमन लगे यह देख दोऊ दुहुन को हँसन लगे याही में शृंगार का अङ्गहास है ॥ १०८ ॥

मुनि पुनि रसन के रस लेख ।
दशन गोरी नन्द को लिखि सुबल संवत पेख ॥
नन्दनन्दन मास छपते हीन तृतिया वार ।
नन्दनन्दन जनम ते हैं वानसुख आगार ॥
तृतिय ऋक्ष सुकर्मयोग विचार सूर नवीन ।
नन्दनन्दन दासहित साहित्य लहरी कीन ॥१०६॥

संवत् सोरह सै सात वैशाख मास अक्षय तृतीया तिथि बुध वार सुकर्म योग ॥ १०६ ॥

प्रथम ही प्रथजगाते भे प्राग अद्भुतरूप ।
ब्रह्मरावविचार ब्रह्मा नाम राखि अनूप ॥
पान पय देवी दयो शिव आदि सुर सुख पाय ।
कहा दुर्गापुत्र तेरो भयो अति सुख पाय ॥
पार पाइन सुरन पितु के सहित अस्तुति कीन ।
तासु बंश प्रशंस शुभ में चन्द्र चारु नवीन ॥
भूप पृथ्वीराज दीन्ह्यो तिन्हें ज्वाला देश ।
तनय ताके चार कीन्ह्यो प्रथम आप नरेश ॥
दूसरे गुण चन्द्र ता सुत शीलचन्द्र स्वरूप ।
वीरचन्द्र प्रताप पूरण भयो अद्भुत रूप ॥

स्तंभोरहमीर भूपति सङ्ग सुख अवदात।
तासु वंश अनूप भोहरचन्द्र अति विख्यात॥
आगरे रहि गोपचल में रहो ता सुत वीर।
पुत्र जनमे सात ताके महा भट गम्भीर॥
कृत चन्द्र उदार चन्द्र जो रूप चन्द्र सुभाइ।
बुद्धि चन्द्र प्रकाश चौथो चन्द्र भे सुखदाइ॥
देव चन्द्र प्रबोध षष्ठम चन्द्र ताको नाम।
भयो सातो नाम सूरजचन्द मन्द निकाम॥
सो समर कर साहि से सब गये विधि के लोक।
रहो सूरजचन्द्र दृग ते हीन भरवरशोक॥
परो कूप पुकार काहू सुनी ना संसार।
सातयें दिन आइ यदुपति कियो आप उधार॥
दिव्य चख दै कही शिशु सुन योग बरजोचाइ।
है कही प्रभु भगति चाहत शत्रुनाशस्वभाइ॥
दूसरो ना रूप देखे देख राधाश्याम।
सुनत करुणा सिन्धु भाषी एवमस्तु सुधाम॥
प्रबल छद छिन विप्रकल ते शत्रु ह्वै है बास।
अखिल बुद्धि विचार विद्यामान मानै मास॥
नाम राखै है सु सूरजदास सूर सुश्याम।
भये अन्तरधान बीते पाछिली निशियाम॥
मोहिं मनसा यहै व्रज की बसी सुख चित थाप।

श्रीगुसाईं करी मेरी आठ मध्ये छाप॥
विप्र प्रथ ते जगा को है भाव सूर निकाम।
सूर है नँदनन्दजू को लियो मोल गुलाम॥११०॥

अर्थ सुगम सूर आपन वंश वर्णत है॥ ११०॥

है व्रजचन्द चन्दचकोर।
ह्वै रहैंगे कविनानिरदै नेह नातो जोर॥
धातुदेश विचार कर विपरीत पहिले जोर।
पाछिले कर पहिल दीरघ बहुरि लघुता ओर॥
बार कर विपरीत इनकी मोहिं नाहिं निहोर।
जनम सङ्गी अङ्ग के को सङ्ग काके घोर॥
यहै निशिदिन मोहिं चिन्ता समुझ सजनी तोर।
सूरदास पुकार कासे करैं बिन घन मोर॥१११॥

उक्ति नायका की सखी प्रति। हमारे दृग नंदनंदन चंद्र के चकोर कब ह्वै हैं धातु तामा देश मालवा ताको विपरीत करने ते मालवा तामा ताके आदि के वर्ण ते माता ताही में पाछिलवर्ण ता ताके पहिलो दीर्घ करो पाछिलो लघु तो तात अर्थ माता पिता अथवा धातु देश विचार करो आठ में कौन चाही तो तामा ताको विपरीत करे माता ताको पाछिलवर्ण तकार दीर्घ लघु ते तात वार नाम जल ताको विपरीत करो तो लज होत ताको भाषा में लघु दीर्घ होत है सो लाजभई अर्थ माता पिता की मोको लाज नाहीं है काहे जे जन्म के सङ्गी हैं अङ्ग के नाहीं यह मोको चिन्ता है आगे तेरी समुझ पुकार घनहीन मोर कासों करै यामें शृङ्गार को अङ्ग चिन्ता भाव ताते प्रेम सुत॥ १११॥

काहे को मम सदन सिधारे। ब्रजभूषण बलि जाहुँ तिहारी तुम ब्रज जीवन जग उजियारे॥ ग्रह नक्षत्र है वेद जासु घर ताहि कहा सारंग सँभारे। गिरिजापति भूषण जिन देखे ते कत देखहि तारे॥ सुरतरु सदन सुभाग छोंड़ि कहँ चाहत हैं द्रुम भूमि भँडारे। सूर रहैं नीके निशिवासर हम सुनि सुखी न होत दुखारे॥ ११२॥

उक्ति नायिका की नायक प्रति। हमारे घर हो ग्रह ९ नक्षत्र २७ वेद ४ को मन होत है या तुम काहे को आये हे ब्रज-भूषण! मैं तिहारी बलिजाउँ तुम जग उजियारे हौ ग्रह ९ न-क्षत्र २७ वेद ४ को मन होत है जाके घर मणि होइ सो का सारँग दीप सम्हारत है अरु गिरिजापति भूषण चन्द्र जिन देखो सो तारे नाहीं देखत सुरतरु कल्पवृक्ष जाके होत सो भूमितरु नाहीं चाहत और सुगम है यामें सपत्नी की स्तुति अनुचित भाव सो शृङ्गार को अङ्ग है ताते ऊर्जस्व॥ ११२॥

भामिनि आजु भवन में बैठी।
माणिक निपुण बना नीकन में धनु उपमेय उमैठी॥
भूषण पितु पितुसुत अरि पतनी माता ओर निहारे।
खचर खिलौना हित शृंगार जगमन सरूख लै धारे॥
वासवसुत अरिके स्वभाव सब कहत सुनत गुणताही।
बिथक पुत्र भ्राता पितु पतनी करत सुने को नाहीं॥

तहँ व्रजचन्द्र आइगो देखत रही न काहू रोकी।
सूरश्याम पर गई वारने निरख कोक जनु कोकी ॥११३॥

उक्ति सखी की सखी सों। हे सखि! भामिनी जो है सो आज भवन गृह में बैठी है माणिक नाम लाल बनाये है नीकन अक्षन कै अर्थ लाल दृग करे धनु उपमेय भ्रू सो उमेठी है भूषण बाजू ताको नाम अङ्गद ताको पिता बालि ताके पिता इन्द्र सुत जयन्त रिपु रामपत्नी जानकी माता भूमि अर्थ भूमि की ओर देखत है खचर खिलौना गुड़ी ताको हित नख शिर पान नाम हाथ जगमन चरण पै धरे है अर्थ करके नख ते पग को नख लिखै है वासव इन्द्र सुत अर्जुन रिपु कर्ण स्वभाव सखी अर्थ सखिन की बात सुनत है पर बिधक पवन सुत भीम भ्राता कर्ण पिता सूर्य पत्नी संज्ञा भी नाहीं करत तहां जब व्रजचन्द्र आये तब काहू की रोकी न रही श्याम पर वारन गई जैसे चकवा पै चकई इहां शृङ्गार को अङ्ग शान्तभाव है ताते समाहित अलङ्कार है ॥ ११३ ॥

सजनी हौं न श्याम मुख हेरो।
सूरसुता पितुरागगन्ध पितु प्रिययुत आदि सकेरो॥
मुख समूह मानुष ताही विधि कच्यो न कबहूँ फेरो।
पय निर्जर रसनी को कबहूँ सब दिन सुन्दर पेरो॥
जानो ना अनुराग कहां ते मोहिं घनेपन घेरो।
भूषणपति अहारसुत वैरी वारत अङ्ग उजेरो॥
पलटत बान भानुजा तट में निरखत दुख बहुतेरो।
सूरसुजान विभावन पहिलो कीकरकर मनचेरो॥११४॥

उक्ति सखी की सखी प्रति । हे सखि ! मैं श्याम मुख नाहीं देखो है सूरसुता यमुना राग पिता सुरगन्ध पितु मलय प्रिय तनु इनके आदि वर्ण ते यसुमत ताके सुख नाम आनन समूह नाम गण मानुष नर आदि वर्णते आँगन में फेरो नाहिं कियो पय नाम वार निर्जर नाम सुर रसनी गीसनी आदि वर्ण ते बासुरी ताको शब्द भी नाहीं सुनो मैं नाहीं जानत मोको अनुराग ने कहां ते घेरो है भूषण मुद्रा पति अगस्त्य अहार समुद्र सुत चन्द्र को उजेरो वैरी होके अङ्ग जारत है बाण नाम सर सर नाम ताल पलटे ते लता भानुजा यमुना के तट में देखे ते बहुत दुःख होत है यामें पहिलो विभावनालंकार पूर्वानुराग में सुवन दर्शन है देखब कारण सो नाहीं विरह कार्य ॥ ११४ ॥

यशुमति देखु अपनो कान।
वर्ष शर को भयो पूरण अबै ना अनुमान ॥
हीनसुत को हर्ष हरके कियो सो सब जान।
भानुसुत्र सुजीव निशि गुण प्रथम जोर बखान ॥
सिन्धु जागुण लवन कीन्ह्यो अन्त ते पहिंचान।
वृथा व्रज की नारि नित प्रति देत उरहन आन ॥
तोहिं अपनो लाल प्यारो हमैं कुल की कान।
सूर समुझि विभावना है दूसरी परमान ॥ ११५ ॥

उक्ति सखी की यशोदा प्रति। अपनो कान्ह देखु शर नाम बाण बाण संज्ञा पांच वर्ष पांच को अबै नाहीं भयो है हीनसुत पूतना ताको हर्ष हरके जो कियो सो सब जानत हैं भानु नाम त्रिमूर्त्ति सुत्र नाम नाक जीव नाम बृहस्पति निशि गुण तम

आदि वर्ण ते विनावृत भयो सिन्धु जालवन गुणखारो अंत ते मारो अरु ब्रजबाल तुम्हैं वृथा उरहन देती हैं तुम्हैं अपनो पुत्र प्यारो हमैं कुलकान यामें अपुष्ट कारण ते कार्य पुष्ट भयो ताते द्वितीय विभावना है ॥ ११५ ॥

नीकन अद्भुत बानि लई।
आपु न तजत गेह पर उरमें करवर शूल सई॥
वा चर खचर हारिगे वनचर होत न समता योग।
पय झष कनक रुद्र रँग तन्त्री सुब्र आदि भरभोग॥
याही ते सबको उपजावत सुख मद महा वियोग।
थिरनरहतइकथाननछांड़तसूरजअद्भुतलोग॥ ११६॥

उक्ति नायिका की सखी सों। तूने जो नीकन अक्षन ते अद्भुत बान लई है आप गेह नाहीं तजत पर उर में शूल सई करत है वा जल खचर आकाशचर वनचर मीन खंजन वनचर मृग समता नाहीं पावत पय नाम अमृत झष मीनकनक हाटक रुद्र रङ्ग लाल तंत्री वीणा सुब्र ख आदि वर्ण ते अमी हाला विष ते जरे हैं याही ते सबको उपजावत हैं सुखजीवन मद महा वियोग मरण थिर आप नाहीं रहत हैं अरु थान नहीं छांड़त यह अद्भुत बात है इनकी ॥ ११६ ॥

अदलपतिरिपुपितापतनी अब न जैहैं फेर।
वातसुतभ्राताअप्रिय के बिन स्वभाव न हेर॥
भानु तपन किसान गृह के रक्षपालक आद।
मध्य ठाढ़ो होत नन्दननन्द कर उन्माद॥

नदिन के उर ताल मारत महामार प्रयोग।
मरण देत न जियत सजनी गरक गाड़त रोग॥
सिन्धुरिपुहित तासुतनी भ्रात शिव कर जौन।
आदि कासों पढ़ो वैरी जान पर तन तौन॥
देख बिन मन करत आपुन देख बिन न रहात।
सूर शंकर करत भूषण जो जगत विख्यात॥
इन्द्र उपवन इन्द्र अरि दनुजेन्द्र इष्ट सहाइ।
सुन्न एक जु थाप कीन्हें होति आदि मिलाइ॥
उभय राशि समेत दिनमणि कन्यका ये दोइ।
सूरदास अनाथ के हैं सदा राखन होइ॥ ११७॥

उक्ति नायिका की सखी प्रति। अदल पार्वती पति रिपु काम पितापत्नी यमुना अत्र न जैहैं वातसुत भीम अप्रिय भ्रात कर्ण स्वभाव सखी बिन भानु तपन घाम किसान गृहरक्षक टाटी आदि वर्ण ते घाट के मध्य में नन्दनन्दन ठाढ़ो होत है नदी नाम नवन मिले ते नयन होत ताके उर में बाण मारत है महामार काम को प्रयोग करके तासों न मरण देत न जियन देत महारोग में गाड़त है सिन्धुरिपु अगस्त्य हित राम पत्नी भ्राता मङ्गल शिव कर त्रिशूल आदि ते मन्त्र कासों ऐसे पढ़ो है देखत तनु मन आपन करत है बिन देखे रहो नाहीं जात यामें शंकररूपक त्रिकाल को है इंद्रवन नंदन इंद्र अरि दनुज दनुजेन्द्र रावण ताके इष्ट शिव तिनको सहाय नन्दी सुन्न दै एक ते दश पाप ते नरक इनके आदि वर्ण ते नन्दनन्दन भये अरु उभय कहे दो राशि वृष दिनमणि सूर्य की पुत्री राधा ये दोइ हैं सूर के पालन॥ ११७॥

द्वितीय भाग

राग रामकली।

सारँग सारँगधरहि मिलावहु।
सारँग विनय करत सारँग सों सारँग दुख बिसरावहु॥
सारँग समय दहत अति सारँग सारँग तिनहिं दिखावहु। सारँग पति सारँग घर जैहै सारँग जाइ मनावहु॥ सारँग चरण सुभग कर सारँग सारँग नाम बुलावहु। सूरदास सारँग उपकारिनि सारँग मरत जियावहु॥ १॥

उक्ति नायिका की सखी सों। सारँग कही रामपूर ताको नांव रही श्रेष्ठ हिये की सारँग कहे गिरि ताके धरवैया कृष्ण तिनको मिलाव सारँग आकाश ताको नाम अनन्त सो अनन्त विनय करत हौं सारँग विष्णु तिनकी सौंह तोको सारँग सूर्य तिनको नाम तपन जो काम की ताप है सो बिसराय दे सारँग रात्री तामें दहै है अतिसारँग हृदय कमल जिनको जो सारँग कृष्णचन्द्र हैं सो दिखावहु सारँग दीप ताकी पति दीप्ति तासों घर जै है यह लोकोक्ति है कि दिया घर जैहै सारँग नेह मनावहु नाम मिलावहु सारँग नाम कमल हैं कर चरण जिनके सारँग नाम भ्रमर सो अलि बुलावहु सारँग मृग ताको नाम कुरङ्ग है कुरङ्ग की उपकारिनि! सारँग जो मैं तेरी सखी सो मरति हौं जियावहु॥ १॥

राग सारँग ।

अद्भुत एक अनूपम बाग । युगल कमल पर गज पर क्रीड़त तापर सिंह करत अनुराग ॥ हरि पर सरवर सर पर गिरिवर फूले कञ्ज पराग । रुचिर कपोत बसे ता ऊपर अमृत को फल लाग ॥ फल पर पुहुप पुहुप पर पल्लव तापर शुक पिक मृगमद काग । खञ्जन धनुष चन्द्रमा ऊपर ता ऊपर इक मणिधर नाग ॥ अङ्ग अङ्ग प्रति और और छवि उपमा ताको करत न त्याग । सूरदास प्रभु पियहु सुधारस मानो अधरनि के बड़ भाग ॥ २ ॥

अद्भुत एक अनुपम इति । उक्ति सखी की नायक सों दूती । हे प्राणनाथ! अद्भुत एक अनुपम बाग है सो चलिकै देखो द्वै चरण कमल हैं तिन पै गज गति राजै है तापै सिंह कटि है तापै सरवर नाभी तापै गिरि उरोज तापै फूल कञ्ज हाथ तापै कपोत कण्ठ तापै अमृत फल आम ठोढ़ी तापै पुहुप अधर तापै नूतन पल्लव ओठ तापर शुक नासिका तापै पिक वाणी तापै मृगमद रूपी काग अथवा मृगमद तिलक तापै खञ्जन नयन भौंह धनुष भाल चन्द्र तापै शीश फूल मणि वेणी नाग अरु और जो अङ्ग अङ्ग प्रति छवि है सो मेरो मन त्याग नाहीं करत तथापि मैं नाहीं कहि सकत हौं अथवा तिनकी उपमा तनु त्याग करै है सूरदास प्रभु चलहु सुधारस पियहु अधरन को भाग्य जानिकै ॥ २ ॥

राग रामकली ।

पद्मिनि सारँग एक मँझारि ।
आपुहि सारँग नाम कहावै सारँग बरनी वारि ॥

तामें एक छबीलो सारँग अध सारँग उनहारि।
अध सारँग परि सकलइ सारँग अध सारंग बिचारि॥
ता महिं सारँगसुत शोभित है ठाढ़ी सारँगभार।
सूरदास प्रभु तुमहूँ सारँग बनी छबीली नार॥ ३॥

पद्मिनि इति। उक्ति सखी की नायक सों। सारँग मेघ तासु नाम धाराधार ताके मध्य के वर्ण राधा सों राधा आप वो सारँग स्त्री नाम कहावै जापै सारँग चन्द्र सों मुख आधो चन्द्र सों सो आधा जो है चन्द्र-मुख तापै सकलै सारँग जो है राका शशि सो आधो जानो जाय है ताही मुख में सारँग सुत हरिण शावक तद्वत् नयन सोहै ठाढ़ी सारँग कहि शोभा के भार ने सूरदास प्रभु तुमहूँ सारँग सखी कहै है कि हे प्रभु! तुमहूँ रँगीले हो नारिहु छबीली है ताते मिलो॥ ३॥

राग रामकली।

विराजत अङ्ग अङ्ग रति बात।
अपने कर करि धरे विधाता षट खग नव जलजात॥
द्वै पतङ्ग शशि बीस एक फणि चारि विविध रँगधात।
द्वै इक बिम्ब बतीस वज्रकन एक जलज परथात॥
इकशायक इक चाप चपल अति चिबुकमें चित्तबिकात।
दुइ मृणाल मातुलऊ भै द्वै कदलि खम्भ बिनपात॥
एक केहरि इक हंस गुपुत रहै तिनहिं लग्यो यह गात।
सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको अति आतुर अकुलात॥ ४॥

विराजत इति। उक्ति सखी की नायिका सों। ताके अङ्ग अङ्गमें रति जो है प्रीति जाही की बात कहैं वार्ता सो है है अथवा बात कहे पवन पवन कहे मिलाप आपने हाथ करि विधाता ने बनायो है छः

पक्षी औ नव कमल द्वै सूर्य बीस चन्द्र एक नाग चारि रङ्ग धातु द्वै कुँदुरू एक कमल पर बसत हैं एक बाण एक चाप अति चञ्चल वामें चपल चित्त बिकाय जात है औ कमल दण्ड द्वै औ द्वै मतवारे द्वै कदली के खम्भ बिन पात एक सिंह औ एक हंस गुप्त तेही गात में हैं भौंर बार नयन खञ्जन शुक नासिका पिक स्वर कंठ कपोत हंस गति ये छः पक्षी चरण उरोज कर मुखनेत्र ये नव कमल तरवन द्वै सूर्य बीस नख चन्द्र चोटी सर्प सुवर्ण रङ्ग अङ्ग औरज तरङ्गहास ताम्र रङ्ग कर लालिमा लोह रङ्ग केश द्वै कुँदुरू अधर दन्त बत्तीस बज्रकन एक कमल में एक दृष्टि अथवा तिलक चाप भौंह बाहु द्वै कमलदण्ड मतवारे द्वै जङ्घ एक सिंह कटि एक चाल सो तुम्हारे मिलन के वास्ते अत्यंत आतुर ह्वै घबराय है ॥ ४ ॥

राग धनाश्री ।

मनसिज माधवे मानिनिहिं मारि है । ओट पर लव अर ततपर मौअर निरखि निमिष को तारि है ॥ किशलय कुसुम कुन्त सम शायक पावक पवन बिचारि है । द्रुमबल्ली पहँ दीपक युग बात्रि-जननि अनलप्रिय जारि है ॥ मवर जुएक चकृत चपरि कर भरि बन्दुख खग डारि है । पुनि पुनि बाज साज सुनि सुन्दरि त्रसित तिनहिं देखे मारि है ॥ विरह विभूति बढ़ी वनितव प्रशीश जटावन वारि है । मुखशशि शेष रह्यो सित मानौ भई तभो उन हारि है ॥ जौ न इते पर चलहु कृपानिधि तौ वह निज-

कर सारि है। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि तुम तजि काहि पुकारि है॥ ५॥

मनसिज इति। उक्ति सखी की नायक सों। मनसिज जो काम सो मान को मारि है त्रोट कही समय में "सूच्या भिन्ने पद्मपत्रे त्रुटिरिति विधीयते" सूची जो सुई ताकरि पुरइन को पात बेध्यो जाय तितने काल को 'त्रुटि' कहत हैं कइक त्रुटि को 'लव' होत है अरु कइक लव को 'निमिष' होत है अरु कइक पल की 'घरी' होति है सो त्रुटि लव के अंतर में तत्पर होकर मौअर कही मौन बाजा जे मौन ते बाज भई तनु कोप ते काल में मारि है अथवा प्रलय की बराबर होय है अर ततपर अर केहैं हठ तत्पर कहे युक्ति ताकी मोरनि कहे मेरनि तासों मुख तारिये कहे छोड़िये किशलय कहे पत्र कुसुम फूल ते दोनों कुन्त बरछा शायक तीर समान अरु पवन पावक समान हैं द्रुमवल्ली अरु दीप ये जे युग दोय हैं सो अनल जो अग्नि सो जारि है मौर कहे बउर तारूपी जो बधिक सो चपरि कै पक्षी की वाणी रूप आवाज़ करि है अरु पुनः पुनः वसंत में जो बाजा बजै है सोई जो बाजि घोड़ा तापर चढ़ि कै विरह विभूति जो बढ़ी है तासों बिरहिनी मानिनी जे हैं तिनके शीश के जे बार हैं तेऊ हो गये हैं जटा अरु मुख जो है शशि तासों शशिशेखर अनुमान करो है जो इतने पर चलो तो वह निजकरि सारि है हे रसिकशिरोमणि! जो तुम न चलिहौ तौ वह कौन को पुकारि है॥ ५॥

राग नटवर।

रसना युगल रसनिधि बोलि।

कनकबेलि तमाल अरुझी सुभुज बन्ध अखोलि॥

भृंगयूथ सुधाकरनि मनो सघनम आवत जात।
सुरसरी पर तरणितनया उमँगि तट न समात॥
कोकनद पर तरणि ताराडव मीन खंजन संग।
कीर तिल जे शिखर मिलि युग मनो संगम रंग॥
जलद ते तारा गिरत मानो परत पैनिधि माहिं।
युग भुजंग प्रसन्न मुख ह्वै कनक घट लपटाहिं॥
कनक सम्पुट कोकिला रव विवश ह्वै दे दान।
विकच कंज अनारँगिन पर लसित करत पै पान॥
दामिनी थिर घन घटावर कबहुँ ह्वै यहि भाँति।
कबहुँ दिन उद्योत कबहूँ होत अति कुहुराति॥
सिंह मध्य सनाद मणिगण सरस सर के तीर।
कमल मन बिन नाल उलटै कछुक तीक्षण नीर॥
हंस शाखा शिखर पर चढ़ि करत नाना नाद।
मकर निज पद निकट विहरत मिलन अति अहलाद॥
प्रेम हित करि क्षीरसागर भई मनसा एक।
श्याममणि के अङ्ग चन्दन अमी के अवशेक॥
सूरदास सखी सभा मिलि करत बुद्धि विचार।
समय शोभा लागि रही मनो सूम को संसार॥ ६॥

रसना इति। उक्ति सखी की सखी सों। युगल रसनिधि की जो है रसना सो बोलती है कनकबेलि जो नायिका अरु तमाल जो नायक तासों अरुझी है सुन्दर जो भुजा हैं तिन सों

गाँधि के भृङ्ग जो है केश सो सुधाकर मुख तिनमें सघन आवत जात है अरु सुरसरी जो माँग तामें तरणिजा यमुना सो पाटी तटन में नाहीं समाती अरु कोकनद कमल मुख तामें तरुणा सूर्य सो नृत्य करत है मीन खञ्जनरूपी नेत्र तिनके सङ्ग में औ कीर नासिका अरु तिल तिल जल स्नद शिखर ऊँचे पैसङ्गम में रङ्ग करे हैं अरु जलद मेघ केश तिनते तारे मुक्ता पैनिधि कुचपरत हैं अरु युगल भुज जापक के हाथ प्रसन्न मुख है कनक घट लपटाये हैं अरु कनक संपुट कुच कोकिलवाणी के बश कै अपने शरीर को दून करत हैं अरु फूलो कञ्ज मुख सो अधर नारङ्गी रस को पान करत है अरु दामिनी नायिका घन नायक कबहूँ थिर है है औ कबहूँ भूषण तनु के प्रकाश ते दिन होइ है अरु केशन के आच्छादन ते कबहूँ अमावस की राति होय है अरु सिंहकटि तामें शब्द करे है किङ्कणी सरस जो नाभी सर ताके तीर में अरु हंस जो नूपुर है सो नायक के कंध शिखर अग्रभाग तापर नाना शब्द करै है मकर जो मकराकृत कुण्डल नायक के सो निज पद श्रवणका जो लहररूपी लहर है तामें विहरत है अथवा नायिका की जो मीनरेख है पदन की सो नायक के श्रवण लहर लौं बिहरै है प्रेम के हित के वास्ते क्षीरसागर दोनों की मनसा एक भई है अरु श्याममणि के अङ्ग चन्दन नायक अंग को चन्दन है अवशेष बाकी सो अमृत है सब सखी मिलि ऐसी विचार करै हैं समय सार की शोभा सूर के उर में मानो लगि रही है ॥ ६ ॥

राग बिहागरो ।

लोचन लालच ते न टरे ।
हरि सारँग सों सारँग बींधे दधिसुत काज जरे ॥

ज्यों मधुकर वश परे केतकी नहिं ह्याते निकरे।
ज्यों लोभी लोभहि नहिं छाँड़त ये अति उमँग भरे॥
सन्मुख रहत सहत दुख दारुण मृग ज्यों नहीं डरे।
वह धोखे यह जानत है सब हित चित सदा करे॥
ज्यों पग फिरि फिरि परत प्रेमवश जीवन मुरझि मरे।
जैसे मीन अहार लोभ ते लीलत परे गरे॥
ऐसेहि गलुबन्धे हरि छवि पर जीवत रहत भिरे।
सूर सुभट ज्यों रण नहिं छाँड़त जबलों धरणि गिरे॥७॥

लोचन इति। उक्ति नायिका की सखी सों। हमारे लोचन लालच ते ना टरे हरि सारँग कहिये कुरङ्ग सों बींधे हैं दधिसुत कहे चन्द्र मुखचन्द्र देखिबे को जरत हैं आगे सुगम॥ ७॥

राग नटवर।

लोचन लालची भयेरी।
सारँगरिपु के रहत न रोके हरिस्वरूपागिधयेरी॥
काजर कुलफ मेलि मैं राखे पलक कपाट दयेरी।
मिलिमनदूतपैजकरिनिकसेबहुरिश्यामपैदौरिगयेरी॥
है आधीन पंच ते न्यारे कुल लज्जा न नयेरी।
सूरश्याम सुन्दर रस अटके है मनो उहँ इछयेरी॥८॥

लोचन इति। हमारे लोचन लालची भये हैं सारँग नाम दीपक ताको रिपु पट ताके रोके नाहीं रुकै हैं आगे सुगम॥ ८॥

राग बिहागरो ।

श्यामरङ्ग नैना राचेरी ।
सारँगरिपु ते निकसि निलज भये परकट ह्वै करना चेरी ॥
मुरली नाद मृदंग मृदंगी अधर बजावनहारे ।
गायन घर घर घेर चलावत लोभ नचावनहारे ॥
चंचलता निर्तनि कटाक्ष रस भाव बतावत नीके ।
सूरदास ये रीझे गिरिधर मनमाने उनहीं के ॥ ९ ॥

श्यामरङ्ग इति । हमारे नैना श्याम के रङ्ग में राचे हैं सारँग रिपु घूँघुट पट ताते निकसि निलज भये हैं आगे सुगम ॥ ९ ॥

राग बिलावल ।

देखो शोभा सिन्धु समात । श्यामा श्याम सकल निशि रसवश जागे होत प्रभात ॥ लै पाहनसुत कर सनमुख दै निरखि निरखि मुसुक्यात । अवरजु सुभग वेद जल जातक कनक नीलमणिगात ॥ उदित जराउ पंचतिय रवि शशि किरणि तहाँ मुदुरात । चंचल खग वसु अष्ट कंजदल शोभा बरणि न जात ॥ चार कीर पर पारस विद्रुम आज अलीगण खात । सुख की राशि युगल मुख ऊपर सूरदास बलि जात ॥ १० ॥

उक्ति सखी की सखी सों । देखो शोभा सिन्धु में समात है अर्थ शोभा सिन्धु है राधा श्याम को मुख श्यामा अरु श्याम सकल रात्री में रसबश ह्वै प्रभात जगे हैं पाहनसुत दर्पण सन्मुख

देखत हैं तामें यह अचरज है चार जलजात चन्द्र हैं दो मुख दो प्रतिबिम्ब औ कनक नीलमणि के गात चार दो बिम्ब दो प्रतिबिम्ब अरु उदित जड़ाऊ भूषण आठो दो तरयोना दो कुण्डल बिम्ब के चार प्रतिबिम्ब के चार तिनकी ज्योति सों रबि शशि छवि छपिजात है अरु चञ्चल पक्षी आठ नेत्रन के चार बिम्ब चार प्रतिबिम्ब अरु आठ कमल ठोढ़ीमुख ठकुराइन ठाकुर के चार बिम्ब चार प्रतिबिम्ब तिनकी शोभा नाहीं बर्णी जात अरु चार कीर नासिका दो बिम्ब दो प्रतिबिम्ब अरु पारस दशन विद्रुम ओठ सो अलीगण ओठ को काजर नायक ने नायिका नेत्र को चुम्बन कियो तब काजर लगो अरु वही मुख नायिका ने ताते नायक ने ऐसी जो सुख की राशि दूनों के मुख तिनपै सूरदास बलि जात हैं ॥ १० ॥

राग नट।

देखु सखी चारि चन्द एक जोर।
निरखति बैठि बिलम्बिनि पियसँग सूरसुता की ओर ॥
द्वै शशि श्याम नवल घन सुन्दर द्वौ कीन्हे विधि गोर।
तिनके मध्य चारि शुक राजत द्वै फल आठ चकोर ॥
शशी सुसंग प्रवाल कुन्दकलि अरुझि रह्यो मन मोर।
सूरदासप्रभुअतिरतिनागरबलिबलियुगलकिशोर॥ ११॥

देखु सखी इति। उक्ति सखी की सखी सों। हे सखि! देखु नायक नायिका यमुना कगार पर देखै हैं तासों चार चन्द्र देखि परै हैं दो बिम्ब दो प्रतिबिम्ब निरखत हैं विलम्बिनि जो नायिका सो पिया के सङ्ग बैठि सूर ओर तामें द्वै शशि नवीन घनवत् औ दोउ गोरे हैं श्याम बिम्ब प्रतिबिम्ब राधा मुख बिम्ब प्रति-

बिम्ब गोर तिनके मध्य चार शुक नासिकाबिम्ब प्रतिबिम्ब द्वै द्वै द्वै मिगार वृक्ष के फल तिल एक एक बिम्ब एक प्रतिबिम्ब अरु आठ चकोर नेत्र चार बिम्ब चार प्रतिबिम्ब शशि मुख प्रवाल अधर कुन्दकली दन्त ॥ ११ ॥

राग नट।

देखियेरी प्रकट द्वादश मीन। षट इन्दु द्वादश तरणि शोभित विमल उडुगण तीन॥ षट अष्ट अम्बुज कीर षट मुख कोकिला सुर एक। दश दोइ विद्रुम दामिनी षट तीनि व्याल विशेक ॥ त्रिवलि षट श्रीफल विराजत परसपर वरनारि। व्रजकुँवरि श्रीगिरिधर कुँवर पर सूरजन बलिहारि ॥ १२ ॥

देखिये प्रकट इति। उक्ति सखी की सखी सों। हे सखि! आज नायक नायिका दोनों के बिम्ब प्रतिबिम्ब ते द्वादश मीन देख परत हैं चार नेत्र चार आरसी में प्रतिबिम्ब ज्योतिन का बेंदा में प्रतिबिम्ब चार अरु छै इन्दु मुखबिम्ब के दो प्रतिबिम्ब के दो बेंदों में प्रतिबिम्ब के द्वादश सूर्य कुण्डल तरयोना चार औ चार प्रतिबिम्ब औ चार बेंदों में प्रतिबिम्ब अरु बेंदा तीन उडुगण बेंदा एक प्रतिबिम्ब एक बेंदा में प्रतिबिम्ब एक अरु षट अष्ट अड़तालीस कमल हैं दो दो चरण दो दो कर दो दो ठोढ़ी मुख ये दोनों के सोरह बिम्ब सोरह प्रतिबिम्ब औ सोरह बेंदा में प्रतिबिम्ब इस तरह सोरहातियें अड़तालीस कमल अरु कीर षट दोनों की नासिका औ प्रतिबिम्ब औ बेंदा में प्रतिबिम्ब औ कोकिल वाणी एक अरु बारह विद्रुम अधर चार प्रतिबिम्ब चार बेंदा में प्रतिबिम्ब चार अरु दामिनि छै

दशन चमक २ प्रतिबिम्ब २ बेंदा में प्रतिबिम्ब २ औ व्याल तीन वेणी एक प्रतिबिम्ब १ बेंदा में प्रतिबिम्ब १ त्रिबली ६ दो बिम्ब दो प्रतिबिम्ब दो बेंदा में प्रतिबिम्ब श्रीफल ६ द्वै कुच द्वै प्रतिबिम्ब दो बेंदा में प्रतिबिम्ब ॥ १२ ॥

राग कान्हरो।

विधुबदनी अरु कमल निहारै। सुमनासुत लै कमल सुमंजित धनपति धाम को नाम सँवारै ॥ तरणि तात वनितासुत ता छवि कमलनि रचि रचि ग्रन्थि सँवारै। कमल कमल पर रेख बुतावति सारँग रिपु पाहन गनिठारै ॥ उर हारावलि मेलति कमलनि मनहुँ इन्दु पारस ढिग पारै। सूरश्याम के नामहि जीतन कमलापति के पदहि विचारै ॥ १३ ॥

विधुवदनी इति। उक्ति सखी की सखी सों। हे विधुवदनी! कमल निहारै है सुमना जो है चमेली ताको सुत जो है तेल ताहि लै कमल मुख में लगाय धनपति कुबेर ताको धाम अलका सो अलक केश सँवारे है अरु तरणि सूर्य ताके तात कश्यप ताकी स्त्री कद्रू ताके पुत्र पन्नग केश सँवारे है कर कमलन ते गांठ लगावत अर्थ वेणी गूँथत है अरु कमल नयन में कमल कर सों काजर देत है अरु सारँग दीप ताको शत्रु पट पाहन मणी तिनसों गांथि कै ओढ़े है उर में हारावलि मेलै है कर कमलन सों मानों इन्दु जो चन्द्रमा सोई है हारावलि अरु पारस कुच तिनके ऊपर पहिरे है ॥ १३ ॥

राग सोरठ।

राधे हरि रिपु क्यों न छिपावति। मेरुसुता पति ताके पति सुत ताको क्यों न मनावति॥ हरिवाहन ता वाहन उपमा सो तैं धरे दृढ़ावति। नव अरु सात बीस तोहिं शोभित काहे गहरु लगावति॥ सारँग वचन कह्यो करि हरि को सारँग वचन निभावति। सूरदास प्रभु दरश विना तुव लोचन नीर बहावति॥ १४॥

राधे हरिरिपु इति। हरि सूर्य ताको रिपु तम जो है कोप ताहि काहे नहीं दूरि करै है मेरुसुतापति महादेव ताके पति विष्णु ताके सुत प्रद्युम्न कहे काम ताहि काहे नहीं मनावै है हरि वानर ताको वाहन वृक्ष तासु वाहन पृथ्वी ताकी बराबरी मान को धरि कै अथवा हरिवाहन गरुड़ ताके बहावन पक्ष तू पक्षाधरि दृढ़ाव्रत काहे को दृढ़ावै है नव सात सोरह शृङ्गार ते ताको विष से लगै हैं अरु सारँग बाण ऐसे वचन हरि सों कहै है अरु सारँग कहे अमृत ऐसे वचन काहे नहीं भावत है तो बिन नायक नयन ते नीर बहावै है॥ १४॥

राग नट।

राधे हरि रिपु क्यों न दुरावति।
शैलसुतापति तासुसुतापति ताके सुतहि मनावति॥
हरिवाहन शोभा यह ताकी कैसे धरे सुहावति।
द्वै अरु चार छहौवै बीते कहि क्यों गहरु लगावति॥

नव अरु सात ये जु तहँ शोभित तैं तू कहि क्यों दुरावति।
सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन को श्रीरँग रँग भरि आवति १५

राधे हरिरिपु इति। सखी की उक्ति। हरि कहे चन्द्रमा को रिपु कमल ताहि क्यों नहीं दुरावै है चन्द्रवदन को खोलि कै शैल-सुता नदी तिनको पति समुद्र ताकी सुता सीप ताको पति स्वाती को जल ताको सुत मुक्ता ताको अर्थ बिछोह ताहि मनावति है अथवा शैलसुतापति समुद्रसुतापति विष्णु सुत काम हरि जो हैं सूर्य ताको वाहन अश्व ताकी शोभा घूँघुट ताको धरि कैसे सुहावै है द्वै अरु चारि छः छः बारह मुहूर्त्त बीते अब क्यों देर करै है नव सात सोरह शृंगार जिन अंगन माहिं शोभित होत हैं तिन्हैं क्यों छपावै है ॥ १५ ॥

राग सारंग।

राधे हरिरिपु क्यों न दुरावति। सारँगसुतवाहन की शोभा सारँगसुत न बनावति॥ शैलसुतापति ताके सुतपति ताके सुतहि मनावति। हरिवाहन के मीत तासुपति ता पति तोहिं बुलावति॥ राकापति नहिं कियो उदो सुनि या समये नहिं आवति। विविध विलास अनन्द रसिक सुख सूरश्याम तेरे गुण गावति॥ १६ ॥

राधे हरिरिपु इति। सखी की उक्ति। राधे हरि विष्णु तिनको रिपु मधु मधु कहे मान सो क्यों न दुरावति सारँग जल ताके सुत चन्द्रमा ताको वाहन मृग ताकी शोभा है जिनपै ऐसे

नेत्र तिनमें सारँग दीप ताको सुत काजर ताहि क्यों नहीं लगावति शैलसुता नदी ताके पति समुद्र ताको सुत चन्द्रमा ताको पति सूर्य ताको सुत शनीचर तासु नाम मन्द सो मन्दता मनावति है हरि इन्द्र तासु वाहन मेघ ताको मीत जल ताको पति वरुण ताको पति कृष्ण सो बुलावै हैं ॥ १६ ॥

राग नट ।

राधा तैं बहु लोभ कस्यो । लावन रथ ता पति आभूषण आनन ओप हस्यो ॥ भृकुटि को दण्ड अवनि धरि चपला विवश ह्वै कीर अस्यो । पिक मृणाल अरि ताअरि रूप सम ते वपु आप धस्यो ॥ जलचरगति मृगराज सकुचि जिय शोचन जाइ पस्यो । सूरदास प्रभु को मिलि भामिनि निशि सब जात टस्यो ॥ १७ ॥

राधे तैं बहु इति । हे राधे ! तैं बहुत लोभ कस्यो है लावन रथ बैल ताके पति महादेव ताको आभूषण चंद्रमा की शोभा मुख सों हरि लीन्हीं है भृकुटी ते कोदंड वेणी ते अवनी धर सर्प छवि ते चपला नासिका ते कीर विवश होय गये हैं वाणी ते पिक भुज ते मृणाल अरु गति ते गज अरु ताको अरिग्राह सो ग्रहण किये दृगन ते जलचर मीन अरु कटि ते सिंह ये सकुच करि जिय में जरे जाय हैं ॥ १७ ॥

राग नट ।

कहि पठई हरि बात सु चित दै सुनि राधिका सुजान । तैं जु वदन झांप्यो झुकि अंचल इहै

न दुख मेरे मन मान ॥ यह पै दुसह जु इतनेहि अन्तर उपजि परै कछु आन। शरदसुधा शशि की नवकीरति सुनियत अपने कान ॥ खंजरीट मृगमीन मधुप पिक कीर करत हैं गान। विद्रुम अरु बन्धूक-बिम्ब मिलि देत कविन छवि दान॥ दाड़िम दामिनि कुन्दकली मिलि बाढ़्यो बहुत बखान। सूरदास उपमा नक्षत्रगण सब शोभित बिन भान॥ १८॥

कहि पठई इति। सखी की उक्ति नायिका सों। जो हरि ने कहि पठई सो चित दै सुनो हे राधे! जो तैं वदन झुकि कै झांप्यो है सो दुख मेरे मन में नाहीं है परन्तु यह दुख है शरद् का जो शशि है ताकी नवीन कीरति अपने कान ते सुनि परै है तो मुख प्रकाश बिन अरु खञ्जरीट मृग मीन मधुप ये गुण गान करत हैं तो दृग खुले बिना अरु विद्रुम दुपहरिया कुंदुरू ये मिलि कै कविन को छवि को दान देत हैं तेरे अधर के रंग फैले बिन दाड़िम दामिनि कुंदकली इनको बखान होत है तो दशन की दमक विना अरु नक्षत्रन के गण सब शोभायमान होत हैं तो भूषण भानु बिन॥ १८॥

राग सारँग।

रही दे घूँघट पट की ओट।
मनों कियो फिरि मान मवासो मनमथ बिकटे कोट॥
नहसुत कील कपाट सुलक्षण दै दृग द्वार अकोट।
भीतर भाग कृष्ण भूपति को राखि अधर मधुमोट॥

अञ्जन आड़ तिलक आभूषण सचि आयुध बड़ छोट।
भृकुटी सूर गही कर सारँग निकर कटाक्षनि चोट ॥१९॥

रही दे इति। सखी की उक्ति नायिका प्रति। हे राधे! तू जो घूँघुट के पट की ओर कर रही है सो कैसी है मानों मानरूपी जो गढ़ विकट है तामें मनमथ बैठो नह के अग्रभाग ते पट पकरे है सोई कील है औ सुलक्षणवान् को लक्षण सोई कपाट द ो है दृग द्वार बिषे अकोट कोट के भीतर को कोट अरु भीतर के भाग में कृष्ण जो भूपति हैं तिनको भाग जो अधर रस ताकी मोट कहे गठरी अंजन अरु आड़ अरु तिलक अरु और आभूषण छोटे अरु बड़े ते करे हैं जिन हथियार अरु भृकुटी कुटिल जोहै सोई सारँग कमान औ कटाक्ष जोहै सोई बाण लगाइ बैठो है॥ १९॥

राग बिलावल।

सारँगरिपु की ओट रहे दुरि सुन्दर सारँग चारि। शशि मृग फणिग धुनिग दोउ अँग अँग सारँग की अनुहारि॥ तामें एक अवर सुत सारँग बोलक बहुरि बिचारि। परकृत एक नाम है दोऊ किधौं पुरुष किधौं नारि॥ ढाँकति कहा प्रेमहित सुन्दरि सारँग नेक उघारि। सूरदास प्रभु मोहे रूपहि सारँग वदन निहारि॥ २०॥

सारँग इति। सखी की उक्ति नायिका सों। सारँग दीप ताको रिपु पट ताकी ओट दुरि रहे हैं चारि सारँग शशि १ मृग १ फणिग १ धुनिग १ सो तिनमें जो दो सारँग हैं ते अंग अंगी के

अनुहार हैं मुख मृग अंग नेत्रन ने सारँग जो कमल ताकी अनुहार मुख कमल वर्णन है औ दृगन को कमल वर्णन है औ तामें एक और सारँग को सुत है सारँग नाम कोकिला तद्वत् वाणी सुत कहने से अति मधुर बोलै है अरु पर कृत एक सर्प वेणी सो तामें उपमा दोनों की है सर्प अरु सर्पिणी की सो ढाँकति काहे है ये चारों चार सारँगऊ उघार सूरदास मोहै हैं तिनको सारँग नाम चन्द तिनको निहार ॥ २० ॥

राग बिलावल।

तैं जु नीलपट ओट दियोरी। सुनि राधिका श्यामसुन्दर सों बिनहिं काज अति रोस कियोरी॥ जलसुत बिम्ब मनहुँ जल राजत मनहु शरद शशि राहु लियोरी। भूमिघिसन किधों कनक खम्भ चढ़ि मिलि रस ही रस अमृत पियोरी॥ तुम अति चतुर सुजान राधिका कत राख्यो भरि मानु हियोरी। सूरदास प्रभु अँग अँग नागर मनों काम कियो रूप बियोरी॥ २१ ॥

तैं जु इति। सखी की उक्ति नायिका सों। हे नायिके! तैंजु नील कपट ओट दियो है अरु बिन अपराध रोष कियो है नायक सों नील पट कैसो लगै है मानो जलसुत कमल ताको बिम्ब जल में परो है कै शरदचन्द्र राहु ने ग्रस्यो है अरु भूमिघिसन सर्प अथवा यमुना सो कनक खंभ पर चढ़िकै रसे रसे मानों अमृत पान करै है तू अति चतुर है काहे को मानहीं में भरि राख्यो है सूर प्रभु अँग अँग नागर प्रवीण कैसे हैं जैसे दूसरो काम॥ २१॥

राग नट ।

राधे तेरे रूप की अधिकाई। जो उपमा दीजै तेरे तनु तामें छवि न समाई ॥ सिंह सकुचि सर बिथा भरत दिन बिन सोइ नीर सुकाई । शशि उर चढ़त प्रेमपावक परि बंक कुसुम रहे कुम्हिलाई ॥ इभ तूटत अरु अरुण पंक भये विधिना आन बनाई । कद्रुज पै सियता लै लै रहे खगपति हरिवाहन भये जाई ॥ हंस दुरयो सर दुरयो सरोरुह गज मृग चले पराई। सूरदास विचार देखु मन तो रसना पिक रहे लजाई ॥ २२ ॥

राधा तेरे इति। हे राधे ! तेरे यह रूप की अधिकाई है जो उपमा दीजिये ताकी छवि न्यून हो जाती है तेरी कटि देखि सिंह सकुचै है सरोवर तेरी नाभि देखि व्यथा भरै है नीर सूखे जात हैं चन्द्रमा घटिजात है औ हिये में आग जरै है तेरो मुख देखि चंपक को फूल तनु देखि कुँभिलाय गयो है इभ जो है हाथी सो तेरी गति देखि लज्जित होत है अरु पंकमय जो भये हैं कमल ते तेरे कर देखि लज्जित भये कद्रुज जो सर्प सो तेरी वेणी देखि सिकुरि गये हैं अरु खगपति जो है गरुड़ सो अपने वर्ग की पराजय देखि शुक, कपोत, कीर नासिका कंठ ते संकोच मानि हरि वाहन भयो है अरु हंस सर में दुरे हैं अरु कमल नील अरु मृग नेत्र देखि पराय गये हैंसो तू विचार रसना के रस ते पिक लजाइ गये हैं ॥ २२ ॥

राग सारंग ।

राधे यह छवि उलटि भई ।
साँरग ऊपर सुन्दर कदली तापर सिंह ठई ॥

ता ऊपर द्वै हाटक बरणो मोहन कुम्भ मई।
तापर कमल कमल बिच विद्रुम तापर कीर लई॥
ता ऊपर द्वै मीन चपल हैं सउँरति साध रही।
सूरदास प्रभु देखि अचम्भौ कहत न परत कही॥२३॥

राधे यह छवि इति। सखी की उक्ति नायिका सों। हे राधे! यह छवि उलटि भई है सारँग कमल तापर कदली कमल चरण कदली जंघा तापर कटि सिंह तापर द्वै हाटक के कुंभकुच तापर कमलमुख ताके बीच में विद्रुम अधर ताके ऊपर कीर नासिका ताके ऊपर द्वै मीन नैन ताके सुमिरन में लालसा नाहीं पूर्ण हात ऐसो अचंभौ देखि कही नहीं जाइ है॥ २३॥

राग बिलावल।

जलसुत प्रीतमसुत रिपुबन्धव आयुध आपुन बिलख भयोरी। मेरुसुता पति बसत जु माथे कोटि प्रकाश रिसाइ गयोरी॥ मारुतसुत पति अरि पुर-वासी पितुवाहन भोजन न सोहाई। हरसुत वाहन अशन सनेही मानहुँ अनल देह दौलाई॥ उदधि-सुतापति ताकर वाहन कैसे समुझावै। सूरश्याम मिलि धर्मसुवन रिपु ता अवतारहि सलिल बहावै॥२४॥

सखी की उक्ति। जलसुत कमल ताको प्रीतम सूर्य ताको सुत कर्ण ताको रिपु अर्जुन ताको बन्धु भीम ताको अस्त्र गदा कहे रोग बिलखि करि भयो है अरु मेरुसुतापति महादेव तिनके माथे में बसत है चन्द्र ताको प्रकाश है सो तेरे मुख ते गयो है मारुतसुत

हनुमान् ताके पति राम ताको रिपु रावण ताकी पुरी लङ्का तामें बसत हैं अगस्त्य तिनको पिता कुम्भ ताको वाहन जल सो जल औ भोजन नाहीं सुहाय है हर कहे महादेव तिनको पुत्र स्वामि-कार्तिक ताको वाहन मोर ताको अशन सर्प ताको हित पवन सो आगसी जरावै है उदधिसुतापति विष्णु ताको वाहन गरुड़ ताको नाम वैनतेय वचन ते कैसे समुझावै धर्मसुतन युधिष्ठिर ताको वैरी दुर्योधन ताको अवतार दुश्शीलता सो आँस बहावै है ॥ २४ ॥

राग बिलावल।

उठु राधे कत रैनि गँवावै। महिसुत गति तजि जलसुत गति तजि सिन्धुसुतापति भवन न भावै ॥ अलि वाहन को प्रीतम बाला ता वाहन रिपु ताहि सतावै। सो निवार चल प्राणपियारी धर्म सुनहिं मति भाव न पावै ॥ शैलसुता सुत वाहन सजनी ता रिपु ता मुख शब्द सुनावै। सूरदास प्रभु पंथ निहारत तोहिं ऐसो हठ क्यों बनि आवै ॥ २५ ॥

उठु राधे इति। सखी की उक्ति। हे राधे! रैनि काहे को गँवावै है महिसुत वृक्ष ताकी गति जड़ जलसुत जोंक ताकी गति ढिठाई ताको छोड़ सिन्धुसुतापति कृष्ण तिनको घर तोहिं नाहीं भावै है अलि भ्रमर ताको वाहन कमल ताको प्रीतम समुद्र ताकी बाला गङ्गा ताके वाहन महादेव तिनको रिपु काम सो तोको सतावै है हे प्राणप्यारी! सो तू निवार धर्म जामें नहीं है ऐसो को दुर्योधन ताकी मति मान सोई भावै है शैलसुतासुत षडानन तिनको वाहन मयूर ताको रिपु सर्प ताके मुख में है विष सो विष सों वचन सुनावै है ॥ २५ ॥

राग सारँग।

जनि हठ करहु सारँगनैनी। सारँग शशि सारँग पर सारँग ता सारँग पर सारँग बैनी॥ सारँग रसन दसन गुनि सारँग सारँग सुत दृग निरखनि पैनी। सारँग कहौ सु कौन विचारो सारँगपति सारँग रचि सैनी॥ सारँग सदनहिं ले जु वरुण गइ अजहुँ न मानति गति भइ रैनी। सूरदास प्रभु तुव मग जोवै अन्धक रिपु ता रिपु सुखदैनी॥ २६॥

जनि हठ करहु इति। उक्ति सखी की नायिका सों। हे सारँग नैनी मृगनैनी! सारँग कमल चरण तिन पै शशि नख सारँग शशि अरु सारँग सिंह ताकी सी गति तापर फेरि सारँग कटि तापर सारँग सर नाभी हे सारँग बैनी पिकबैनी! सारँग नाम जल तासु नाम सुधासी है रसना अरु सारँग कही बिजुरी तद्वत् गुण हैं दशन में अरु सारँग कही मृग ताके सुत के गुण हैं दृगन में अरु सारँग कहे अलि नाम सखी ताको कहो काहे नहीं विचारै है सारँग पति जो कृष्ण हैं सो सारँग कमल ताकी सेज बिछाय बैठे हैं सारँग कही चन्द्र ताहि वारुणी कहे पश्चिम दिशा ले गई अन्धकरिपु शिव ताको रिपु काम ताके सुख की दीबेवारी हौ॥ २६॥

राग नट।

राधे जल सुत कर जु धरे। अति ही अरुण अधिक छवि उपजति तजति हंस सगरे॥ चुनत चकोर चले हो सन्मुख भभकित रहे खरे। तब हँसि कै वृषभानु-नन्दिनी दोउ मिलि भगरे॥ रवि अरु शशि

दोऊ एकै रथ सन्मुख आनि अरे। सूरदास प्रभु कुंज-विहारी आनँद उमँग भरे ॥ २७ ॥

राधे जल इति। जलसुत चन्द्र तैसो मुख तामें कर धरे है सो अत्यन्त अरुण छवि भई है ताहि देखि हंस तजै हैं औ चुनबे को चकोर सम्मुख चले हैं औ झझकि के खरे रहे जहां हंस औ चकोर दोऊ मिलि भ्रम सों झगरै है तब राधा हँसै है रवि शशि दोऊ एकै रस में आनि अरे हैं श्रीकृष्ण आनन्द की उमङ्ग सों भरे हैं ॥ २७ ॥

राग नट।

देखे चार कमल इक साथ। कमलहि कमल गहे लावति है कमलहि मध्य समात॥ सारँग पर सारँग खेलत है सारँग ही सों हँसि हँसि जात। सारँगश्याम और हू सारँग सारँग सों करै बात ॥ अरि सारँग राखि सारँग को सारँग गहि सारँग को जात। तौलौं राख सारँग सारँग को सारँग लै आऊँ हाथ ॥ सोइ सारँग चतुरानन दुर्लभ सोइ सारँग शम्भु मुनि ध्यात। सेवत सूरदास सारँग को सारँग ऊपर बलि बलि जात॥ २८॥

देखे चार कमल इति। सखी की उक्ति सखी प्रति। हे सखि! आज चार कमल देखु नायिका के कुच कमल दो औ कृष्ण के कर कमल दो अरु कमल को कमल गहे ते जो कृष्ण के करकमल जिन्हें कुच कमल गहे हैं तिन करन को राधा के जो कर कमल हैं ते गहि कै रोकत हैं कमल कर कमल में समात हैं जुदे नाहीं जाने जात अरु सारँग नाम चन्द्रवदन कृष्ण को सो

राधा के चन्द्र वदन पै खेलै है अरु ताही सारँग मुखसों हँसि हँसि जात है अरु सारँग जो श्याम कमल नेत्र सो औरहू सारँग कहे लाल कमल भये हैं औ सारँग जो कृष्ण के कमल नयन हैं तिन सों बातैं करै हैं कहे इशारा करै हैं अरु सारँगअरि जो पट ताकी ओट तू राख नायक नायिका को काहे सारँग जो रात्री औ सारँग जो चन्द्र ताको लेकै गयो चाहै है तौलौं राख सारँग नाम सखी सारँगदीप को जौलौं सारँग नाम नेह लै आऊँ जे सारँग राधाकृष्ण चतुरानन ब्रह्मा तिनको दुर्लभ हैं जिन सारँग को शम्भु मुनि ध्यान धरै हैं तेई सारँग को सूर नित ध्यावै है औ सारँग जे चरण कमल तिन पै बलि बलि जाइ है ॥ २८ ॥

राग नट ।

हरि उर मोहन बेलि लसी ।
तापर उरग ग्रसित तब शोभित पूरण अंश शसी ॥
चापित कर भुजदण्ड रेख गुण अन्तर बीच कसी ।
कनक कलश मधुपान मनो कर भुज निज उलटि धसी ॥
तापर सुन्दरि अंचर झांप्यो अंकित दंसतसी ।
सूरदास प्रभु तुम हिं मिलत जनु दाड़िम बिगसि हसी ॥ २९ ॥

हरि उर इति । उक्ति सखी की । हरि श्रीकृष्ण तिनके उर पै राधा जोहै मोहन बेलि सो शोभै है ता मोहनबेलि के ऊपर उरग जो है वेणी सो पूर्ण शशिमुख ताको ग्रसै है चापै है ताको गुण सूत्र सो अन्तरतर के बीच में कसी है सो मानों कनक कलश जो कुच हैं तिनके मधुपान करिकै निज भुज में धँसी उलटि कै तापै सुन्दर अञ्चल जा ढाँप्यो है सो दंसतसी अङ्कित कहे जाहिर

होय है सो सूरदास प्रभु के मिलत मानों दाड़िम जो अनार सो बिगसो ऐसी हँसी है ॥ २९ ॥

राग नट।

उर पर देखियत शशि सात।
सोवत हूती कुँवरि राधिका चौंकि परी अधरात ॥
खण्ड खण्ड होइ गिरे गगन ते वासपतिन के भ्रात।
कै बहु रूप किये सारँग ते दधिसुत आवत जात ॥
विधु बिहुरे विधु किये शिखण्डी शिव में शिवसुत जात।
सूरदास धारै को धरणी श्याम सुनो यह बात ॥ ३० ॥

उर पर इति। सखी की उक्ति नायक सों। देखिये शशि सात को अर्थ शशि १ सात ७ आठ कहे नाग कहे केश ते करौटक्रिया सों ऊपर पर परे हैं तासों सर्प भय ते राधा चौंकि परी आधी राति में गगन शीश ताते खण्ड खण्ड कहे अनेक भाग है गिरे वासपति नाग तिनके भय है मानों सो वह रूप की मार्ग में दधिसुत चन्द्र चन्द्र कहे मुख तापै आवै है विधु कहे मुख ताके बिषे बिहुरे ज बार ते शिखण्डी कहे मयूर ताको विधु किये है अर्थात् मोर चन्द्ररूपी मुख करे हैं औ शिव जो उरोज तिनमें शिवसुत कहे स्वामिकार्त्तिक जात हैं हे श्याम ! ऐसी धरन कौन धरि सके अर्थ कोई न अथवा शशि कहे १ सात तो एक के ऊपर सात ऐसे करके सत्रह शत्रु नाम रिपु सुतपत्नी राधिका स्वप्न में देखि चौंकि परी ताके दुःख सों खण्ड खण्ड कैके गिरे गगन ते कहे ऊपर ते वासप कहे आँशु औ तिनके भ्रात प्रस्वेद कनकै मानों बहुत रूप करिकै दधिसुत चन्द्र मुख ताकी राह आवत है जात कहे आँशू विधु जो मुख ताते बिहुरे कहे फैले आँशू सो शिखण्डी कहे मोरवारी बेसर तामें शिवसुत

कहे कृतमुख मुखकृत शिव जो हैं कुच तामें जात है कहे प्राप्त होत है सो हे श्याम ! यह बात सुनो धरणी क्षमा सो क्षमा को कैसे धरै ॥ ३० ॥

राग बिलावल ।

आज वन राजत युगल किशोर ।
दशनवसनखण्डितमुखमण्डित गण्ड तिलककछुथोर॥
डगमगात पग धरत शिथिल गति उठे कामरस भोर।
रति पति सारँग अरुण महा छवि उमँगि पलक लगे भोर ॥
श्रुति अवतंस विराजत हरिसुत सिद्ध दरश सुत ओर ।
सूरदास प्रभु रसवश कीन्ही परी महारन जोर ॥ ३१ ॥

आज वन इति । सखी की उक्ति सखी सों आज वन में राधाकृष्ण राजे हैं दशन वसन कहे अधर ते खण्डित हैं मुख मण्डित कहे शोभित है औ गण्ड कहे कपोल ता बिषे तिलक थोर राजत है पग डगमगाइ हैं शिथिल गति है कामकेलि करि भोर उठे हैं रतिपति कहे काम ताकी केलि सों सारँग कहे नयन सो महाछवि अरुण भये सो उमङ्ग निद्रा सो पलक पलक लगै है औ भोर कहे खुले हैं श्रुति भूषण है हरिसुत कहे गजमोती सिद्ध सो दरश अमावास्या है ताको सुत अन्धकार केश ताकी ओर कहे बीच में ॥३१॥

राग केदारा ।

आज तनु राधे सज्यो शृँगार । नीरज सुत-सुतवाहन को भख श्याम अरुण रँग कौन विचार ॥ मुद्रापति अँचवन तनयासुत उरहि बनावहि हार । गिरिसुत तिन पति विवश करन को अक्षत लै

पूजत रिपुमार॥ पन्थ पिता आसन सुत शोभित श्याम घटा वन पंक्ति अपार। सूरदास प्रभु अंशुसुता तट क्रीड़त राधा नन्दकुमार॥ ३२॥

आज तनु इति। सखी की उक्ति सखी सों। कि हे सखि! आज राधे ने तनु में शृंगार साजे हैं नीरज कमल ताको सुत ब्रह्मा ताको पुत्र शिव तिनको वाहन बैल ताको नाम गो कही पक्षी मोर ताको भख सर्प हैं सो श्याम अरुण रेशम के गुण गुहे विचार नाम देख मुद्रापति अगस्त्य अँचवन समुद्र सुता सीप ताको सुत मोती ताके उरमें हार पहिरे हैं गिरिसुत वृक्ष पति कामतरु सो काम अतिशय उत्कर्ष करिबे को मानों ये मुक्ता नाहीं हैं अक्षत लै त्रिपुरारि पूजत है पन्थ वेद पिता ब्रह्मा आसन हंस हंस कहे सूर्य तिनके पुत्र सुग्रीव सुन्दर जो ग्रीवा है सो पोत करिकै सो श्याम घटा की पङ्क्तिअपार हो रही है सूरदास के प्रभु अंशु सुता जो यमुना ताके तट में क्रीड़त हैं॥ ३२॥

राग ललित।

देखु सखी साठि कमल इत जोर। बीस कमल परकट देखियत तहँ राधा नन्दकिशोर॥ सोरह कला सँपूरन मोहो व्रज अरुणोदके भोर। तामें सखी द्वैक मधु लागि रहे चितवत चारि चकोर॥ मनु मन द्वै गजराज अरे हैं कोटि मदन मै मोर। सूरदास बलि बलि या छवि की अलकन छकी झकझोर॥ ३३॥

सखी की उक्ति सखी सों । कि देख सखी साठि कमल एक जोर हो रहे हैं बीस बिम्ब बीस प्रतिबिम्ब बेंदा प्रतिबिम्ब बीस तामें बीस प्रकट देखियत हैं राधाकृष्ण के राधा के ११ चरण २ कुच २ कर २ मुख १ नासारंध्र २ नेत्र २ कृष्ण के ६ उरोज दो छोड़ ऐसे बीस अरु सोरह कला चन्द्रमुख अरुणोदय करे तामें हे सखि ! दो दो अधर मधु लगरहे हैं अरु चार चार चकोर चितवै हैं अरु मानों दो गजराज शुण्ड जङ्घा सों अरे हैं मदन महावत के भय ते सूर या छबि की बलिहारी ॥ ३३ ॥

राग कान्हरा ।

शोचति राधा लिखति नखन में वचननि कहत कण्ठ जल तास । क्षिति पर कमल कमल पर कदली पङ्कज कियो प्रकास ॥ तापर अलि सारँग प्रति सारँग रिपु लै कीनो बास । तहँ अरिपन्थ पितायुग उद्दित वारिज विविरँग भजो अभास ॥ सारँगमुख ते परत अम्बु ढरि मनु शिव पूजति तपति विनास । सूरदास प्रभु हरि विरहा रिपु दाहत अङ्ग दिखावत बास॥३४॥

शोचति इति । सखी की उक्ति नायक प्रति । कि राधा आज शोचति नख ते भूमि खनत है कण्ठ गद्गद ह्वै गयो है बात नहीं कहत अचल हो रही है क्षिति पर कमल पद तापर कदली जंघा कंज उरोज तापर अलि श्यामता तापर सारँग कपोत कंठ तापर सारँग कमल मुख तापर सारँग रात्री ताको रिपु दुपहरिया को फूल ताके ऊपर पंथअरि यमुना अलक ता पै यमुना के पिता सूर्य सो ताटंक तापर वारिज विवश कपोल अरु सारँग खंजरीट नेत्र तिनते जल गिरै है सो मानों ताप दूर करिबे को शिव ऊपर

ढारे हैं सूरदास प्रभु हरि हे विरह के रिपु ! वास जो निवास सो अंग को दाहै है ॥ ३४ ॥

राग मलार।

सखी री हरि बिन हरि दुख भारी। सिंह को सुत हर भूषण ग्रसि ज्यों सोइ गति भई हमारी ॥ शिखर बन्धु अरि क्यों न निपारत पुहुप धनुष लैकै बीशख। चक्षुश्रवा उरहार ग्रसी ज्यों क्षण दुतिया वपु रेख ॥ घटसुत अशन समयसुत आनन अमी गलित जैसे मेत। जलधर व्योम अम्बुकन मुस्रत नैन होड़ बदि लेत ॥ यदुपति प्रभु मिलि आनि मिलावहु हरिसुत आरत जानि। जैसे हरि करि बन्धु प्रकट भये तैसे तुम हरि आरति मानि ॥ षटआननवाहन कानन में घन रजनी तहँ वासी। सूरदास प्रभु चतुर शिरोमणि सुनि चातक पिक त्रासी ॥ ३५ ॥

सखी री इति। नायिका की उक्ति सखी सों। हे सखि ! हरि विना हमारे दुःख को हरै सिंह को सुत राहु अरु हर भूषण चन्द्रमा को ग्रसै है तैसे हमारी गति भई है शिखर जोहै कैलास ताको बंधु प्रिय शिव तिनको अरि काम सो पुष्प धनुष लैकै बहुत पीड़ा देत है चक्षुःश्रवा सर्पवत् उर को हार भयो है या वपु शरीर की रेख क्षीण करे है अरु घटसुत अगस्त्य ताको अशन समुद्र ता बरोबर ता समय भयो है अरु ताको सुत चन्द्र जैसे

श्री ते रहित होय है तैसे आनन भयो है जलधर मेघ अम्बु जल ताको बरषै हैं तासों हमारे नेत्र बाजी बदि लेत कि हम अधिक बरषै हैं यदुपति प्रभु कृष्ण तिनको मिलावहु हरिसुत काम ताकी आरति जानिकै जैसे हरि जो विष्णु हैं सो करि जो गज ताके बन्धु नाम मित्र हो आरत हरी तैसे तुम हो षटआनन वाहन मयूर कानन में बोलै है औ रजनी में घन भये हैं हे सूरदास प्रभु! चतुरशिरोमणि मोको चातक पिक की त्रास जानों ॥ ३५ ॥

राग सारँग।

कहां लौं राखिय मन बिरमाई। इकटक शिवधरे नयन न लागत श्यामसुता सुत धनआई॥ हरवाहन दिववास सहोदर तिहि मिलि उदित मुरछि महि जाई। गिरिजापतिरिपु नखशिख व्यापत वसत सुधाप्रिय कथा सुनाई॥ विरहिन विरह आपु वश कीन्हो लेउ कमल जिमि पाइ छुवाई। वेगि मिलौ सूर के स्वामी उदधितनयापति मिलि है आई॥ ३६॥

सखी की उक्ति नायक सों। राधे के चित्त को कहाँ बिरमाइये नैन इकटक रहे हैं शिवधर गिरि पलक गिरिकै नैन नाहीं लागत हैं श्यामसुता हैं रतिपुत्र अनिरुद्ध धन उषा नाम प्रात है आयो हरवाहन बैल ताको नाम गो गो कहिये पक्षी को दिव कहिये स्वर्ग ताके वासी कहिये पक्षी को दिव कहिये स्वर्ग ताके वासी कहिये सुर दूनों मिलि गरुड़ भये तिनके सहोदर अरुण तिनके उदित भये ते मूर्च्छित भूमि में गिरे है गिरिजापति रिपु काम नखशिख में व्याप्यो है औ सुधा प्रिय पपीहा ताने पिया सुनायो है और बिरहिनि को बिरह ने अपने वश कियो है ताको कमल

जिमि पाय सो छुवाय लेव हे सूर के स्वामी ! वेगि मिलो उदधि-सुता सीप पति मेघनाद जीवदान को पुण्य मिलि है ॥ ३६ ॥

राग सारँग ।

प्रीति करि काहू सुख न लह्यो ।
प्रीति पतंग करी दीपक सों आपै प्राण दह्यो ॥
अलिसुत प्रीति करी जलसुत सों सम्पुट हाथ गह्यो ।
सारँग प्रीति करी जु नाद सों सन्मुख बाण सह्यो ॥
हम जो प्रीति करी माधव सों चलत न कछू कह्यो ।
सूरदास प्रभु बिन देखे दुख नैनन नीर बह्यो ॥ ३७ ॥

प्रीति करि इति । नायिका की उक्ति । प्रीति करि काहू सुख नाहीं लह्यो पांखी दीप सों प्रीति करि आपनो शरीर दह्यो औ भ्रमर कमल सों प्रीति करि आपै कमल संपुट ते बभयो औ सारँग हरिन सारँग राग सों प्रीति करि समुहे बाण को सह्यो औ हम प्रीति जो करी माधव सों सो चलत में कछू नहीं कह्यो सो सूर-दास प्रभु कृष्ण तिनके बिन देखे दुख करि नैनन सों नीर बहै है ॥ ३७ ॥

राग केदार ।

हरिसुत पावक प्रकट भयोरी । मारुतसुत बन्धव-पितुप्रोहित ता प्रतिपालन छांड़ि गयोरी ॥ हरसुत वाहन अशन सनेही सो लागत अँग अनल भयोरी । मृगमद स्वाद मोद नहिं भावत दधिसुत भानसमान भयोरी ॥ वारिजसुतपति क्रोध कियो सखि मेटि

दकार सकार लयोरी । सूरदास बिन सिन्धुसुतापति कोप समर कर चाप लयोरी ॥ ३८ ॥

सुत इति । नायिका की उक्ति सखी सों । हरिसुत काम मारुत सुत भीम बन्धु अर्जुन पिता इन्द्र पुरोहित बृहस्पति ताको नाम जीव तिन्ह के प्रतिपाल करनहारे हरि ते हमैं छांड़ि गये हरसुत वाहन मयूर भख सर्प सनेही पवन सो अनल सों लागे है मृगमद सुगन्ध स्वाद भोजन आनंद आदि और नहीं भावै है दधिसुत चन्द्र सूर सों लागै है वारिजसुत ब्रह्मा पति विष्णु तिनने कोप करि दयानिधि नाम में ये शूलनिधि भये सिन्धुसुतापति विष्णु बिनु काम ने कमान चढाई है ॥ ३८ ॥

राग सारँग ।

हर को तिलक हरि बिनु दहत । वैक हित उडु-राज अमृतय तजि स्वभाव मोहि बहनि बहत ॥ कत रथ थकित भयो जु पछिम दिशि ग्रह ग्रसित जैसे ग्रहण गहत । छवि न छीन होति सुनि सजनी भूमि भवन रिपु कहा बसत ॥ जाको ध्यान धराति हौ दधि-सुत मानि तहेस जैसे रहति रहत । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिन प्राण तजत ये नाहिनै सहत ॥ ३९ ॥

हर को तिलक इति । हर को तिलक चन्द्र भूमिभवन सर्प रिपु मयूर ताको नाम सारँग सारँग कहे कृष्ण सो कहां बसै हैं ॥ ३९ ॥

राग नट ।

ग्वालिन छांड़ि दोष रहु खर्‌यो । तेरे विरह विर-हिनी व्याकुल भवन काज बिसर्‌यो ॥ कर पल्लव ते

पति रथ खैंच्यो मृगपति वैर कस्यो। पंखीपति सबही सकुचाने चातक अनंग मस्यो॥ सारँगसुत सुनि भयो वियोगी हिमकर गरब टस्यो। सूरदास सागर सुत हित पति देखत मदन हस्यो॥ ४०॥

ग्वालिन इति। हे ग्वालिन! तोको देखि दोष कहे विरोध छोड़ि खस्यो है औ कर पल्लव ते उडुपति ने रथ मृग खैंच्यो है अपने पति सों वैर करचो है अर्थात् मलीन भयो है पत्ती और पति कहे अपनी मर्याद सों सकुचाने हैं एक चातकै अनङ्ग सों भरो है ताको पी बैन सुनि सारँग जो चन्द्र आपै वियोगी भयो है औ हिम कहे शीत ताको करिबे को गर्ब टरि गयो सागरसुत चन्द्र ताके हित नक्षत्र तिनकी पति दीप्ति सो देखतै मदन हरि लयो॥ ४०॥

राग सारँग।

ऊधो इतने मोहिं सतावत। कारी घटा देखि बादर की दामिनि चमकि डरावत॥ हेमसुतापति को रिपु व्यापै दधिसुत रथ न चलावत। अम्बूखण्डन शब्द सुनत ही चित चकित उठि धावत॥ कंचनपुरपति का जो भ्राता ते सब बलहि न आवत। शम्भूसुत को जो वाहन है कुहुकै अस लस लावत॥ यद्यपि भूषण अंग बनावत स्वइ भुजंग है धावत। सूरदास बिरहिनि अति व्याकुल खगपति चढ़ि किन आवत॥ ४१॥

ऊधो इति । उक्ति गोपी की । हे ऊधो ! इतने हमैं सतावत हैं कारी घटा औ दामिनी हेमसुतापति शिव तिनको रिपु काम औ दधिसुत चन्द्र रथ नाहीं चलावत औ अम्बुखण्डन पपीहा को शब्द औ कञ्चनपुरपति रावण ताको भाई कुम्भकर्ण ताकी प्रिया निद्रा नहीं आवत शम्भुसुत वाहन मोर कुहुकै हैं जे भूषण अङ्ग को बनावै हैं ते सर्प है दौरै हैं बिरहिनि ऐसी व्याकुल जानि खगपति कृष्ण क्यों नहीं आवत ॥ ४१ ॥

राग सारँग ।

हरिसुतसुत हरि के तनु आहि । ह्यां का कहै कौन की बातैं ज्ञान ध्यान सुमिरो को काहि ॥ को मुख भ्रमर तासु युवती को को जिन कंस हते । हमरे तौ गोपतिसुत अधिपति बनिता औरन ते ॥ मोरज रंध्र रूप रुचिकारी चितै चितै हरि होत । कबहूं कर करनी समैति लै नेक मान कै सोत ॥ ता रिपु समय संग शिशु लीन्हे पै आवत तनु घोष। सूरदास स्वामी मनमोहन कत उपजावत दोष ॥ ४२ ॥

हरि सुत इति । गोपी की उक्ति । हरि जो पवन तिनके सुत हनुमान् तिनके सुत मकरध्वज सो नाम काम को सो हरि के तनु में है ह्यां कहै को कौन की बातैं ज्ञान ध्यान समेटि जाय है औ भ्रमर जो ऊधो हैं तिनके मुख में जो निर्गुण ब्रह्म है सो कोहै औ ताकी त्रिया जो माया है सो को है औ कंस मारो सो को है हमारे गोपतिसुत कृष्ण ही अधिपति राजा हैं औरन ते हम ते नाहीं बनत कैसे हैं मोरपक्ष धारण करे हैं हमारे चित्त को हरत कबहूँ हाथ सों हाथ पकरे हमारे मान को बढ़ावै हैं औ अपमान

करै हैं ता मान को रिपु जो वसंत है तामें बालक लीन्हे घोषन में आवत हम देखे ऐसे जो मन मोहन हैं ते काहे दोष उपजावत हैं ॥ ४२ ॥

राग धनाश्री ।

हरि हम काहे को योग बिसारी। प्रेम तरँग बूड़त व्रजवासी तरत श्याम सोइ हारी ॥ रिपु माधव पिक वचन सुधाकर मरुत मन्द गति भारी। सहि न सकत अति विरह त्रास तनु आगि सलाकनि जारी ॥ ज्यों जल थाके मीन कहा करै तेउ हरि मेलि-अडारी। विजय अधोमुख लेन सूर प्रभु कहियहु विपति हमारी ॥ ४३ ॥

हरि हम काहे को इति । गोपी की उक्ति। हरि ने हमको काहे को बिसारी प्रेम की जो तरङ्ग है तामें बूड़त व्रजवासी पैरत से हारे हैं माधव रिपु पावस औ पिक वचन औ चन्द्रमा औ मन्द-गति मारुत इन्हें विरह की त्रास सो हम नाहीं सहि सकै हैं इन ते आगि जरै है विजय को उलटो अर्थ अजब तरह के प्रभु को कहियो कि अजब विपत्ति गोपिन को है ॥ ४३ ॥

राग धनाश्री ।

चौबीस चतुष्पद शशि से बीस मधुकर अंग अंग रस कन्द नवीन ॥ तीलनि लै मिलि घटा विविध दामिनि मनो षोडश शृँगार शोभित हरि हीन। फिरिफिरि चक्र गगन में अमी बतावत युवती

योग मौन कहुँ कीन ॥ वचन रचन रस रास नन्द-नंदन ते बहियो पौन हृदय लौलीन। नंद यशोदा दुखित गोपी गाय ग्वाल गो सुत सब मलिन गात दिन हीं दिन दुखीन ॥ बकी बका शकटा तृण केशी बछ वृष भये समय अलि बिन गोपाल इति वैर कीन। उद्धव इहांई मिलाइ परैं पांइ तेरे सूर प्रभु आरति हरै भई तनु क्षीन ॥ ४४ ॥

कि श्यामतालोह ये तीन चौकचाह औ बारह प्रतिबिम्ब ऐसे कि चौबीस धातु तीनों का मुख औ प्रतिबिम्ब छः चन्द्र राधा औ सखी के चार तय्योना औ कृष्ण के दोय कुण्डल ये छः तिनका छः प्रतिबिम्ब ये बारह पतङ्ग कहे सूर्य द्वादश मधुप तीनों की छः पुतरी तिनका प्रतिबिम्ब ये द्वादश अलि मानो कहे जानो ॥ ४४ ॥

है ब्रजचन्द्र वदन चकोर।
है रहे कवि नेम निरदै नेह नातो जोर।
धातु रूप विचार कर विपरीत पहिलो जोर॥
बार कर विपरीत इनको मोहिं नाहिं निहोर।
जनम संगी अंग नाहीं करत कबहूँ तोर॥
यहै निशिदिन मोहिं चिन्ता समुझ सजनी तोर।
सूर कति चातकिहि पुकारे विना नघ की घोर ॥ ४५ ॥

बाक्य नायिका की। कि दृगमुख चन्द्र के चकोर कवि है हैं धातु

तामा विपरीत ते माता बार जन्न विपरीत ते लाज अर्थ माता की लाज नाहीं ये जन्न साथी हैं यही तेरी समुझ की चिन्ता है कातिचा विपरीत ते चातिक सो पुकारै बेनत्र विपरीत ते घन-हीन ॥ ४५ ॥

सजनी हों न श्याम मुख हेरो।
सूरसुतारिपु रागगन्ध पितुप्रियपुत आदि सकेरो॥
मुख समूह मानुष ताही विधि करो न कबहूँ फेरो।
पय निरजर रिसनी को कबहूँ शब्द न सुन्दर पेरो॥
ना जानों अनुराग कहां ते मांहिं घनय घनेरो।
भूषणपति अहारसुत वैरी वारत अंग उजेरो॥
पलटत बाण भानुजातट में निरखत दुख बहुतेरो।
सूरसुजान विभावन पहिलो भयो सत्य सब केरो॥४६॥

उक्ति नायिका की। मैं श्याम को मुख न देखो है सूरसुता यमुना राग पिता सुरगन्ध पितु मलय प्रिय तनु आदि वर्ण ते यशुमति मुख आनन समूह गुण मानुष नर आदि वर्ण ते आगमन में फेरो नाहीं कियो पय बारि निरजर सुर रीस आदि वर्ण ते बाँसुरी ताको शब्द भी नाहीं सुनो अनुराग घेरो सो नाहीं जानत भूषण मुद्रा पति अहार समुद्र सुत चन्द्र जारत बाण सार सर ताल पलटे ते लता यमुना तट देखे दुःख होन यामें पहिल विभावना अलङ्कार श्रवण दर्शन देखिबो कारण नाहीं विरह काज ते ॥ ४६ ॥

यशुमति देखि अपनो प्रान। वर्ष शर को भयो पूरण अबहिं ना अनुमान॥ हीनसुत को हर्ष करखो

सर्व जाहिर जान। त्रिदश सुन्न सुजीव निशि गुण प्रथम जोर प्रमान॥ कथा व्रज की नारि निशिदिन देति उरहन आन। तोहिं आपन लाल प्यारो हमैं कुल की कान॥ सूर समुझि विभावना है दूसरो अनुमान॥ ४७॥

उक्ति गोपी की। अपनो प्राण देखि वर्षशर पांच को नाहीं भयो हीनसुत पूतना हर्ष करखो त्रिदश देव सुन्न नाक जीव बृहस्पति निशि गुण तम आदि वर्ण ते तृणावर्त्त मारो सो तू कहत व्रजबाल नाहक उरहन देति तुम्हैं पुत्र प्यारो हमैं कुलकान यह दूसरो विभावना है उद्दीपन प्रथम आलम्बन है अरु विभावना अलङ्कार हेतु अपूर्ण ते जहां कार्य पूर्ण होय पांच वर्ष में षोडश वर्ष को कृत्य कीनी॥ ४७॥

अदल पति रिपु पिता पतनी अब न जैहौं फेर। वातसुत भ्राता अमिय के बिन स्वभाव वन हेर॥ भानु तपन किसान गृह के रक्षपालक आदि। मध्य ठाढ़ो होत नन्दन नन्द कर उनमादि॥ नादिन के उरताल मारत विना मार प्रयोग। मरण देत न जियन एरी गरक गांठन रोग॥ सिन्धुरिपु हित तासु पतनी अत्र शिव कर जोन। आदि कासों पढ़ो वैरी जानि परतन तोन॥ देखि विनय न करत आपन देखि बिन न रहात। सूर शङ्कर करत भूषण जो जगत विख्यात॥ ४८॥

अदल पति रिपु काम पिता कृष्ण पत्नी यमुना न नहाऊँगी वात-सुत भीम अप्रिय भ्राता कर्ण स्वभाव सखी बिन भानुतपन घाम किपान गृहरक्षक टटिया आदि वर्ण ते घाटमध्य नन्दनन्दन रहत नदिन नयन के उर में बाण मारत हैं तासो मरण जियन नाहीं देत ऐसो रोग गाढ़े है सिन्धुरिपु अगस्त्य हित राम पत्नी माता मङ्गली शिव अत्र त्रिशूल आदि ते मंत्र कासों पढ़ो है देखे बिन मन आपन कर लेत कि देखे बिन नाहीं रहो जात यामें सूरशङ्कर अलङ्कार करत हौं अनेक अलङ्कार रूपक विभावनादि ॥ ४८ ॥

भर भर लेत लोचन नीर । तुम विना व्रजराज सुन्दर विरह खेद अधीर ॥ कमल ऊपर धरत छन छन छिरक चन्दन चीर । जाल मग शशि रोक राखत मलय मन्द समीर ॥ हों तिहारे पास आई देखि मनसिज भीर । सूरदास सुजान सुन्दर मिलि हरहु तन पीर ॥ ४६ ॥

उक्ति सखी की नायक प्रति । नीर नैन में भर लेत विरह अधीर होके उर कमल कुच चंद मलय रोकत ॥ ४६ ॥

राधा वसन श्याम तन चीन्ही । साँरग वदन विलास विलोचन हरि सारंग जान रति कीन्ही ॥ साँरग वचन कहत सारँग सों साँरग रिपु दै राखत भीन्ही । साँरग पान कहत रिपुसाँरग कहा कहत लिय छीन्ही ॥ सुधापान कर कुच नीकी विधि रहो शेष

फिरि मुद्रा दीन्ही। सूर सुदेश आहि रतिनागर भुज आकर्ष वाम कर लीन्ही ॥ ५० ॥

राधा को श्याम वसन लिये चीन्ही। सारँग राति के वचन सारँग अली सों कहत सारँग दीप रिपु पट ओट सारँग कमल कर सारँग रिपु पट छीन लियो अरु अधर पान कियो कुच मर्दन आलिंगन मुद्रा कर वाम भुज में भरी ॥ ५० ॥

राधे दधिसुत क्यों न दुरावत। हौं जु कहत वृष-भानुनन्दिनी काहे को तू जीव सतावत ॥ जलचर दुखी दुखी वे मधुकर द्वै पक्षी दुख पावत। सारँग दुखी होत सारँग बिन तोहिं दया नहिं आवत ॥ सारँगारिपु की नेक ओट कर ज्यों सारँग सुख पावत। सूरदास सारँग केहि कारन सारँग कुलहि लजा-वत ॥ ५१ ॥

दधिसुत चन्द गुव जलसुत कमल वनचर मृग वर दो पक्षी चक्रवाक सारँग भ्रमर सारँग सुगन्धहीन देखी अंचल ओट कर सारँग चन्द सुख पावै हे सारँग राधे! वृषभानु कुल न लजा ॥ ५१ ॥

सखी मिल करहू कछू उपाउ। मार मारम चढ़्यो विरहिनि निदरि पायो दाउ ॥ हुताशन धुज जात उन्नत बह्यो हर दिशि बाउ। कुसम शर रिपुनंद वाहक हहर हरषित गाउ ॥ वारभवसुत तासु मावर अब न कर हौं काउ। बार अब की प्राण प्रीतम विजय सखा

मिलाउ ॥ ऋतु विचार जु मान कीनों वहै वह किन जाउ। संग सखी सुभाव रहिहो सूर शिरमणि-राउ ॥ ५२ ॥

हे सखि ! उपाउ करो हुताशन धुज जात मेघ बाउ बहन लागो कुसम शर रिपुनंदन स्वामिकार्त्तिक वाहन मोर बोले वारिभव विष सुतमद भावना नहीं करिहों विजय सखा कृष्ण ॥ ५२ ॥

मिलिवहु पार्थ मित्रहि आन। जलजसुत के सुत की रुचिकर भई हित की हान ॥ दधिसुतासुत अवल उर पर इन्द्र आयुध जान। गिरिसुतापति तिलक कर कस हनत शायक तान ॥ पिनाकीसुत तासु वाहन भषक भष विष पान। सखा मृगरिपु वसन नलियज हित हुताशन बान ॥ धर्मसुत के अरि स्वभावहि तजत धर शिर पान। सूरदास विचित्र विरहिनि चक्र मन मनमान ॥ ५३ ॥

पार्थमित्र कृष्ण जलजसुत ब्रह्मा सुत वशिष्ठ बड़ी होन की रुचि ते हित हान भई दधिसुता सुत मोती की अवली वज्र सी लागत गिरिसुतापति भूषण चंद पिनाकी सुत वाहन मोर भष भष पवन विषपान धर्म सुत रिपु दुर्योधन स्वभाव मान ॥ ५३ ॥

क्षण पल राउरे की आश। करन नाव सुपंच संज्ञा जान के सब नाश ॥ भूमिधरअरिपितावैरी बाँध राखी पास। सिन्धु सुत धर सुहित सुत गुनगहक

कोपो गास ॥ भानुअंश गिरीश आखर आदि अंग प्रकास । सूर फिर फिर सूरसुत की परन चाहत पास ॥ ५४ ॥

पंचवसु ४० संज्ञामन भूमिधर रिपु स्वामिकार्तिक पिता वैरी काम सिंधुसुत धर शिव हित कृष्णसुत काम नाम समर समरन गुन कोप सो भी गांसे है सूर सुत यम की फाँसी ॥ ५४ ॥

प्रभु कब देखिहौ मम ओर । जान आपुन आप ते गिरि नाथ गाढ़ी छोर ॥ श्रवण वचन विचारि सेनापति सुआनन भोर । दिशावस तस कहत जानत सात साखी जोर ॥ जगा जोनी मेल की सुधि कीजिये रुचि जोर । सूर निपट अनाथ भाषित युगल वर कर जोर ॥ ५५ ॥

प्रभु इति । गिरिनाथ भव संसार श्रवण श्रुत सेनापति आनन शास्त्र दिशावस १८ पुरान सात मुनि जगा जोनी नाम अजमेल मिली अजामेल की सुधि करो ॥ ५५ ॥

सुन्दर श्याम शोभा देखि । बार शशि के आदि कोटिन कोटि लाजत लेखि ॥ मीनरिपु के सुत्र गुन मन गहत बरबस आन । चलन सरितन की सम्हारे खचर खेलन बान ॥ विकट भृकुटी मुकुट लटकन सुकटि शोभा सोय । सूर बलि बलि जात तन मन तपन तीषण धोय ॥ ५६ ॥

सुन्दर इति । बार जल नाम का शशि मयंक आदि ते काम लाजत मीनरिपु बंसी सुन्न गुन शब्द सरित नयन खचर खंजन की बान ॥ ५६ ॥

देखु सखी पाँच कमल द्वौ शंभु । एक कमल व्रज ऊपर राजत निरखत नैन अचम्भ ॥ एक कमल प्यारी कर लीन्हे कमल सकोमिल अंग । युगल कमलसुत कमल विचारत प्रीति न कबहूं भंग ॥ षट जु कमल मुख सनमुख चितवत बहु विधि रंग तरंग । तिनमें तीन सोमवंशी बस तीन तीन शुक सीयज अंग ॥ जेई कमल सनकादिक दुर्लभ जिनते निकसी गंग । तेई कमल सूर नित चितवत नीठ निरं-तर संग ॥ ५७ ॥

उक्ति सखी की सखी प्रति । हे सखि ! पांच कमल दो शंभु के निकट हैं राधा के उर में श्याम मुख धरो मुख एक नेत्र दो कर दो तिनमें एक कमल जो मुख है सो व्रजसमूह के ऊपर है ताहि देख अचंभो लागत अरु एक कमल करते प्यारी राधा कमल कर पकरो राधा अंग कोमल कमलवत् ऐसे राधा कृष्ण जो युगल कमल हैं तिनको कमलसुत ब्रह्मा निहारत है प्रीति जाकी भंग नाहीं होत मुख नयन युगल के तीन सोम दो मुख अरु राधा मुख मुकुट में प्रतिबिम्ब काहे कृष्ण को मुख नीचे है वंशी लट काकपक्ष तीन शुक नासिका बिम्ब प्रतिबिम्ब राधा के दो कृष्ण एक अरु जे कमल सनकादिक को दुर्लभ हैं चरण अरु गंगा

निकसी हैं जिनते ते सरोज भृंग सूर जे ते देखत अथवा संसार नाहीं देखत ॥ ५७ ॥

तुम बिन कह्यो कासों जाय ।
शम्भु आयुध उठ करेजे करत बहु विधि घाय ॥
गोपपति लख नरक वैरी आनके अकुलाय ।
पक्षिराज सुनाथ पतनी भोगिबो चितचाय ॥
पांय तोय निहार कबहूं हिलत ना हरषाय ।
सूर अनभल आन को सुन वृक्ष वैरि बुताय ॥ ५८ ॥

तुम बिन कासों कहों शंभु आयुध शूल घाउ करत गोपपति नंद ताको विशेषण नरक को वैरी आनके देखि अकुलात पक्षि-राज नाथ विष्णु पत्नी लक्ष्मी भोगो चाहत पाँय तोय गंगा में नाहीं नहात अनभल आन को सुन वृक्षवैरी अग्नि बुझावत ॥ ५८ ॥

व्रज की कहीं कहा कहु बाते । गिरितनयापति भूषण जैसे विरह जरी दिनराते ॥ मलिन वसन हरि हरि हित अन्तर गति तनु पीरो जनु पाते । गद्गद वचन नयन जल पूरित बिलख वसन कृश गाते ॥ मुक्तौ तात भवन ते बिछुरो मीन मकर बिल-लाते । सारँगारिपुसुत सुहृद पती बिन दुख पावत बहु भांतें ॥ हरिसुरभखन विना विरहाने क्षीण लई तन ताते । सूरदास गोपिन परतिज्ञा मिलहु पहिल के नाते ॥ ५९ ॥

व्रज की का बातें कही । गिरि तनयापति भूषण अग्निसमान विरह ते जरती हैं वसन मलीन हो रहे अंतर की गति हरि सूर्य हित अरुण गति पंगु हो रही तनु पियरे पात सों गद्गद सुगम मुक्ता तात जीवन ताते बिछुरत मगर मीन की रीति ते बिललाति सारँग पर्वत रिपु इन्द्र सुत अर्जुन सुहृद कृष्णपति विना दुःख पावत हरि वानर सुर सुकंठ अर्थ सुंदर कंठ भाषा बिन ह्वै गयो क्षीण ह्वै गई हैं ताते मिलो ॥ ५९ ॥

हरि कत भये व्रज के चोर । तुम्हरे मधुप वियोग राधे मदन के झकझोर ॥ एक कमल पर धरे गजरिपु एक कमल पर शशि रिपु जोर । दो कमल इक कमल ऊपर जगी इकटक भोर ॥ एक सखी मिलि हँसत कहती खैंच कर की कोर । तज सु वाइस भषत नाहीं विरख उनकी ओर ॥ बिरस ऐसिनि सुरत कर कर नयन बहु जल तोर । तीन त्रिबली मनहुँ सरिता मिली सागर छोर ॥ षटकन्ध अधर मिलाप उर पर अजयरिपु की घोर । सूर अबलन मरत ज्यावो मिलो नन्दकिशोर ॥ ६० ॥

हे हरि ! तुम व्रज के चोर काहे भये तिहारे विरह मदन के झकझोर ते राधा की यह दशा भई है एक कमल कर कटि पर धरे है यामें साध्यवसाना लक्षणा ते यामें आरोप सोई कहै है कमल में कर को सिंह में कटि को एक पै शशि रिपु एहु पाटी एक कमल मुख पर दो नेत्र ते इकटक जागत है एक सखी कर

पकर कहत है वाइस तज सुरत सुरत छोड़ के कछू भषत बोलत काहे नाहीं अथवा खात का नाहीं ऐसी बेरस ऐसिन ह्वै गई है आंशू ढारति है सो त्रिबली तट आवत कुच के मध्य ते अरु दोई कुच हो मानों तीन नदी समुद्र में मिली अथवा आंशू गंगा का जल मिल यमुना सिंदूर मिल गिरा यह तीन सरिता षट कंध स्वामिकार्त्तिक तिनको नाम शक्तिधर शक्तिधर प्राण अधरन पर आय रहे हैं अजयारिपु उद्दीपन उद्दीपन उर पर घोर भयो है ऐसी जो अबला तिनको मरत जियावहु हे नन्दकिशोर ॥ ६० ॥

व्रज में आज एक कुमारि । तपनरिपु चल जासु पति हित अन्त हीन विचार ॥ शचीपतिसुतशत्रुपितु मिलि सुता विरह विचार । तुम विना व्रजराज बरषत प्रबल आंशू धार ॥ बाल ग्वाल बिहाल आये करत कोटि पुकार । राखि गिरिधरलाल सूरजनाथ बिनु उपचार ॥ ६१ ॥

उक्ति सखी की नायक प्रति । दो मिल द्वावर्ण कूट अलङ्कार पूर्ववत् अथवा उद्धव की उक्ति कृष्ण प्रति । तपनरिपु तुहिन तामें चल मिलावहु द्वै मिल हिमाचल भयो ताकी जा पार्वती पति महादेव तिनको हित वृषभ अन्त हीन ते वृष शचीपति इन्द्र ताके सुत अर्जुन तिनके रिपु कर्ण ताके पिता भानु दोऊ मिल वृषभानुसुता भई सो तुम विना हे व्रजनाथ ! महाविहाल है ॥ ६१ ॥

पिय बिन बहत बैरिनि बाय । मदन बाण कमान आयो करष कोप चढ़ाय ॥ दिवसपतिसुतमातु बौध विचार प्रथम मिलाय । बाण पलटत भानुजातट

निरख तन मुरझाय ॥ आदि को सारंगवैरी पट प्रथम दिखराय। उदित अंगन पै अनोखी देत अग्नि जराय ॥ कवन राखनहार व्रज व्रजराज बिन प्रण-भाय। सूरदास सुजान कासों कहौं कण्ठ लगाय ॥ ६२ ॥

उक्ति प्रोषितपतिका नायिका की सखिन प्रति। व्याघात अलङ्कार विरह दशा द्विमिल दूरान्वन कूट करके दिनसपति सूर्य्य तिनके सुत कर्ण ताकी माता कुन्ती ताको आदि को वर्ण कुबौध मत कहावै है जैन ताको आदि जै न दो नीलाप कुञ्ज भई बाण नाम सर ताको पर्याय नाम ताल ताको पलटे ते लता भई सो यमुना तट बिषे जव हैं सारँग भ्रमर ताको वैरी चंपा ताको आदि-वर्ण चंपट को नाम दुकूल ताको आदि के दो मिल चन्द्र भयो सो आगि जरावै है अब व्रज में कौन राखनहार है व्रजराज विना अरु कासों कहौं कण्ठ लगाके ॥ ६२ ॥

बालम बिलम बिदेश रहो री। भूषणपितुपितु-सेनापतिपितु ता अरि अंग दहो री ॥ सारँगसुतधर-भखधरवैरी जात न वचन सहो री। नृपति आदि-सुत तृतिय तलफ कहु को सक राख चहो री ॥ वाजिनि ते तिथि थान सँतोषी सोई वचन कहो री। जो आपन हित व्रजहित जगहित कुबजा कूर चहो री ॥ कासों कहों सुने को मेरी बिपदा बीज बहो

री । सूरजप्रभु बिन मो कहँ वैरी सब सुख जहर भरो री ॥ ६३ ॥

उक्ति नायिका की अन्तरंग सखी सों । वरावर्त्त कूट व्याघात अलङ्कार लक्षित लक्षणा है भूषण नाम अंगद तिनके पिता बालि तिनके पितु इन्द्र तिनके सेनापति स्वामिकार्त्तिक तिनके पिता शिव तिनको वैरी काम सो अंग जरावै है सारँग समुद्र ताको सुत चन्द्र ताको धर महादेव तिनको भख विष ताधर सर्प ताको वैरी मयूर ताको वचन नहीं सहो जाय नृपति आदि की वर्ण भू पृथ्वी सुत मंगल ताते तृतीय बृहस्पति तिनको नाम जीव सो तलफै है वाजिनि अश्विनि ते तिथि थान पंदरह स्थान स्वाति तिनते संतोष पावै है पपीहा सो पापी रटै है पिय पिय ताते सुखद के सब दुखद भयो ॥ ६३ ॥

दो०—मतन मतन ते सूर कवि, सागर कियो उदार ।
बहुत यतन ते मथन करि, रतन लहे सरदार ॥ १ ॥
तिन पर शुचि टीका रची, सुजन जानिबे हेतु ।
मनु सागर के तरन को, सुन्दर शोभा सेतु ॥ २ ॥
संवत वेदसुशून्यग्रह, औ आतमा विचार ।
कातिकसुदि एकादशी, समुझि शुद्धवर वार ॥ ३ ॥

इति श्रीसुकविसरदारकृता साहित्यलहरी समाप्ता ।